ƒ

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

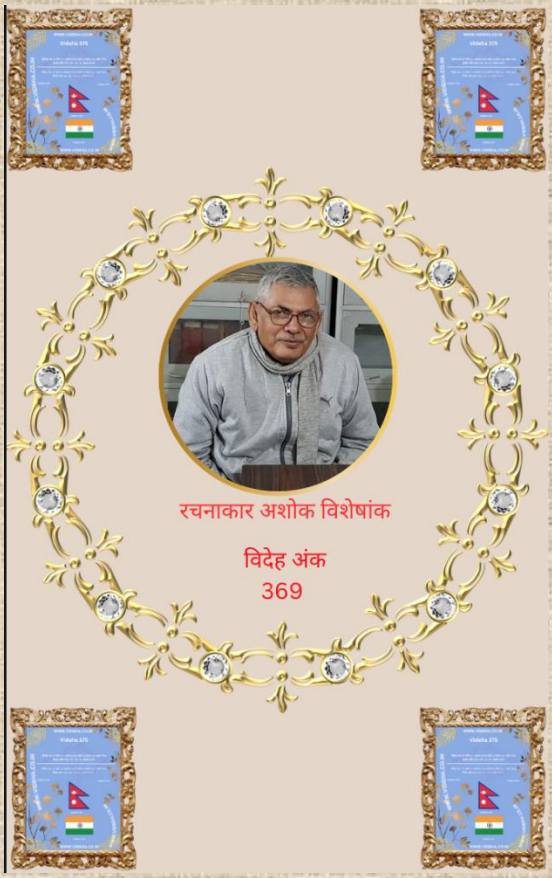

ISBN: 978-93-5980-148-3

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA WRITER ASHOK SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ꣻ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱◌𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ƒ

ॐ, स॒हस्त्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्त्रंपात्।

ওঁ, স↓ হস্র↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ

স↓ হস্র↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিং↑ Ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্য↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

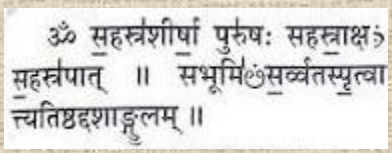

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्यागँ् शू॒द्रो अंजायत॥

প↓ দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिश॒ः श्रोत्राँत्।

প↓ দ্ভ্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

(सिद्धिरस्तु, सिद्धम प्रिक्षिवस्तु, प्रिक्षम Devanagari Anji)

(Bengali Anji, Siddham)

(Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- "अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।" हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख "विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण" मे लिखने रही- ".. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।"

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of

justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes

and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथि: एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- केँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- केँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ केँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is

indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of ‘asuva’ and ‘parasuva’ from mantra 3, which means: ‘Give us, we pray, what is good’, and, ‘Remove, we pray, what is evil’. This is the prayer. Also, there are echoes of ‘havamahe’ from mantra 4, which means: ‘We invoke and develop’, and, ‘we challenge and fight out’. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक बिभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like

chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-
EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney's translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

"Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me." I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

"Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me."

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

"Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me."

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

"Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God's dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me."

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted

(Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

'विदेह' ३६९ म अंक ०१ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३६९)

रचनाकार अशोक विशेषांक

अनुक्रम

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- रचनाकार अशोक विशेषांक (पृ. २-३)

रचनाकार अशोक विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे **(पृ. ५-८)**

२.२.अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय **(पृ. ९-१५)**

२.३.अशोक- हम आ हमर परिचय **(पृ. १६-१९)**

२.४.कल्पना झा- ठाँहि-पठाहिँ बाजब/लिखब सहज नहि **(पृ. २०-२३)**

२.५.आभा झा-डैडीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा **(पृ. २४-२८)**

२.६.दिलीप कुमार झा- मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातबर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ'] **(पृ. २९-४१)**

२.७.अजित कुमार झा- डैडीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह **(पृ. ४२-४८)**

२.८.कुमार राहुल- मैथिल आंखि सं डैडीगाम देखबाक सेहंता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय हस्तक्षेप) **(पृ. ४९-५३)**

२.९.लाल देव कामत- कथाकार अशोक मादे **(पृ. ५४-५९)**

२.१०.हितनाथ झा- कथाकार अशोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक बायस्कोप **(पृ. ६०-६३)**

२.११.शिवशंकर श्रीनिवास- अशोकक कथा **(पृ. ६४-६९)**

२.१२.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श **(पृ. ७०-७४)**

२.१३.नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य **(पृ. ७५-८४)**

२.१४.शिव कुमार मिश्र- अशोक ओ मैथिली साहित्य संस्थान **(पृ. ८५-८९)**

२.१५.शैलेन्द्र आनन्द- अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार **(पृ. ९०-९४)**

२.१६.गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक **(पृ. ९५-११३)**

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक **(पृ. ११४-१३३)**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- कथेतर गद्यक लेखक अशोक **(पृ. १३४-१३८)**

२.१९.प्रदीप बिहारी-मातबर कथाकार **(पृ. १३९-१४४)**

२.२०.आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष **(पृ. १४५-१४७)**

२.२१.मुन्ना जी- त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक **(पृ. १४८-१४९)**

२.२२.श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिपौत **(पृ. १५०-१६१)**

१.२. विदेह ३७० म अंक १५ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३७०)- अंक ३६९ पर टिप्पणी (पृ. १६२-१६७)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- रचनाकार अशोक विशेषांक

कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दवाब पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबश्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दइ

छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

'विदेह' ३६९ म अंक ०१ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३६९)

रचनाकार अशोक विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंला रूपमे कएल गेल छल २०१५ सँ जकरा आब २०२३ मे एहि विशेषांक संग "विदेहक जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाएत। दिसम्बर २०२२ मे विदेह "अशोक विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी- घोषणा। मैथिलकर्मीसँ हमर सभहक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक।

एहन शृखंलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह ८ टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथीक पी.डी.एफ फाइल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। एकरो हम संकटे बुझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै

छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो काल फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ नवम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। २०१५ सँ लऽ कऽ २०२२ धरि ८ टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने बर्खमे एकटा। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई आठो विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ईहो बात संतोषदायक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

एहन नै छै जे अशोक जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे अशोक जीक रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि

हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे ७२-८० पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे अशोक जीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक शृंखलामे प्रकाशित भेल विशेषांक सबहक सूची एना

अछि, ऐठाम जे सूची देल गेल अछि तइ सभपर क्लिक करबै तँ ओ अंक सभ खुजि जायत।

१) अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९ (ई विशेषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहो आयल अछि)

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि अशोक जी केर संक्षिप्त परिचय। सोशल मीडियापर हुनका कथाकार अशोक केर नामसँ बेसी जानल जाइत छनि। एहि परिचय केर अधिकांश तथ्य पहिनेसँ सार्वजनिक छै। किछु तथ्य जुटाओल गेल अछि आ फोटो सभ स्वयं अशोकजीक सौजन्यसँ भेटल अछि।

नाम-अशोक

जन्म तिथि : 18 जनवरी, 1953

माता : स्व. नन्दा देवी

पिता : स्व. उमापति झा

स्थान : लोहना, मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : बी.एस-सी., डी. सी. एम. (मास्को)

वृत्ति- बिहार सहकारिता सेवाक सेवानिवृत्त पदाधिकारी

अशोक जी केर परिवारक अन्य सदस्य :

पत्नी : स्व. पूर्णकला

पुत्र : 1) प्रवीण (हिनक पत्नी पल्लवी), 2) प्रभात (हिनक पत्नी शिल्पा)

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धरि अशोकजीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित भेलनि ताहिमेसँ अधिकांश विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)-

1) चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (1986)

2) त्रिकोण (कथा संग्रह) (1986)

3) ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (1991)

4) मातबर (कथा संग्रह) (2001)

5) मैथिल आँखि (2007)

6) संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (2007)

7) कथाक उपन्यासःउपन्यासक कथा (2012)

8) आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (2013)

9) बात-विचार (आलोचना) (2015)

10) डैडीगाम (कथा संग्रह) (2017)

11) नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह) (2018)

12) राजमोहन झा (विनिवन्ध, 2019)

13) कथा-पाठ (2022)

विदेह एवं आन पत्रिकामे प्रकाशित रचना सभ जे कि एखन पोथी रूपमे नहि अछि-

1) अशोक-सेलेक्शन्स (विविध)

2) अशोक-नव कविता

3) मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. 382-385)

4) बनैत कम बिगड़ैत बेसी (पृ. 2023-2031)

5) सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. 119-122)

6) रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत (पृ. 327-341)

7) केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. 101-106)

8) शरदिन्दुजी (पृ. 70-73)

प्रकाशित कृति सम्पादन:

1) प्रतिमान (विचार गोष्ठीक आलेख ओ विमर्शक संग्रह)

2) सन्धान (अंक 1- 2- 3- 4, अनियतकालीन पत्रिका)

3) मैथिली आलोचना (सम्पादन) (2017)

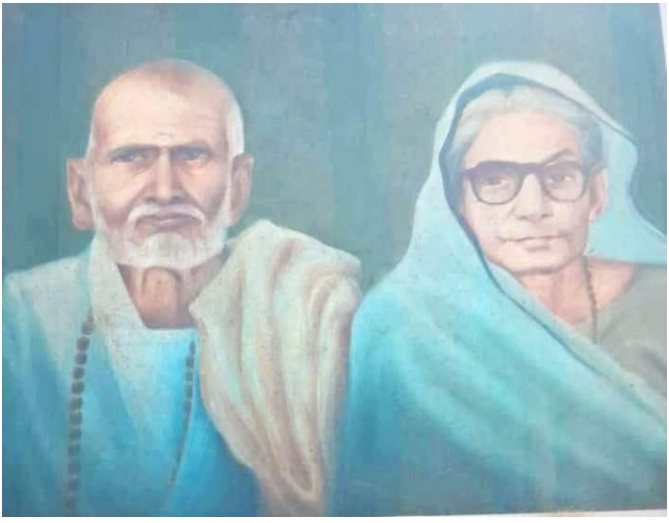

अशोक जीक माता-पिता, स्व. उमापति झा एवं स्व.नन्दा देवी

अशोक जी पत्नी स्व. पूर्णकला जीक संग

अशोकजी अपन पौत्री श्रेया केर संगे

अशोक जी, अपन पत्नी, दूनू पुत्र ओ पुत्रवधु (पल्लवी)क संग

अशोक जीक पुत्र, प्रभात ओ पुत्रवधु शिल्पा

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.अशोक- हम आ हमर परिचय

अशोक

हम आ हमर परिचय

हमर जन्म १८ जनवरी १९५३ कैँ लोहना (मधुबनी) मे भेल। हमर पिता रहथि स्व. उमापति झा एवं माता रहथि स्व. नन्दा देवी। हमर जन्मक बहुत पूर्वेसँ हमर पिता कासीमे रहैत छलाह। महारानी लक्ष्मीवती द्वारा निर्मित राम मंदिरक व्यवस्थापक रहथि ओ। लक्ष्मीवती अपन जीवनकालमे कटिहार जूट मिलसँ बजा कऽ हुनका मंदिरक व्यवस्थापक बनौने रहथिन। हम सपरिवार ओतहि रहलहुँ। हमर जेठ भाइ स्व. प्रो. सुशील झा ओतहि पढ़लनि-लिखलनि। बी.एच.यूसँ एम.ए केलनि। जखन ओ एम.ए केलनि तँ हम छह वर्षक रही। भाइ एम.ए पास कऽ १९५९ ईस्वीमे सरिसव गाममे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालयमे प्राध्यापक भऽ गेलाह। हुनकासँ छोट हमर बहीनि स्व.गीता देवीक बियाह हमर जन्मसँ एक मास पूर्व दिसम्बर १९५२ मे भऽ गेल रहनि। भाइ हमरासँ पंद्रह वर्ष आ बहीनि बारह वर्षक जेठ रहथि। स्वाभाविक रूपसँ हमर स्थिति परिवारमे एक ललबबुआ सन रहए। सभ अल्लो-मल्लोमे लागल रहए। ताहिपरसँ नेनहिसँ हम बहुधा दुखीत पड़ि जाइ। से क्रम मैट्रिक तक चलल। परिवारक लेल ई एक पैघ चिन्ताक कारण बनल रहल।

भाइ के प्राध्यापक बनि गाम चल अएबाक कारण माए संग हमहूँ गाम आबि गेलहुँ। एक वर्ष गामेमे पैटघाट स्कूलमे पढ़लहुँ। मुदा ठीकसँ नहि पढ़बाक कारणे माए हमरा १९६० मे पिता संग फेर आगू पढ़बाक लेल काशी पठा देलनि। हमर स्कूली जीवनक आरम्भ सुनियोजित रूपसँ बेसिक पाठशाला, हौजकटोरा, वाराणसीसँ भेल। ओतहिसँ पचमा क्लास उतीर्ण भेलहुँ। फेर छठमामे पढ़बाक लेल हरिश्चंद्र इंटर कालेजमे एलहुँ। १९६९ ईस्वीमे मैट्रिक केलहुँ। इंटरमे डी.ए.वी कालेज आबि गेलहुँ। मुदा उतीर्ण नहि हेबाक डरसँ परीक्षा छोड़ि देलियैक। गाम आबि गेलहुँ। सरिसव कालेजसँ आइ.एस.सी केलहुँ। गोयनका कालेज, सीतामढ़ीसँ बी.एस.सी (वनस्पति शास्त्रमे प्रतिष्ठा) केलहुँ। बी.एस.सीक रिजल्ट १९७५क जनवरीमे निकलल आ ओही वर्ष जूनमे हमर विवाह मधुबनीमे डा. जयधारी सिंहक सुपुत्री पूर्णकला देवी संग भेल। ओकर बाद हम प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारी करए लगलहुँ। प्रतियोगिताक माध्यमसँ पहिल नौकरी जनसंपर्क विभागमे अपर जिला जनसंपर्क अधिकारीक रूपमे १९७७ मे शुरू केलहुँ। तकर बाद बी.पी.एस.सीक संयुक्त परीक्षा द्वारा सहकारिता विभागमे सहायक निबंधक, स.स. केर पदपर इटाठी (बक्सर) मे १९७८ मे योगदान देलहुँ। ओही विभागमे विभिन्न पदपर काज करैत वर्ष २०१३ मे ३१ जनवरीकेँ सेवानिवृत भेलहुँ।

एहि अवधिमे हमर माताक देहावसान १९८७ ईस्वीमे, पिताक १९८८ ईस्वीमे, बहीनक १९८९ ईस्वीमे आ भाइक १९९० ईस्वीमे भऽ गेलनि। चारि वर्षमे हमरासँ जेठ चारू गोटा चल गेलाह। आब हमरासँ जेठ परिवारमे हमर भौजी वीणा देवी छथि जे गाममे रहैत छथि। हुनका संग हमर भातिज राजीव सपरिवार रहैत छथि। ओ सरिसव कालेजमे सहायक के रूपमे कार्यरत छथि। संपूर्ण परिवारकेँ सम्हारने छथि। भौजी आ राजीव के गाममे रहलाक कारणे हमरो आ हमर परिवारक संबंध अनवरत गामसँ बनल रहल अछि।

साहित्य के प्रति हमर झुकाओ काशीमे मैथिल छात्र संघक गतिविधिकेँ देखला-सुनलासँ भऽ गेल। छात्र संघ द्वारा मैथिलीमे अनेक कार्यक्रम होइत छल। ई सभ कार्यक्रम राममंदिरेपर हुअए। हम बच्चेसँ सभटा देखऽ लगलहुँ। नटाक, कविता-पाठ, भाषण प्रतियोगिता, जयन्ती, सरस्वती पूजा आदि कार्यक्रममे क्रमशः भाग लिअ लगलहुँ। मिथिला-मैथिलीक मादे सुनऽ लगलहुँ। हमर पहिल रचना कविता छल जे बटुक पत्रिकामे १९६८ ईस्वीमे छपल "शशि चन्दा के समान"। चन्दा झाक जयन्तीमे पढ़ने रही। फेर १९६९ मे मिथिला-मिहिरमे दोसर कविता छपल। पहिल कथा "विराम सँ पहिने" १९७१ ईस्वीमे मिथिला-मिहिरमे छपल रहए। तकर बाद क्रमशः साहित्यमे रमैत गेलहुँ। साहित्य जीवनक अंग भऽ गेल। अनिवार्य बनैत गेल।

नौकरी जीवनमे हम बक्सर आ कटिहार पदस्थापनक अतिरिक्त बेसी अवधि पटनेमे विभिन्न पदपर रहलहुँ। हमर दूनू बालक प्रवीण ओ प्रभात पटनेमे पढ़लनि-लिखलनि। प्रवीण देहरादूनसँ बी.टेक कऽ स्टील अथारिटी आफ इंडियामे कार्यरत छथि। वर्ष २००९ मे हुनकर विवाह पल्लवीसँ भेलनि। एकटा बेटी छनि श्रेया जे एहि बेर छठमा क्लास पास केलक अछि। ओ सभ बोलानी (उड़ीसा)मे रहैत छथि। एहिसँ पहिने कीरीबुरू (झाड़खंड)मे छलाह। प्रभात अंग्रेजीमे एम.ए, पी.एच.डी कऽ एखन पटना वीमेंस कालेजमे पढ़ा रहल छथि। वर्ष २०१६ मे हुनक विवाह शिल्पासँ भेलनि। साहित्यमे हुनक खूब अभिरुचि छनि। अंग्रेजीमे बेसी लिखैत छथि से कविता। मैथिलीमे सेहो लिखऽ लगलाह अछि लेख सभ। अनुवाद सेहो करैत छथि। तारानंद वियोगीक कविता सभक अनुवाद अंग्रजीमे पोथीक रूपमे प्रकाशित छनि। हमर पत्नी पूर्णकला झाक देहावसान २०१९ ईस्वीक जनवरीमे भऽ गेलनि। वर्ष २००२-०३ मे हुनका गंभीर बिमारीक कारणे दिल्लीक गंगाराम अस्पतालमे अढ़ाइ मास रहऽ पड़लनि। आपरेशन भेलनि। एकैस दिन धरि आइ.सी.यूमे मृत्युसँ लड़ैत रहलीह। देहमे सामर्थ्य लेल बहुत समय लगलनि। २००४ ईस्वमीमे धरि

ओ विभिन्न आपरेशनक अपार कष्ट भोगलनि। कतेको बेर लागए जे ओ आब नहि बचती मुदा बचि त गेली आ ओकर बाद बाद सतरह वर्ष धरि जीवित रहलीह। मुदा समान्य जीवन नहिए जीबि सकलीह जकर हुनका बहुत अभिलाषा रहनि। अंतिमो समयमे ओ मरए नहि चाहैत रहथि। जाबत धरि स्वस्थ रहथि ताबत धरि घर-परिवार, दूनू बालककेँ वएह सम्हारने रहथि। नेनामे दूनूकेँ वएह पढ़ौलनि-लिखौलनि। हम तँ सरकारी काज, सेवा-संघक काज. साहित्यिक-सांस्कृतिक काज सभमे हरदम व्यस्ते रहैत छलहुँ।

आब हम सत्तरि वर्षक भऽ गेल छी। पाछू घूमि कऽ तकैत छी तँ लगैए जे इंटरमे पढ़ैत काल काशीमे कोठलीक देवालपर अपन भाइक लिखल पाँती "महत्वाकंक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है" के पढ़ि तँ गेल रही मुदा आब जा कऽ ओकर अर्थ लागब शुरू भेल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.कल्पना झा- ठाँहि-पठाहिँ बाजब/लिखब सहज नहि

कल्पना झा

ठाँहि-पठाहिँ बाजब/लिखब सहज नहि

विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव पर जखन आदरणीय अशोक सर रचित पोथी सभक लिस्ट देखलहुँ, तँ कथा संग्रह, कविता संग्रह,साक्षात्कार संग्रह, यात्रा कथा,आलोचना, विविध आ नव कविताक पोथी सभक संग एक गोट व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़ल। "नीक दिनक बाइस्कोप" शीर्षक व्यंग्य संग्रह पर नजरि पड़ितहि हम बिनु एकहु क्षण गमओने एहि पोथी कैँ डाउनलोड केलहुँ।मोन मे आएल "अशोक सर आ व्यंग्य संग्रह?" कनि अविश्वसनीय सन लागल,तैँ जिज्ञासा अत्यधिक प्रबल छलए, जे देखी,आखिर केहन अछि पोथी।जतबा हम अशोक सर कैँ देखलियनि/सुनलियनि,स्वभाव सँ ओ बहुत बेसी सौम्य, मृदुभाषी लोक बुझेलथि हमरा। तैँ अविश्वसनीय सन बात लागल,जे एहन लोक व्यंग्य कोना लिखि सकैत छथि। ककरो पर कटाक्ष करब,ठाँहि-पठाहिँ बाजब/लिखब सहज नहि । आ जखन ओ स्वभावक विपरीत हुअए, तखन तँ आरो नहि। ठाँहि-पठाहिँ बात अधिक काल कटुए होइत छै,आ कटु बाजब सभक बुत्ताक बात नहि।

पोथी पढ़ब सुरुह केलहुँ, तँ लेखक द्वारा दू शब्द कहबाक क्रम मे "कहबाक अछि....."मे सभटा खिस्सा लिखल देखलहुँ/पढ़लहुँ,जे कोना संजोग बनलनि दैनिक हिन्दुस्तानक एकटा स्तम्भ "ठाँहि-पठाहिँ" लेल व्यंग्य लिखबाक। आ कतेक अबूह लागैत छलनि लेखक कैँ व्यंग्य लिखब,तकर चर्चा सेहो केलनि अछि। लेखक स्वयं ई बात स्वीकार कएने छथि,जे "ठाँहि-पठाहिँ लिखब महाग मुश्किल।" आगाँ लेखक इहो बात स्वीकार करैत छथि जे एहि स्तम्भ लेल लिखैत "किछु सामयिक घटना-समाचार पर सोचबा-विचारबाक अवसर भेटल।संगहि इहो महत्वपूर्ण रहल जे अपन स्वभावक विपरीत कने-मने ठाँहि-पठाहिँ कहबाक-बजबाक अवगति भेल। हिम्मति भेल।"अवगतिए टा नहि भेल सर ! खूब सुतरल व्यंग्य लिखब। आगाँ आरो एहन व्यंग्य संग्रह पढ़बालेल भेटए,से अपेक्षा।

सभ सँ पहिने गप्प करब जीवनक लेल सभ सँ महत्वपूर्ण प्राणवायुक श्रोत गाछ-वृक्ष सँ संबंधित विषय पर लिखल गेल "हाइवे पर हरियाली"क। लेखक कतेक नीक संदेश देलनि अछि से देखल जाउ-"हाइवेक निर्माण मे जेना वृक्ष-संहार होइत अछि,से जीवन लेल मारुक भ' रहल अछि। मुदा सरकारे पर सभटा दोष मढ़ि देब,अपन जिम्मेदारी सँ भागब भेल। तैँ सरकारक संग हमरो सभ कैँ योजनाक शत-प्रतिशत पालन लेल मोस्तैद रह' पड़त।जँ अपने चाँकि नहि रहत,त' आन कैँ कोन गरज छै।"

लेखकक मोन फगुआ आ चुनावक गठबंधन देखि गारडेन गारडेन भेल छलनि, हमरा तँ "अतत्तह" पढ़ि मोन गारडेन गारडेन भ' गेल। कतेक सूक्ष्म ऑब्जर्वेशन ! मित्रता त'अतत्तह,शत्रुता त' अतत्तह। सत्ते,प्रकृति आ स्वभाव मे आइ काल्हि अति के डंका बाजि रहल अछि।अतत्तह भ' रहल अछि। कोनो सीमाक आब मोजर नहि रहि गेल अछि।सेहन्ता तँ सीमा पार। प्रेम तँ सीमा तोड़ि क'। क्रोध तँ अकास ठेकल।

ओना "अतत्तह" सन आरो बहुत टॉपिक सभ बहुत नीक लागल पढ़ैत। "भ्रमक कुहेस", "मुखौटा","सपनाक रेल",सभटा बेजोड़ टॉपिक।

"बिलाइत गाम"मे यथार्थक चित्रण करैत लिखैत छथि -"गाम अछि कि गायब भ' गेल।निट्ठाहे गायब भ' गेल कि किछुओ बचल अछि।छहर आ बाँध ओकरा गीड़ि गेल।डैम ओकर अस्तित्व लोप क' देलक।" गामक चिन्हास विशाल बड़क गाछ,घनगर पीपड़क गाछ,झोंटहा पाकड़िक गाछक चर्चा, बड़द-गाए-महीसक चर्चा,कुमहर,खम्हाउर,ओल,पोरोक सागक चर्चा करैत बिलाइत गामक मार्मिक चित्रण केलनि अछि। लेखकक कहब छनि जे शहर सभक आधुनिकीकरण मे बेहाल सरकार गामे कैं एना बसा दिअए,जे काज-रोजगारो भेटए आ अपन समाज-परिवारक संग रहियो सकी। मुदा एहिलेल बाजत के?

"गुनक करु मान"मे अपना मिथिलाक प्रचलित फकड़ा सभ पढ़ि नीक लागल। कतेक सार्थक, सटीक होइत छलए, सभटा फकड़ा सभ।जे आब बोलचाल मे एकदम प्रयोग मे नहि रहि गेल। अपना कैं पैघ लोक आ मॉडर्न शो करबाक चक्कर मे ओझराएल समाज आब ई गमैआ,देहाती फकड़ा सभ किएक बाजत। बहुत रास प्रश्न ठाढ़ केलनि अछि लेखक,जाहि पर विचार करबाक बेगरता छै-"ई कोना भेल जे हित-अहितक बात बिसरि पैघ-छोटक फेर मे पड़ि गेलहुँ ?एना एक दिसाह,एक भगाह किएक भ' रहल छी हमसभ ?"

"पोखरि सभ के कहिया उड़ाहब" बहुत महत्वपूर्ण विषय लागल। मरणासन्न भेल हुकुर-हुकुर करैत पोखरि सभ लेल लेखकक चिंता उचिते छनि। लेखक कहैत छथि,"अपना सभक इलाका नदी- पोखरिक मामला मे धनीक रहए। मुदा आब तहिना गरीब आ विपन्न भेल जा रहल अछि।"एकटा चौंका देमए बला आँकड़ाक उल्लेख सेहो केलनि अछि लेखक। देशक आजादीक समय

अपना मिथिला मे जाहिठाम चौबीस लाख पोखरि छलए ताहिठाम आब मात्र साढ़े पाँच लाख बाँचल अछि। विडम्बना ई जे (लेखकक शब्द मे)-

"गाम-गाम मे पूजा-पाठ बढ़ि रहल अछि। जत' कहियो बासंती दुर्गा पूजा नहि होइत छल,ओतहु लाख-लाख खर्च क' धूमधाम सँ पूजा भ' रहल अछि।भरि-भरि राति भिडियो चलैत अछि।नाच-गान होइत अछि।मुदा कूपोत्सव,तरागोत्सव नहि होइत अछि।इनार आ पोखरि खुना क' उत्सव नहि मनाओल जाइत अछि।एहन उत्सव नहि होइत अछि जाहि सँ लोकक उपकार हुअए।"समाज कैं चेतबति लेखक कहैत छथि-" पानि बिना की जीवन।पोखरि बिना की गाम घर। आउ,जीवन बचाओल जाए।पोखरि खुनाओल जाए।"

सभटा विषय-वस्तु बहुत महत्वपूर्ण आ सार्थक चुनल गेल अछि लेखक द्वारा। समसामयिक विषय सभ,जाहि मे राजनीति आ राज नेता सभ पर व्यंग्य सेहो सम्मिलित अछि। "चुनावक फगुआ","ई ककर बजार छियै हो भाइ","टमाटर आ पियाजक सत्ता सुख" एहि श्रेणी मे आएत। मौसमक मिजाज सँ संबंधित सेहो किछु विषय अछि,जेना-"नामी भेल पटनाक गर्मी" ,"आब' हे अखाढ़!"समाजोपयोगी काज दिस लोकक ध्यान दिअबैत विषय सभ सेहो अछि। समाजक प्रति सेहो हमर सभक किछु जिम्मेदारी अछि,से आबक लोककैं विस्मृत भ' गेल छनि। सभ अपनेलेल बेहाल रहैए। लोक आत्ममंथन करए।मनुष्य-जन्मक सार्थकता मात्र अपनालेल जीबए मे नहि छै,से लोक बूझए।

कथेतर साहित्यक श्रेणी मे आबए बला पोथी "नीक दिनक बाइस्कोप" समाजक लेल उपयोगी तँ अछिए,संगहि रोचक सेहो लगतनि पाठक कैं।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.आभा झा-डैडीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा

आभा झा

डैडीगाम- मध्यमार्गक अन्वेषणक कथा

संस्कृत में एकटा वाक्यांश छैक -' गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' अर्थात् कवित्वक कसौटी गद्य होइछ।छन्द,लय गति यतिक बन्धनसँ मुक्त हयबाक कारण गद्यमे भाषागत अथवा विषयगत छूट भेटबाक कोनो गुंजाइश नहि होइत छैक।एत' एकटा गप ध्यातव्य अछि जे संस्कृतमे गद्य,पद्य,नाटक, चम्पू सभ काव्यक श्रेणीमे अबैत अछि।

कथाकार अशोक मैथिली कथाक सुस्थापित नाम छथि। यद्यपि ओ पाठकवर्गकेॅॅं कविता- संग्रह एवं आलोचना आदि विधामे सेहो सशक्त रचनाक उपहार देने छथिन,तथापि स्पेशलाइजेशन कथाक्षेत्रीये।

आइ किछु गप हुनक कथासंग्रह 'डैडीगाम'क।प्रारंभ करैत छी शीर्षकथासँ। प्रवास मनुक्ख लेल विवशतो अछि आ महत्त्वाकांक्षा सेहो। मुदा जेना- जेना वयस बितैत छैक,कार्यालयीय दायित्व क'म होइत छैक,धिया-पुताक

जिम्मेवारी खतम जकाॅं होइत बुझाइत छैक,यानी समयक फरागति होइ छैक,अपन जड़ि तीव्रताक(शिद्दत) संग मोन पड़ैत छैक। किछु एहने सन अनुभव होइत छनि कथानायक रघुवंश बाबूकेॅं जीवनक सान्ध्यवेलामे आ ओ विकल होमए लगैत छथि गाम घुरबा लेल। मुदा एत' सकारात्मक पक्ष ई जे पत्नी आ धिया-पुता सेहो रघुवंश बाबूक इच्छाक समर्थक। यद्यपि देखल गेलै अछि जे बाहर रहनिहार बालबच्चा सभ एतेक मैटेरियलिस्टिक भ' जाइत छैक जे मायबापक भावना सेहो हानि- लाभक बटखरा पर जोखैत अछि । मुदा साहित्यकारक काज मात्र यथार्थ देखायब नहि,ओहि धरातल पर आदर्श स्थितिक सृजन सेहो होइत अछि।से कथाकार एत' परोक्षत: कह' चाहैत छल हेताह- एहनो भ' सकैछ, प्रयास त' करह।

गामक लोक मंदिर-निर्माणक नाम पर स्वागत करत,एतेक दिन धरि कयल गामक उपेक्षा मोन नहि पाड़त, तैं राममंदिर- निर्माण निर्णय कए रघुवंश बाबू सपरिवार गाम एलाह।मुदा गामक नवयुवकक प्रश्नक मादें लेखक संभवत: अपन मनोभाव व्यक्त करबाक प्रयास करैत छथि, धनिक प्रवासीकेॅं कर्त्तव्य मोन पाड़ैत छथि-

'कने विचारि क' देखियौ माणिक बाबू, कतेकरास मंदिर तँ अछिये चारूकात। तै पर फेर एक नव मंदिर बनि क' की होयत? जोहो त' एक टा 'लाइबिलीटीये' भ' जायत। एहि सँ बरु अहाँ सभ अस्पताल बनबितहुँ । स्कूल खोलि दितहुँ। कॉलेजक निर्माण करितहुँ । दुनियामे एक सँ एक ज्ञानक प्रचार-प्रसार भ' रहल छै। ओकरे शिक्षण-प्रशिक्षणक व्यवस्था करितहुँ । लोक के कत्ते उपकार होइतै।'

एत' एक दिशि गामक नवयुवक लोकनिक जागरूकता व्यक्त भेल अछि त'दोसर दिशि धनाढ्य लोकनिक सामंती प्रवृत्ति पर चोट सेहो पड़ैत

अछि।'गामक लोकक एतबहि टा अकाश' एहि सोचमे परिवर्तनक खगता देखाओल गेल अछि।

ई एकटा आशावादी कथा अछि,जाहिमे सभ बुझनुक बुझना जाइत छथि,कथानायक,हुनक पुत्रद्वय,पत्नी आ समाज सभ।आ सभ मिलि जीवनक सुखमय राग गबैत अछि।

'गामक कातक हाइवे' भौतिक विकासक संग गामक ग्राम्यपन,निश्छलता आ नैसर्गिकताक अंत देखि भावुक भेल साहित्यकारक अंतर्वेदनाक उद्गार अछि ।

'छुट्टीक एक दिन' समयक संग सामञ्जस्य-विधान करैत लेखकक एकटा सुखान्त कथा अछि,जाहिमे दू टा शिक्षित युवक- युवती सामाजिक विधानक विरुद्ध प्रेम विवाह करितो मैथिली साहित्य एवं मैथिल समाजक प्रति अक्षुण्ण अनुराग रखैत छथि।

किछु अही भाव पर आधारित कथा सन बुझाइत अछि 'स्वाधीन'।मुदा,ओत' वैवाहिक बलात्कारक पुरजोर विरोध देखाओल गेल अछि।एकटा स्वाभिमानिनी स्त्री कोनहु परिस्थितिमे ओ गर्भ रखबा लेल तैयार नहि छथि,जे जबर्दस्तीक सम्बन्धक प्रतिफल होमए। हँ,ओ बुझैत छथि जे जबर्दस्ती करैबला पुरुष नितान्त अधलाह लोक नहि छथि, तैं तलाक नहि लैत छथि,ई कहैत जे 'हम खिस्सा खतम नहि शुरू कर' चाहैत छी'।मुदा तैंयों वैवाहिक मूल्यक अवहेलना स्वीकार नहि करैत छथि।

स्त्रीक अस्मिता- दलन कुपुरुषक प्रवृत्ति रहल अछि, मुदा स्त्रीक ओहि चोटसँ उपजल टीसक अनुभूति सेहो पुरुष लेखक कए सकैत अछि,कारण लिखबा काल ने ओ पुरुष रहैछ आ ने स्त्री,ओ रहैछ मात्र ओ पात्र।पात्रक संग

मानवीकरण आ समानुभूति नीक लेखकक चेन्ह होइत अछि।से अनुभव करैत लेखक अपन टीस कथामे नायिकाक मोनक संवेदना लिखैत छथि -

जेल मे शान्त आ स्थिर भेल बैसल बिमला के बेर-बेर एक्केटा बात मोन मे घूमि-फीरि कं' अबैत छलनि-' अध्यक्ष बनौलनि त' अध्यक्षक काज किए नहि देलनि? हम त' हुनकर सहधर्मी छलियनि। सहकर्मी किए नहि बनौलनि? हमरो दसखत किए अपने क' देलथिन ? एहन बेइमानी किए? **की बेइमान समठाम बेइमाने होइत अछि? बाहरो मे बेइमान आ घरो मे बेइमान। '**

'उमकी' ऊपरसँ प्रेमकथा बुझाइत अछि, परञ्च 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' सिद्धांतक अनुसार ओकर अंत आतंकित करैत अछि।की प्रेमक एहनो रूप भ' सकैत छैक?की प्रेमक सेहो कोटा होइत छैक -एतबा जरूरति,एतबा आपूर्ति,तकर बाद कोनो सुख,दुःखक असरि नहि?

निस्संदेह नहि, तैं नाम थिक उमकी।

मनुष्य कतबो व्यस्त रहओ,कतबो दायित्वमे किऐक नहि ओझरायल रहओ,ओकरा अपन रुचि- प्रवृत्ति पर अवश्य ध्यान देबाक चाही ।लोक की कहत?हमर इमेज की अछि? आदि- आदि निरर्थक सोचमे अपन खुशीक आहुति देब बुद्धिमानी नहि, परञ्च ओहि एक क्षणक खुशीक अनुभव करब जिनगीमे न'ब ऊर्जा भरैछ,ई सार अछि 'लाथ' कथाक।

'छल' कथा जबरदस्त नाटकीय कथा अछि। कोनो व्यक्ति (भोलीझा)किछु क्षणक लेल कोनो पार्ट लैत अछि त' जेना ओ ओएह भ' जाइत अछि ।अभिनयक जीवन्तताक उत्कृष्ट निदर्शन अछि एहि कथामे।

'मनसूबा' मे कैरियरमे बुलंदी पयबाक उन्मादमे युवावर्ग द्वारा घ'र-गृहस्थीक जिम्मेवारीसँ पलायनक बढ़ैत प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करैत छथि लेखक त' 'खुशीक नाम जीवन' मे अन्तर्जातीय विवाह पर स्वीकृतिक मोहर लगबैत छथि।एत' लेखकक मध्यमार्गीय दृष्टिक पोषण, सामाजिक स्वीकृति आदि बदलैत समयक संग कदमताल करैत अछि जे आवश्यको।

आशावादी दृष्टिकोण देखबैत अछि कथा 'अभयक बेटाकेॅं दूटा दांत भेलनि अछि' त' मानसिक बीमारी दिशि इंगित करैत अछि 'एना भ' क' कियो'।एकर अतिरिक्त 'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि','राग','लेमन आइसक्रीम' आदि कथा नीक बनल अछि।

संक्षेपमे जँ कही त' डैडीगाम एकटा संवेदनशील कथाकारक पन्द्रह गोट रमणगर कथाक संग्रह अछि।कथाक प्रस्तुतिक छटा सुंदर आ मोहक अछि।मात्र चिंता व्यक्त करब, साहित्यकारक उद्देश्य नहि, अपितु अपन पात्रक माध्यमसँ ओकर निवारणक उपाय देखायब,मुदा एना सन जेना हम कहाॅं किछु कहलहुॅं,हम त' खिस्सा कहैत छलहुॅं।

कथाकारकेॅं एकटा अत्यंत सामान्य पाठकक अभिनन्दन!

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.दिलीप कुमार झा- मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातबर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

दिलीप कुमार झा

मैथिल आँखिक वैश्विक कथाकार छथि कथाकार अशोक ['मातबर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ']

समकालीन मैथिली कथाकारमे बेछप नाम छथि कथाकार अशोक। हिनक कथा कें ताकि - तकि कैँ पढ़तै रहलहुँ अछि।हिनक कथाक बिषयमे टिप्पणी करब सहज नै छैक। विद्वता आ समीक्षकीय दृष्टिकोण सँ देखल जाय तँ बहुत विशद विश्लेषणक माँग करैत अछि हिनक कथासभ मुदा से अवगति हमरा नहि अछि तथापि हम ई मानैत छी हिनक कथाक भाव,कथ्य आ बहुत हद धरि कथाक अभिष्ट साधारण सँ साधारण पाठक बुझि पबैत छथि ताहि परिप्रेपेक्ष्यमे हिनक दोसर कथा संग्रह 'मातबर' जे बहुत पहिने पढ़ल छल एहि बीच एकर पुनर्पाठ कयलहुँ।ताहि क्रममे इच्छा भेल कियेक ने एहि पोथीपर अपन किछु पाठकीय टिप्पणी राखल जाय।तकरे एकटा प्रयास अछि एहि विशिष्ट कथा संग्रहपर ई दूटप्पी।

हिनक कथा संग्रह पढ़ैतकाल सबसँ पहिने हमरा ई भान भेल जे कथाकार अशोक समयक संग बहुत यथार्थवादी ढंग सँ चलबामे विश्वास करैत छथि।ओ लकीर के फकीर नहि छथि। कथा कहैत नहि छथि, रचैत छथि से सम्पूर्ण तथ्यक संग।भूत,वर्तमानक तालमेल बैसबैत भविष्योन्मूख कथाक सृजनशील्पी छथि कथाकार अशोक। एकैसम शताब्दीक आरंभे मे (२००१ई.)ई कथा संग्रह अबैत अछि।एकैसम शताब्दीक आरंभिक बर्षमे दुनियांमे अनेक परिवर्तन भेल। दुनियाँक कम्युटरीकरण,मुक्त व्यापार समझौता, इंटरनेटक अविर्भावक प्रभाव वैश्विक पड़य लागल।भारत सेहो प्रभावित भेल सहजहि मिथिला सेहो।एहि सभ बातक प्रभाव एहि कथा संग्रहमे संग्रहित कथा सभपर देखल जा सकैछ।

पाठ आ पुनर्पाठ क पछाति हम जे किछु बुझि सकलहुँ तकर ई आत्मिक अनुभूति मात्र थिक। हम सबसँ पहिने एहि संग्रसक 'राँड़' कथापर चर्च करय चाहब।विधवाक जीवनपर मैथिली मे घनेरो कथा लिखल गेल अछि मुदा राँड़ कथा ओहि कथा सभसँ बहुत फराक अछि ,एना कहि जे क्रान्तिकारी अछि तँ बेजाय नहि।ई एकटा विद्यार्थी मनीषक कथा सँ आरंभ होइछ जे वास्तवमे बदलैत परिवेशमे स्त्री- पुरुषक साम्यताक कथा कहैछ।विधवा जीवनमे आयल बदलावक कथा कहैछ।मनीष अपना मामी सँ आत्मिक स्नेह करैत छथि जखन हुनका मामीक वैधव्य हेबाक खबरि भेटैत छनि तँ ओ व्यग्र भ' जाइत छथि जे एतेक सुन्नरि मामी कोना क' उजरा साड़ी पहिरि क' रहती? केहन लगती ? आदि आदि चित्रक मनोदशा बनैत छनि।एहि छण हुनका मोन पड़ैत छथिन अपन विधवा पितामही ,अपन पिसियौत बाल विधबा बहिन। मामाक मृत्यु सँ मनीषक मोन बिचलित होइत छनि आ ओ मामीक लेल मुँगा रंगक शाल ल' जेबाक आ हुनका ओ शाल ओढ़ा देबाक विचार करैत छथि।जखन मनीष मामी सँ भेट करबाक लेल काशी जाइत छथि तँ हुनका मोनमे अतिरिक्त संतोष होइत छनि से मामीक परिधान देखि

क' ।मामी आसमानी रंगक नुआ ब्लाउज पहिरने छथि।।हाथमे सोनाक चूड़ी आ घड़ी ।ई हमरा समाजमे एकटा पैघ बदलाब भेल अछि।विधवाक जे अभिशप्त जीवन छल ताहिमे बहुत सुधार भेल अछि।आब तँ रहरहां विधवा विवाह सेहो भ' रहल अछि।कथाक माध्यम सँ मिथिलाक विधवा स्त्रीक काशीमे केहन दुर्दशा छलनि तकरो उल्लेख भेल अछि। से लेखक रानी कोठाक'नेपोभाटिन 'क वर्णन आओर विश्वनाथ गलीमे भीख माँगवाली सभक स्थितिक चित्रण सँ बहुत सटीक तुलनात्मक अध्ययन कयलनि अछि। एतबहि नै एहि कथाक माध्यम सँ स्त्री काज क'के अपन पैरपर ठाढ़ हुए।अपन परिश्रमक पाय सँ अपन धियापुताक भरण पोषण करय ।सगहि अपन स'ख सिंगार पर अपन कमायल किछु टाका व्यय करय। एहिमे बेजाय की? मामीक प्रसंग मनीष कहै छथि अहाँ कैँ काजक ईलम अबैये ,तँ अपन सेवा कैँ पाय मे किये ने बदलब।सेवाक्षेत्र बहुत दिन धरि उपेक्षित रहलैक अछि।एहि कथाक माध्यम सँ कथाकार सेवाक्षेत्रक महत्वक जे रेखांकण कयल अछि से अति महत्वपूर्ण अछि।आइ सं बीस बर्खक पछाति हम सेवा क्षेत्रक बढ़ैत डेग कैँ अकानि सकैत छी।

'मातबर' जे एहि संग्रहक शीर्षक कथा अछि। आइ सभ किछु पु पूंजीपर टिकल अछि।बाप बेटाक सम्बन्ध तक टाकापर आबि क' ठमकि गेल अछि। कोनो धरानी सब मातबर बनय चाहैत अछि।आइ डेग -डेग पर महाराज बैसल अछि।ओकर संग देबाक लेल ,जी हजुरी करबाक लेल कविया आ महबूब सनहक मुँहलगुआक कोनो कमी नहि छैक।मुदा एहिमे पीढ़ीक संघर्ष सेहो देखाइत अछि।हँ, एकटा बात शेख साहेब सन मुँहपर कनियों उचित बजनिहारक दिन- दिन अभाव भेल जा रहल अछि।

एकटा कथा अछि 'दसखत'।एहि कथामे आचार्यजी सन आइ .ए. एस आजुक युगमे भरल पड़ल छथि।भ्रष्टाचार आओर विलासिता आजुक

नौकरशाहीक पर्याय भ' गेल अछि।विलासिताक पराकाष्ठा भ' गेल अछि जे आचार्यजी सनक लोक जीवन जे अपन हाथ पैर साफे हिलब' नहि चाहैत छथि।एतय धरि जे फाइलपर दसखतो सांकेतिक करय लगैत छथि।परिणाम एहन- एहन लोकक स्थिति आचार्यजी जकाँ भ' जाइत छनि जे हुनक अंग सब शिथिल भ' जाइत छनि अनेक रंगक व्याधि गछारि लैत छनि।शक्तिहीन भ' टुकुर- टुकुर तकैत रहैत छथि।

'कोठा' आजुक राजनीतिक व्यवस्थाक सटीक चित्रण अछि। आइ डेग डेग पर राजनीतिक व्यवस्थामे रामलाल मंडल सन नेता भरल पड़ल अछि।मजाल छै जे कियो कल्ला अलगा सकय।ई काज जैह किछु साहित्यकारे क' सकैये।से कथाकार बहुत फरिछा क' ,बेकछाक' मंत्रीक किरदानी कें उघार के अछि।ई मात्र मंत्रीक किरदानी नहि आजुक लोकतांत्रिक बेवस्थाक सहज पहिचान भ' गेल अछि।ककरा कहबै?नागनाथ के हटाउ सांपनाथ कैँ लाउ ,की बाघनाथ कें लाउ ,सब एके रंग।बदलैल- बदलैत जनताक मोन सेहो अगुताय लागल अछि।जाति धर्मक स्वर्ण तुलापर लौल क' भ्रष्टाचार,आतंकक सबटा सौ फिसदी टंच फार्मूला सभक अविर्भाव नेता लोकनि क' लेलनि अछि। देखियौ कथाकारक पैनी नजरि कोना दौड़ैत छनि," प्यादा,फर्जी,किश्ती ,घोड़ा...।सह आ मात खेलाइत रहैत छथि।ब्रह्मण,दलित,पिछड़ा,मुसलिम...गोटी पर गोटी।तर्जनी आ औंठा।दिमाग के खेल।दिमाग तेज आ बुद्धा प्रखर भेल जाइत छनि।एडभाइस लैत छथि ब्राह्मण सँ।राशि लैत छथि दलित सँ।रोटी बेटी पिछड़ा सँ।सम्मान लैत छथि मुसलिम सँ।"

अंन्तमे रामलाल मंडलक पोसल सांप बेसम्हार भ' जाइछ आ सौंसे सांप सरसराइत सनसनाइत रहैत अछि।भ्रष्टाचारक सांप,सामाजिक

वैमनस्यक सांप।मुदा जे हौक मंत्री ,संत्रीक कोठा पर कोठा तँ बनिये रहल छैक।

एकटा कथा अछि सहज- असहज' ई दू मित्रक कथा अछि,जे नेनपने सँ मित्रताक बन्हनमे बन्हल छथि ।कामेश्वर चौधरी आ राधेश्याम बाबू दुनू नेनपनेक संगी छथि से संगियारे प्रौढ़ावस्था धरि निमहि रहल छनि।कामेश्वर गामे पर रहि गेलाह ,ओतहि खेतीबारी करैत छथि आ निचैन सँ जीवन गुदस्त करैत छथि।खुलि क' मेहनति करै छथि आ जमि क' भोजन करै छथि।सुख सँ भरि राति सुतै छथि मुदा राधेश्याम पैघ पदाधिकारी छथि,पटना सन नगरमे सभटा सुख सुविधाक अछैत रातिक' निन्न परा गेल छनि।बिनु गोटी खयने आँखि नहि मुनाइत छनि। राधेश्याम पटनामे आलीशान घर बनबै छथि से अपन मित्र कैँ देखब' चाहैत छथि।ओ एक तरहें जबरदस्ती कामेश्वर चौधरी कैँ अपन घर देखेबाक लेल पटना लबै छथि।कामेश्वर घर देखि क' खूब प्रसन्न होइत छथि।कामेश्वरक खूब आदर सत्कार करैत छथि। कामेश्वर गाम सँ नगर आयल छथि मुदा जीवनचर्या अपनेसन छथि कोनो बदलाब नहि जलखै मे पाँचटा परौठा आ भरि बट्टा तरकारी खाइत छथि।एयरकंडीशन कोठरी सँ निकसि फुजल छतपर अकासक नीचां अखरा पटियापर खूब चैन सँ सुतैत छथि मुदा सबटा सुख सुविधाक अछैत राधेश्याम बाबूक आँखि सँ निन्न परा जाइत छनि।ई कथा मनुक्ख विकसित होइत एकटा नव तरहक जीवन शैली कथा कहि' रहल अछि। सुविधा सँ सुख नै कीनल जा सकैछ।सुख भोगक लेल चाही चैन, से भेटैछ यथालाभ संतोष सँ ।मनुक्ख आब जिनिस' भ' गेल आछि।पाइक हबस मनुक्ख कैँ कतय पहुंचा देने छैक? से जिनिस कथामे देखल जा सकैछ।एकबेर जँ गलत काजक दलदलमे फँसलहुँ तँ बाहर निकसब बहुत मोसकिल अछि। रुपा आ सतीशक दाम्पत्य जीवन रुग्ण भ' जाइछ।एहि रुग्णताक कारण कोनो पारिवारिक आ नीजी समस्या नहि अछि।एकर कारण अभाव सेहो नहि अछि। एकर कारण अछि लिप्सा।एकर

कारण अछि मुँहमे खून लागब। रुपा ई बुझितो जे श्रम करैये से सुखी रहैये तथापि ओ सतीश पर अनर्गल दबाव बनौने रहैत छथि।एकर कारण स्वयं सतीश छथि ।आइ लोक इमानदारीक टाकापर गुजर करब नहि जनैत अछि वा एना कहि जे एहिपर असोकर्य होइत छैक। उपभोक्तावादी संस्कृतिक दौरमे के बाँचल अछि से कहब कठिन?

कोनो चीजक 'हिस्सक' बड़ खराप नीको बातक हिस्सक कखनो -कखनो मनुक्ख कैँ संकट मे आनि दैत छैक ।तखन बेजाय काजक कोन बात?भ्रष्टाचार करब, अनैतिक आचरण करब आब लाजक गप नहि रहल।जहल जायब आब मर्यादा हनन के गप नहि रहल।आब लोक भ्रष्ट आचरणक लेल जहल जाइछ आ जखन जमानति पर छुटैत अछि तँ हाथी पर चढ़ि क' जुलूसक रुपमे नगर भ्रमण करैछ। हिस्सक कथा मे एकटा साहेब लाजक परिभाषा बड़ नीक सँ देने छथि,"लाजक एहिमे कोन प्रश्न छैक ? हम सभ जाहि उद्योगमे(भ्रष्टाचारक उद्योग) लागल छी ताहिमे लाजक कोनो महत्व नहि छैक।लाज तँ पहिनहि संग छोड़ि दैत अछि।अथवा लोक लाजेके छोड़ि दैत छैक।लाज धाख त' तोरा सभक लेल अछि"

एहि टाकाक उद्योगमे किछु संभव छैक।जेलमे रहितो जावन्तो सुविधाक उपभोग क' सकैत छी।राति विराइत ज ल सं निकसि क' घुमियो सकैत छी।

'भोज' कथाक माध्यम सँ ब्रह्मण समाजक जे अन्तर्विरोध अछि से फरिछ सँ उजागर कयलनि अछि।एखनो समाजमे छोटका- बड़का लोकक अवशेष बाँचल अछि।मात्र कर्मकांडे धरि ब्राह्मण रहब तँ की भेटत? भोज शीर्षक कथा अनेक तरहक सामाजिक प्रश्न ठाढ़ करैये।

एकटा कथा अछि 'खुशीक प्रश्न' कथा मे बाल मनोविज्ञान प्रयोग कयल गेल अछि मुदा अछि विशुद्ध रुप सँ एकटा शहरी मध्यम वर्गीय परिवारक कथा। शहरी मध्यम वर्ग कोना अपना दैनिक जीवनमे तनाव आ कुंठा सँ जीवन जिवैत अछि जाहिमे नेना लोकनिक कोमल मोनक कोन तरहेँ उपेक्षा होइत अछि।कोना एकटा कवि अपना पुत्र केँ कवि बनबा सँ रोकैत अछि।एहि सवेदना के की कहबै? भगत सिंह होथि मुदा हमरा घरमे नहि से कोना चलत? आजुक समाजक ई चरित्र आम भेल जा रहल अछि।

लोक एतेक तनावमे रहैत अछि।ईर्षा आ द्वेष सँ ततेक ने व्यथित रहैत अछि जे अपन दैनिक जीवनक खौंझ आ तामस कोमल मानसबला नेना सभपर उतारैत अछि।ई कथा एखनुक मध्यमवर्गक सही प्रतिनिधित्व करैत अछि।

'तानपूरा' कथामे कोना लोक अपन अपूर्ण महत्वाकांक्षा के अपन बेटा- बेटी पर लादि रहल अछि से नीक सं देखार भेल अछि। विनोद बाबू अपने संगीत सिखय चाहलनि हुनका अपन पिता सँ सहयोगो भेटलनि मुदा अपन अयोग्यता वा परिश्रम नहि क' सकबाक कारण ओ संगीत नहि सिख सकलाह मुदा जखन हुनक पुत्र गौतमक अभिरुचि संगीत दिस जगलनि तँ ओकरा उत्साह कतय सँ बढ़बितथिन उन्टे ओकरा हतोत्साहित कयलखिन।लोक एखनो बच्चा सभक भविष्य अपना हिसाबें तय करैत अछि।ओहि हिसाबे बच्चाक व्यक्तित्वक निर्माण करय चाहैत अछि जाहिमे ओकरा बेस टाका भेटै,ओकर ख्याति आ रौबदाव होइ।बच्चाक अभिरुचिक कोनो महत्व नहि। एहि तरहक कुंठित शिक्षासँ समाज के उबरबाक बेगरता छैक।गौतम के संगीतक प्रति एतेक उत्साह रहितो एकटा तानपूरा ओ नहि किनैत छथि।ई एकटा सामंतवादी सोच अछि।एहि संग्रहमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि 'हरिसिंहदेवी'। सामन्तवादी समाजमे एहन- एहन वर्गीकरण कयल गेल जे समाज बँटल रहय आ शोषणक कारखाना चलैत रहय।समाज

अनेक जातिमे तँ बँटले छल फेर अनेक उपजाति बनाओल गेल ताहिमे ब्राह्मण आ कायस्थ वर्गक लेल जे पंजी ब्यवस्था बनाओल गेल ताहि बेवस्थापर एहि कथाक माध्यम सँ बेस धरगर प्रहार कयल गेल अछि। एहि बेवस्थाक सभटा अवगुणे रहल।अन्तत: एहि वर्गीकरण सँ समाजिक एकता कमजोर भ' गेल आओर बेवस्था लागू करयबला राजा हरिसिंदेव के स्वयं तुगलक आक्रमणक सामना नहि क' भेलनि आ हारि क' जंगल दिस परा गेलाह।जँ समाज एकताबद्ध रहितय तँ हुनका एहन स्थितिक सामना नहि करय पड़तनि। पंजी बेवस्था मे जाति -उपजातिमे विभाजन सँ समाजकमे झूठक देखाबटी,एक दोसराक उपहास करब,हीन बुझब एहि सबसँ सामाजिक तानी भरनी बहुत तन्नुक होइत गेल।अन्तत: एकैसम शताब्दीयो मे मिथिलामे जातिक श्रेष्ठताक दंभ एखनो बहुत किछु बाँचल अछि। बुड़ि कहाइयो क' सोति बनल रहब ई कोन श्रेष्ठता भेल ? एहि कथाक माध्यम सँ कथाकार जाति बेवस्थामे श्रेष्ठताक झूठक दंभ पाल'बला लोक सभकेँ नीक सँ देखार करबामे बहुत सफल भेलाह अछि।

एहि संग्रहमे एकटा कथा अछि 'सीवन रजकक हितचिन्तक' सीवन रजक धोबि जातिक अछि ।मैट्रिक पास अछि।बैंक मे आदेशपाल अछि।एतय तक बड़ बढ़ियां मुदा जखने ओ प्रोन्नत भ'क', रोकड़पाल (कैसियर) भ' जाइए।होब' लगैत छैक ओकर उखाही से गामक बाबू भैया सँ आफिसक बाबू आ आफिसर सभ अपना -अपना तरीका सं सीवनकेँ उपेक्षा आ तिरस्कार करैये।सीवन ईमानदारी सँ कैसियरक काज करैत रहैत अछि ताहिपर ककरो धियान नहि जाइत छैक। बैंकक फिल्ड आफिसर द्वारा जे ऋण लेबा मे किसानक सभक शोषण कयल जाइत अछि तकर सीवन विरोध करैत अछि।सीवन चेयरमैन रामदहिन मिश्रक बड़ आदर करैत अछि।हुनका कहला पर ओ शराब पिअब छोड़ि दैत अछि। सीवन नीक लोक भ' जाइत अछि मुदा ओ अपन स्वाभाविक क्रिया- कलाप बिसरि जाइए से एहि बात केँ ओकर

पत्नी तक अकानि लैत छैक। सीवनक पत्नी कहैत छै,' हँसियो करै छियै तँ मुसकिया दै छै।एना किये भ' गेलैए चुनियाक बाप के?आब बजबो कम करै छै।ठहक्का त' एकदम बिसरि गेलैए।धौर एहिसँ त' पहिने नीक रहै।' भाय रामलखन त' ओकरापर सोझे सोझ आरोप लगा दैत छैक जे ओ आब बड़का लोक नाहित गप करैये। सीवन कें एकाएक अपन स्थितिक भान होइत छैक।ओ फेर सँ अपन पुरना सहजतामे आपस आबि चाहैये।निश्चय करैये जे ओ पहिने जकाँ हँसत ,बाजत ,गप करत।जीवनमे आगू बढ़ब बेजाय नहि मुदा ओहि संग अहाँक बदलैत सहजता अहाँकें जीवन राग सँ बहुत दूर धकेलि सकैया।

'महतो'बदलैत कुदृष्टि कथा थिक।अपना राज्यक कार्यालयी संस्कृति कें जीवन्त वर्णन करयबला कथा अछि।सरकारी कार्यालय कोना निठल्लापनक अड्डा अछि।कियो बिना पेपरवेट के काज करबाक लेल तैयार नहि अछि।ईमानदार आ सोंझ लोक कें बुरबक,बेहूदा बुझल जाइछ।जेना एहि कथाक महतों कें बुझल जाइत छैक।अपने कार्यालयमे पी. एफ सँ अग्रिमक लेल कोन दशा होइत छैक महतोक।कोना कार्यालय मे काजक अतिरिक्त सबटा मसखरापन होइत रहैत छैक।हद तँ तखन भ' जाइत जखन कार्यालयक स्टाफ गुलाबरतन बड़ा बाबूक सहयोग सँ साहेबक पत्नीक सम्बन्ध मे अश्लील बात करय लगैत अछि ।तखन महतो सभटा बिसरि क' गुलाबरतन कें कालर पकड़ि क' तीन- चारि चमेटा घींचि दैत अछि।ई छियै बेहूदा लोकक प्रति प्रतिरोध थिक।कखनोकाल महतो सन सुधुआ व्यक्ति कें जखन बात हद सं आगां बुझाइत छैक त' एहने प्रतिक्रिया दैत अछि।ओतय जं कियो पढ़ल लिखल काबिल व्यक्ति रहैत त' हें हें हें क'क' अपन काज निकलबा लैत।

'सनेश' कथा बहुत मार्मिक कथा अछि।अपना समाजमे एखनो सभटा जातिक नपनापर नापल जाइए।अपना जातिक स्वर्ण तुलापर लौलल जाइए मुदा बात सांच ओतय छैक जे कोनो गरीबक अपना जातिक धनीक वा बड़का लोकक समक्ष कोनो सम्मान नहि छैक ।चाहे ओ मिसरजी होथि वा दिवाकर रविदास। ई सभ जनितो तैयो सभ भरिदिन जाति- जाति खेलाइत रहैत अछि।मिसरजी आ रविदासजी संगे रहैत छलाह।एक दोसरापर खर्च करैत छलाह। बात आयल गेल भ' गेल।एकदिन दिवाकर रविदास मिसरजीक ओतय पुरना स्टीरलक औंठी जे हुनका मिसरजी देने छलखिन।ओहि नापक एकटा सोनाक अंउठी लाल पाथर लागल मिसरजीक ओतय एकटा पत्रक संग दिवाकर द' गेलाह। एहि सनेशपर मिसरजीक प्रतिक्रिया आ पत्रक मजमून दुनू सोचबापर विवश करैत अछि। आखिर हम सब कतय जा रहल छी?

राग - बिराग बहुत हल्लुकसन कथानक कें कथा बनाओल गेल अछि।एहि कथाकेँ पढलाक पछाति हमरा लागल जे एकटा मांजल कथाकार कतेक आसानी सँ अपन कथानकक चयन करैत छथि।एहि कथामे कथानायक कें पटना सँ दरभंगाक यात्राक क्रममे एकटा सहयात्रीक संग जे संवाद होइत छनि ओकरे महीनी सँ कथा मे परिवर्तित क' दैत छथि। एकटा सोझमतिया लोक कें कोना साकांक्ष कयल जा सकैछ। कथा बहुत रोचक ढंग सँ लिखल गेल अछि।

'आबेस' आइ धियापूताक कैरियरक प्रति लोक बेस साकांक्ष भ' गेल अछि , से नीक बात मुदा कैरियरक अतिरिक्त जीवनमे आर बहुत किछु छैक,जे सिखबाक अनुभव करबाक दरकार रखैत अछि।लोक बुझै अछि बच्चा पढ़ि लिखि लेत नीक नौकरी- चाकरी भ' जेतै बस आर की ?मुदा बात ओतहि धरि सीमित नहि रहि गेल छैक।उचित संस्कार प्राप्त करब,जीवन

संघर्षमे आगां उत्पन्न होइबला समस्या सभ सँ कोना लड़ल जाय? ई सभ भेटैत छैक पारिवारिक आ सामाजिक जीवनक अनुभव सँ।मुदा आजुक जे संस्कृति विकसित भ' रहल अछि ताहिमे बच्चाक गलती कम आ अभिभावक बेसी बुझना जाइछ।आबेस आ दुलारओतबय जतेक आवश्यक।जतय हटन-डटन जरुरी ओतय ओहो हुए।अज्ञाकारिता,नम्रता मनुक्खक जीवनक आभूषण अछि।दिनेश बाबू आओर अनिता अपन बेटा कैँ घ'र ल' जेबाक लेल गेल छथि। कएक घंटा सं टीशनपर प्रतीक्षामे बैसल छथि। आओर बिनु बेटाक नेनहि टिशनपर सँ घर आपिस आबि जाइ छथि ।हुनक पुत्र महेश अपन संगी प्रशान्तक संगे बतिआइत रहि जाइये। माय बापक कोनो परबाहि नै करैत देखाइये।ओकर चालि- चलनिमे माय- बापक प्रति कतहुँ अनुराग नहि झलकैत छैक।ई बहुत चिंताक बिषय छैक आजुक पीढ़ीक लेल।सब चाहैत अछि हमर बेटा दूर ,बहुत दूर देश चलि जाय,खूब टाका कमाय।समाजमे एहि रुपमे हमर चर्चा होइत रहय जे फल्लां बाबूक बेटा युरोप,अमेरिकामे एतेक अमेरिकन डालर कमाइत छनि ।फल्लां बाबू खुशी सँ फुइट जकाँ फटैत रहैत छथि।अवस्था खसलापर ओएह बेटा घुमियो क' जखन नहि देखैत छनि फेर आहि अबैत छनि।आबेस एतबय जते जरुरी। 'बूढ़ा जिबैत रहलाह' एकटा विलक्षण कथा अछि।एहि कथामे लोक बूढ़ा कैँ बेबकूफ बूझैत अछि मुदा हमरा जनैत बूढ़ा सभकैँ बेबकूफ बुझैत छथि।समाज कतेक संवेदहीनअछि? हुनक परिवारमे एतेक गोटा मरि जाइये तैयो बूढ़ा जिबैत छथि।ई बूढ़ाक जिजीबिषा छनि। से बुझबाक ज्ञान एखनो हमरा समाजमे विकसित नहि भेलैक अछि वा लोप भ' गेलैक अछि ।से जे कही।बूढ़ा एहु अवस्थामे लोकक स्वागत- सत्कार करैत छथि।उपकार करैत छथि।मुदा बूढ़ा समाजक चालि चरित्र कें नांगट सेहो करै छथि।ओ अठारह बर्षक युवती सँ विवाह करबाक घोषणा करैत छथि।ने अठारह सँ कम आ ने बेसी।किये जँ उनैस बरखक युवती सँ विवाह करितथि तँ जुलूम भ' जइतै? वास्तवमे बूढ़ा

कैँ विवाह नै करबाक छनि।ओ समाजक चरित्र कैँ देखार करय चाहलनि अछि।ताहिमे ओ सफल भेलाह अछि।कथाकार सेहो सफलतापूर्वक कथा कैँ बुनाबटि मे, ओहिमे रंगटीप देबै बहुत सफल रहलाह अछि।एकटा कथा अछि 'प्रतिलोम' ई कथा एकदिस कथाकार श्रोत्रीय समाजक यथास्थितिवादिता पर धरगर प्रहार केलनि अछि तँ दोसर दिस समाजमे जे जातीय दुर्भावना चरमपर अछि तकर नमूना सेहो भेटैत अछि।अर्जुन के जीह कटबाक के प्रयास करैत छैक? ओकरे जातिक लोक।ओहि जातिक कहबैका सभ अर्जुन सनक नि:सहाय लोकक लेल किछु जीविकाक ओरियान किये ने करैत छथि? कियेक नहि अर्जुक कें पढ़बाक लिखबाक ओरियान समाज करैये?तखन पेट पालैक लेल जत' कतौ कियो चाकरी करैये तकर मजाक उड़बैवला ,ओकरा प्रताड़ित करैबला ई केहन समाज अछि? ई द्वैध बहुत भयंकर अछि।से सभ जातिमे बरोबरिये अछि। श्रोत्रीय समाजक भोजक वर्णन अद्भुत अछि एहि कथामे।भोज खेबाक आ करबाक संस्कृति श्रोत्रीय ओ ब्राह्मण समाजमे कने बेसिये अछि। से व्यंग्यात्मक शैलीमे भोजकअद्भुत संगीतात्मक वर्णन केलनि अछि।

" भोज शुरु भेलैक त' प्रारंभमे वातावरण गभिनायल छल।क्रमश: मुसकी,कनफुसकी,टोकाटोकी,हंसी,ठट्ठ,ठहक्का,पिहकारी,सात सुर बाज' लागल।आस्ते -आस्ते भोजमे एकटा आलाप आयल।..... आरोह वा अवरोह मे दही,अम्मट,श्रीखण्ड,लड्डू,रसगुल्ला आ पायसक स्वाद वातावरण मे पसरैत रहल ।भोज एकदम संगीतमय भ' उठल।" कथाकार एतय व्यंग्यमे जे संगीतात्मकता उत्पन्न केलनि अछि तखन सहजहिं प्रो. हरिमोहन झा मोन पड़य लगैत छथि।

से सब त' ठीक मुदा कथाक अंत प्रदीप लग आबि क' होइये ।ओएह प्रदीप जे 'दास- दासिनक' दानक प्रतीक प्रावधानक विरोध कयलनि।हलांकि

हुनक विरोध यथास्थितिवादक छत्तातर झपा गेल।भले झपा गेल, विरोध त' भेल।

एहि संग्रहक अठारहो कथा पढ़लाक पछाति बहुत आनंदक अनुभव क' रहल छी ।हमरा गर्वानुभूति भ' रहल अछि जे हमरा बीच मैथिली भाषामे एहन उद्भट्ट कथाकार सब छथि।कथाकार अशोकजीक जे छबि हमरा मोनमे अंकित अछि 'जे ओ मैथिली कथा कें लोकल सँ ग्लोबल बना देलनि अछि।ई धरणा एहि पोथीक पुनर्पाठ सं कने बेसी मजगुत भेल अछि।हेबनिमे हिनक प्रकाशित कथासंग्रह 'डैडीगाम'पढलाक पछाति जे आर आस्वस्ति भेटल छल से 'मातबर' कथा संग्रहक पुनर्पाठ सँ हमर धारणा आर बहुत बेसी मजगूत भेल अछि।बीस बर्ख पहिने प्रकाशित एहि पोथीक कथासभ एखनो टटका बुझा रहल अछि। प्रस्तुत पोथी दीर्घ अवधि धरि मैथिली कथाक प्रतिनिधित्व करैत रहत ,तकर हमरा पूरा भरोस अछि।।जे पाठक वा कथाकार एहि पोथी कें नहि पढ़ने होइ कृपया अपने अवश्य पढ़ी से विनम्र आग्रह।

-संपर्क-6207627509

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.अजित कुमार झा- डैडीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

अजित कुमार झा

डैडीगाम: एक अप्रतिम कथा संग्रह

विदेह जे काज क' रहल अछि से निस्संदेह प्रशंसनीय अछि। अहि नौंक काज मे कोनो रुप मे शामिल भेनाई मोन कैं प्रफुल्लित करैत अछि। अहि बेर कथाकार अशोक जी पर विशेषांक निकालबाक हेतु संकल्प बद्ध छथि। हम बड्ड असमंजस मे छलहुँ कारण हिनका पढ़ने त' छलियन मुदा मैथिली पत्रिकाक माध्यम सँ। सब पत्रिका हमरा उपलब्ध भेल हो आ हिनकर सब कथा हमरा पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल हो से त' संभव नहि। अजीब दुविधा मे छलहुँ जे हिनकर कोनो पोथी कोना प्राप्त करी? एहन मे आशीष जी सँ गप्प भेल आ हम अपन समस्या सँ हुनका अवगत करेलियन आ लगले ओ हमर समस्याक समाधान क' देलाह। विदेह आर्काइव पर उपलब्ध मैथिली रचना संसार कैं विषय मे विस्तृत जानकारी भेटल आ पोथी डाउनलोड केनाई आसान भ' गेल। कथाकार अशोक जी केर किछु कथा संग्रह जे कि अहि पर उपलब्ध छल से डाउनलोड कैलहुँ आ पढ़लहुँ जेना कि: आँखि मे बसल (यात्रा कथा), ओहि रातिक भोर, मातबर आ डैडीगाम। ओना बहुत कथा त' विभिन्न पत्रिका सब मे पढ़ने छलहुँ मुदा पोथी रुप मे सब कथा एकठाम

भेटि गेल त' मजा द्विगुणित भ' गेल। एक-सँ-बढ़ि एक कथा सब पढ़लहुँ आ ओहि बीच कोनो आन काज करबा मे मोन नहि लागि रहल छल। विदेहक माध्यम सँ ई अमूल्य निधि हाथ लागल अछि आ सेहो बिना कोनो कष्ट कैं। अहि अपूर्व काज लेल हिनका सब कैं साधु वाद । विषय सँ विषयांतर नहि भ' जाइ तैं घुरि आबैत छी कथाकार अशोक जी पर।

ओहि रातिक भोर सन् 1991 मे, मातबर सन् 2001 मे, आँखि मे बसल (यात्रा कथा) सन् 2013 मे आ डैडीगाम सन् 2017 मे प्रकाशित भेल। आइ हम अपने सब सँ चर्चा करब हिनक कथा संग्रह 'डैडीगाम' पर। नवारम्भ प्रकाशन, पटना सँ सन् 2017 मे प्रकाशित कथाकार अशोक जी केर पोथी ' डैडीगाम ' मे कुल 15 टा कथा शामिल अछि।अहि पोथीक प्रथम कथा 'लाथ' एक साधारण कथा लागल। कथा नायक प्रोफेसर साहेब एकटा कुर्ता खरीद क' आनैत छथि आ ओहि पर सबहक केहन प्रतिक्रिया रहैत छन्हि तकर नींक चित्रण केने छथि। दोसर कथा अछि 'छल'। को-आपरेटिव सोसाइटी केर आम सभा मे डेलीगेट सब कैं स्मृति स्वरुप एकटा ब्रीफकेस भेटबाक गप्प छल तैं को-आपरेटिव सोसाइटी केर अध्यक्ष अपन मित्र भोली झा कैं फर्जी डेलीगेट मुहम्मद असलम बना क' ल' जाइत छथि। भोली झा एकबेर अपन गामक नाटक मे बहादुर शाह जफर केर पार्ट खेलने छलथि आ हिनकर खूब प्रशंसा भेल छलनि। अहिबेर डेलीगेट मुहम्मद असलम केर किरदार रियल लाइफ मे निभा रहल छलाह आ सच पुछु त' अपन किरदार मे जबरदस्त ढ़लि चुकल छलथि। वास्तव मे जीवन सेहो एकटा नाटके त' छैक। तेसर कथा अछि 'स्वाधीन' जे कि आजुक नारी सशक्तिकरण पर अछि। अजय-जया केर प्रेम विवाह होइत छन्हि आ जया कहैत छथिन्ह - " हम अहि सन्तान के जन्म नहि द' सकैत छी।" अजय पुछैत छथि- "किए जन्म नहि

द' सकैत छी?" जवाब मे जया कहैत छथि- " पतिक बलात्कार सँ उत्पन्न संतानक माय हम नहि बनय चाहैत छी। भरि जन्म ई अपमान हम नहि सहि सकैत छी। " एक पिता-पुत्र आ पति-पत्नीक संबंध मे द्वंदक अद्भुत चित्रण भेल अछि अहि कथा मे। चारिम कथा अछि 'ओ दुनु साइकिल सिखैत अछि'। दंगा आ कर्फ्यू सँ ग्रस्त शहर मे दूटा बच्चा भाड़ा पर साइकिल ल' क' चलेनाई सिखैत अछि आ एकटा मुसलमान कैं धक्का लागि जाइत छैक। नींक बेजाय लोग त' सब धर्म मे रहैत छैक।

पाँचम कथा केर चर्चा अन्त मे करय चाहब। छठम कथा अछि 'राग'। इहो कथा हिन्दू मुस्लिम केर धार्मिक एकता पर आधारित अछि। सातम कथा अछि 'लेमन आइसक्रीम'। परदेसिया बेटा जिनकर गाम पर कोनो संगी साथी नहि छैक तकर गामक यात्रा आ वापस शहर आबि अपन पिता सँ गामक चर्चा केर नींक चित्रण भेल अछि। आठम कथा अछि 'उमकी'। दू बाल सखा प्रकाश एवं दिनेश कैं बहुत सालक बाद भेँट आ बालपनक नास्टैलजिक स्मृति केर सजीव वर्णन भेल अछि। नवम कथा अछि 'मनसूबा'। आजुक प्रगतिशील युवा तरक्की केर होड़ एवं आधुनिकताक चकाचौंध मे न' त' अपना लेल पलखति छन्हि आ न' त' माता-पिताक मनसूबा पूर करबाक लालसा। दसम कथा अछि ' अभयक बेटा कैं दूटा दाँत भेलनि'। गामक यात्रा एवं स्मृति सँ जुड़ल कथा। अपन गाम मे गाम खोजैत लोकक कथा। वास्तव मे गाम मे आब गाम कहाँ बसैत अछि। गाम त' बसैत अछि रोजी रोटीक जोगाड़ मे प्रवासी बनल लोकक हृदय मे।

एगारहम कथा अछि 'खुशीक नाम जीवन'। धिया पुता केर खुशी मे अपन खुशी खोजय वाला माता पिताक कथा। आजुक बदलैत सामाजिक परिवेशक कथा। बारहम कथा अछि 'टीस'। नारी सशक्तिकरण केर पोल खोलय वाला कथा। बिमला अपन पति कैँ देखि सदैव गौरव बोध करैत रहलीह आ हुनकर पति लक्ष्मीनारायण हिनका बस माटिक मुरुत बुझैत रहलनि। भ्रष्टाचार मे लिप्त लक्ष्मीनारायण कैँ चलते मात्र कागज कलम पर बनल को-आपरेटिव सोसाइटी केर अध्यक्ष बिमला पुलिसक गिरफ्त मे पड़ि जाइत छथि। जेल मे गेलाक उपरांत बिमला कैँ बोध होइत छन्हि जे बेइमान त' सभठाम बेइमाने होइत अछि, चाहे घर हो कि बाहर। तेरहम कथा अछि 'छुट्टीक एक दिन'। अहि कथा कैँ पढ़ि कोलकाताक काॅफी हाउसक अड्डा मोन पड़ि गेल। मैथिली साहित्य पर चर्चा हेतु मैथिलीक एक साहित्यकार साहेब कैँ घर पर उपस्थित होइत छथि एक नव दम्पति अंकिता ओ अभिनव आ प्रारंभिक परिचय पात कैँ बाद ओहि छुट्टीक दिन शुरु होइत अछि साहित्य पर चर्चा। साहित्यकार महोदय मैथिली मे किएक लिखैत छथि ताहि प्रश्नक जवाब मे कहैत छथि- " सोचै छी मैथिली मे, तैँ लिखै छी मैथिली मे।" ओनाहुतो मैथिली अपन मातृभाषा थीक। मगर अभिनव कहैत छथि- " लेकिन सर, मैथिली अपन भाषा रहि कहाँ गेल छैक जखन माइयो अपन धिया पूता सँ मैथिली मे गप्प नहि करै छै त' ओ अपन भाषा कोना हेतै?" अंकिता साहित्यकार महोदय सँ पुछैत छथि जे जौँ कोनो प्रेम कथा मैथिली मे पढ़बाक हो त' कोन किताब पढ़ी? अचानक सँ कोनो किताबक नाम हिनका मोन नहि पड़ैत छन्हि। वास्तविकता छैक जे अजुका साहित्यकार कैँ अपन रचना कैँ अलावे अन्य साहित्यकार सबहक रचना पढ़बाक कोनो प्रयोजन नहि बुझाइत छन्हि। वर्तमान साहित्यकारक रचना केर स्तर पर सवाल उठैत अछि तखने साहित्यकार महोदय केर पत्नी नीलम सेहो अहि चर्चा मे शामिल होइत छथि चाय आ भूजल मखान केर संग आ बाजि उठैत छथि- " मैथिलीक

साहित्यकार के एक दोसराक अदगोइ-बदगोइ सँ फुर्सत होइन तखन ने पढ़बा जोगर रचना करताह।"

चौदहम कथा अछि ' गामक कातक हाइवे'। बर्बाद होइत पर्यावरण आ ओकर दुष्प्रभाव केर नींक चित्रण भेल अछि। प्रकृतिक संतुलन बिगड़ि रहल अछि आ आधुनिकताक होड़ मे साँस लेब दूभर भेल जा रहल अछि मुदा हमरा सब लेल धन्न सन। वास्तविकता त' इएह अछि जे गामक नामो निशान मिटा रहल अछि। अन्तिम कथा अछि ' एना भ' क' कियो'। बड़का हाकिम चौधरी जी कैं अधीनस्थ कर्मचारी सब हिनकर कमजोरी कैं गमि लैत छनि आ सब मिलि हिनकर परिहास मे जुटल रहैत छथि। चौधरी जी कैं पचपनक उमिर मे बचपन वाला हरकत देखि संजय कैं ग्लानि होइत छन्हि मुदा चौधरी जी कृष्ण आ गोपी केर रास मे कृष्ण बनि जागल मे स्वप्न देखैत रहैत छथि । एक दिन जखन संजय कैं बर्दाश्त नहि होइत छन्हि त' अपन बड़का हाकिम चौधरी जी कैंआँखि खोलबाक अभिनव काज करैत छथि आ चौधरी जी हुनका गला सँ लगा लैत छथि।

कथाक विषय मे अपन बात कहैत काल क्रम भंग करबाक कोन प्रयोजन छल से सोचि रहल होयब। पंचम कथा केर शीर्षक भेल 'डैडीगाम' आ हिनकर कथा संग्रह केर सेहो इएह नाम अछि। कथाकार अशोक जी केर रचना संसार मे एक-सँ-बढ़ि एक अनुपम कथा सब अछि। पढ़ैत काल कोनो कथा कैं बिनु खत्म कयने पोथी छोड़नाई मुश्किल अछि। सब कथा वर्तमान सामाजिक परिस्थिति पर लिखल बुझायत। हिनकर कथा सब मे यथार्थ केर दर्शन होयत, कल्पना लोक मे ई विचरण नहि कराबैत छथि। पंचम कथा केर

विशेषता हमरा ई लागल जे यथार्थ केर संगहि अहि मे आदर्श सेहो झलकैत अछि। गामे गाम ढ़ेउआ ढ़ाकी मन्दिर बनि रहल छैक आ वास्तविकता त' इएह छैक जे ओहि मे पूजा अर्चना करय वाला तक केओ नहि रहैत छथि। दोसर गप्प जे आजुक समय मे लोग सेवानिवृत्ति केर उपरान्त घुरि क' अपन गाम नहि आबय चाहैत छथि आ एहन मे डाक्टर रघुवंश लन्दन सँ वापस गाम लौटैत छथि आ सेहो सपरिवार। हँ जे अपन माता-पिताक मृत्युक उपरान्त गाम नहि अबैत छथि तिनका अपन मातृभूमि मे जीवनक अन्तिम क्षण बिताबय केर इच्छा जागृत होइत छन्हि। अपन गाम पर सीतारामक एकटा मन्दिर बनबाबय कैँ विचार ल' क' गाम पहुँचल छलाह। एक तरफ डाक्टर साहेब केर बड़का पुत्र सुब्रत मन्दिर निर्माण केर ओरियान मे लागल रहैत छथि, त' दोसर तरफ छोट पुत्र माणिक टोले टोल घूमि लोग सब सँ भेँट कय मिथिलाक संस्कृति ओ साहित्यिक चर्चा मे। गाम आबय सँ पूर्व माणिक अपन पिता सँ पुछैत छथि जे - "मिथिला मे अतेक गरीबी किएक छैक? जवाब मे डाक्टर साहेब कहैत छथिन्ह- " अपना ओहि ठाम गरीबी के ग्लैमराइज करबाक परम्परा रहल आछि।" मन्दिर निर्माण कैँ लेल गामक लोग सँ एक बेर विचार करब जरूरी बूझि पड़ैत छन्हि तैँ अहि मादे विचार विमर्श हेतु गामक संस्कृत पाठशाला केर प्रांगण मे एकटा सभाक आयोजन होइत अछि। गामक लोग मन्दिर बनबाक खबर सुनि क' प्रफुल्लित छलथि मुदा माणिक केर किछु नबका नबतुरिया साथी सब सभा मे प्रश्न ठाढ़ करैत छथि जे मन्दिर बनला सँ गामक कोन उपकार होयत? अहि कैँ स्थान पर स्कूल, कालेज अथवा अस्पताल किएक नहि बनाओल जाय जाहि सँ गामक उपकार होयत? पूरा सभा मे किछु गोटे मन्दिर त' किछु गोटे अस्पताल के पक्ष मे बँटि जाइत छथि। अपन बाल सखा फेकन कैँ विचार अस्पतालक पक्ष मे सुनि डाक्टर साहेब अपन दुविधा कैँ खत्म करैत गामक बेगरता आ अपन अनुभव कैँ ध्यान मे राखि स्वेच्छा सँ अपन गाम मे अस्पताल बनबाबय केर निर्णय

लैत छथि। सभा समाप्त होइत अछि आ सुब्रत अस्पताल निर्माण केर ओरिआओन मे जुटि जाइत छथि। गामे मे नहि मुदा आसपास केर गामक लोग सेहो ई खबर सुनि प्रसन्न होइत छथि। डाक्टर रघुवंश अपन गाम ओ माटि पानि मे अन्तिम साँस ल' सकथि से सोचि गाम अयबाक निर्णय लेने छलथि मुदा जखन सँ अस्पताल बनयबाक निर्णय लेलनि अछि जीबय केर सिहन्ता बढ़ि गेलनि अछि आ अपन पत्नी सँ कहैत छथि - "गाम मरबाक लेल नहि, जीबाक लेल होइत छैक।"

- संपर्क-9472834926

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.कुमार राहुल- मैथिल आंखि सं डैडीगाम देखबाक सेहंता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय हस्तक्षेप)

कुमार राहुल

मैथिल आंखि सं डैडीगाम देखबाक सेहंता (कथाकार अशोकक कथा पर एकटा पाठकीय हस्तक्षेप)

मिथिला मे खिस्सा कहबाक प्राचीन संस्कृति रहलै-ए आ खिस्सा कहबाक जे लुतुक आ कला छैक तकर प्रभाव मैथिलीक आधुनिक कथा साहित्यक परंपरा बनि गेल. वैचारिक स्तर पर भारतीय साहित्य सं कदमताल करैत रहलाक बादो मैथिली कथा साहित्य 'कहन' मे अलग रहल. संभवत: अही 'देखन' कें कांचीनाथ झा किरण, अशोक आ विभूति आनंद प्रभृत्ति मैथिली साहित्यकार 'मैथिल आंखि' कहैत छथि. ऐ संदर्भ मे जं वरिष्ठ कथाकार अशोकक कथा कें देखी तं दृष्टिक एक नव दुआरि खुजैत देखा पड़त. कथाकार अशोकक कथा पढ़लाक बादो सुनबाक सेहंता जगबैत छै.

कथाक रूपक परिमार्जन आ ओकर सामर्थ्यक विस्तार मैथिली कथा साहित्य मे होइत रहलै-ए. अशोकक कथा ऐ सं फराक नै रहल. कथाकारक सफलता या असफलताक निर्णय करब तं कठिन, मुदा इ तं मानल जा सकैछ जे अपन परंपरा सं प्रभाव ग्रहण करैत अशोकक कथा अलग लीक बनबैए. हिनक

प्रारंभिक कथा हमरा हिसाबें हड़बड़ी मे लिखायल बुझाइ छै आ कत्तौ-कत्तौ फार्मूलाबद्ध सेहो, मुदा इ कथाकारक प्रारंभिक अभ्यास रहल होइतनि जे 'हेयरपिन' सं 'बौका चुप अछि' होइत 'डैडी गाम' तक पहुंचल. जं ऐ तीनू कथा कें एक संग पढ़ी तं अलग रहितो रस निस्पत्ति एक बुझा पड़त. तीनू कथा मिथिलाक पारिवारिक-सामाजिक ताना-बाना कें देखबैत ऐ. जं मिथिलाक गाम-घर महीन बदलाव सं अहां परिचित छी, तं इ कथा सभ समयक नब्ज कें जनबाक लेल थर्मामीटरक काज करत. यैह बात मैथिली कथा कें मैथिल आंखि सं देखबाक लेल प्रेरित करैत छै. इ तीनू कथा तीन ध्रुव पर ठाढ़ ऐ. तीनू तीन कथ्यक संग आगू बढ़ैछ, मुदा इ बुझा जायत जे इ अशोकक कथा थिक, जे पढ़बा सं बेसी सुनबाक इच्छा जगबैत छै. हेयरपिन मे कोमल भावना अपन चरम पर ऐ तं बौका चुप अछि मे शोषणक एकटा अलग तरीका दिस समाज कें इंगित करैछ आ डैडी गाम बदलैत समयक दस्तावेजी कथा थिक. तीनू कथा अशोकक कथाकार मन कें मापक लेल बैरोमीटरक काज सेहो क' सकैछ. हेयरपिन पढ़ला सं पहिने लागत जे कथाकार कें बहुतो गप कहबाक छनि. हुनका लग बहुत रास खिस्सा छनि, मुदा ओ कहि नै रहला अछि. किछु पंक्ति सं काज चला लेलनि. तहिना बौका चुप अछि मे एक संग बहुत रास कथ्य छै, जेकरा विस्तार पयबाक छलै, मुदा कथाकार कोनो हड़बड़ी मे छथि. ओ पूरा बात खोंइचा छोड़ा कें नै कहलनि. एकर कारण इ भ' सकैछ जे जखन इ कथा लिखल गेल ओहि समय मे यैह परिपाटी रहल होइ जे सब किछु नै कहल जाइ. जं कहलो जाइ तं किछुए पंक्ति मे. ऐ बात कें बल अहू सं भेटि सकैए जे अशोकक पहिल कथा संग्रह सं बेसी दोसर कथा संग्रहक कथा मे हुनक कथाकार मन विस्तार पाओलक अछि. तेसर संग्रह मे आरो बेसी. तैयो कत्तौ ने कत्तौ हुनक लगभग सभ कथा मे एकटा हड़बड़ी अथवा अधूरापन बुझा पड़ै छै. ओना यैह अधूरापन अशोकक कथा साहित्य कें पढ़बाक लेल उकसबितो छैक. एकर दोसर पक्ष सेहो छै, जे अशोकक कथा कें अलग पहचान दैछ. ओ थिक कथा मे कविता

सन सूक्तबद्ध पंक्ति. कम शब्द मे बिंबक प्रयोग करैत अपन बात कहब. इ बात अशोकक कथा साहित्य कें पढ़ैत जानल जा सकैछ. सिप्टीपिन कथा मे कविता भावक कम प्रयोग छै, बौका चुप अछि मे ओइ सं बेसी आ डैडी गाम मे तहू सं बेसी.

ध्यान देबाक गप इहो छैक जे अशोक जं एक दिस मार्क्सवादी विचारधारा सं प्रभावित छथि तं दोसर दिस फ्राइडक मनोविज्ञान सं सेहो. हिनक कथाकार कें धीरेंद्र-सोमदेवक साहित्य सं प्रेरणा भेटैत छन्हि, तं राजकमल चौधरीक साहित्य हिनक मोन कें सेहो मथैत छन्हि. इ बीचक रस्ता अपनबैत छथि आ अपन कथा चास तैयार करैत छथि.

डैडीगाम संग्रहक छह कथा कें हम पढ़बा सं बेसी सुनबाक इच्छा रखैत छी. इ हमर पाठकक सीमा सेहो भ' सकैए, मुदा इहो मानल जेबाक चाही जे मैथिली कथाक जे खिस्सकर परंपरा छै, तेकर वाहक अशोकक कथा ऐ, अर्थात खिस्सा कहबाक कला अशोकक परिपक्व कथाकार मन अर्जित क' चुकल ऐ आ यैह अर्जन मैथिली कथाक संपत्ति थिक.

हेयरपिन मे राति छै, तकिया छै, नीन छै... सभटा एकटा बिंब सन उभै छै कथा मध्य. ओहिना बौका चुप अछि मे राति छै, नीन छै, तकिया छै... मुदा हेयरपिन सं आगूक बात इ कथा अपन बिंबक माध्यम सं कहैए. बौका कें बीमारी छै, सेहो ह्रदय रोग. ओ ह्रदय बला लोक ऐ. जं कथाकार चाहितथि तं स्पष्ट कहि सकैत छलाह जे फलां रोग, मुदा नै. ओकरा कोनो आन असाध्य रोग नै छै, ह्रयक रोग छै. पूरा कथा ह्रदय सं शुरू होइ छै आ ह्रदय सं समाप्त. एतय हेयरपिन सं आगू बढ़ि कथाकार एकरा सामाजिक विद्रूपता आ शोषण दिस ल' जाइ छथि, सेहो नहुंएं सं. बौका कें सांप डसलकै. अजोध सांप. समाजक ओ सांप जे एखन धरि फेन काढ़ने अछि. जं कथाकार चाहितथि तं एकरा बीमारी सं सेहो मारि सकैत छलाह, मुदा तखन कथाक टोन बदलि

जइतै आ अर्थ विस्तार ओतेक व्यापक नै भ' सकितैक. जं ऐ कथा कें नहुंएं सं कोमल ढंगे विस्तार नै देल गेल रहितै तं संभव जे इ कथा 'अंतिम शह' शीर्षक कथा सन लगितै. संभवत: इ कथा नक्सलबाड़ी आंदोलन सं उपजल साहित्यिक प्रतिरोधी स्वर कथा थिक. एकदम इंकलाबी कथा. हमरा व्यक्तिगत रूपें इ कथा पसिन्न ऐ, मुदा जं खिस्सा रूपें अहां एकरा पढ़बै, तं इ ओतेक प्रभावी नै लागत. बौका चुप अछि कथा सेहो शोषणक बात कहै छै, मुदा सीधे नै, बिंबक माध्यमे. समाजक अजोध केना निम्नवर्गीय वर्ग कें डसि रहल छै, तेकरा बिंबक आवरण मे कथाकार कहैत छथि.

हम एकरा जं दोसर शब्द मे कही तं कहि सकैत छी जे अशोकक कथाक तानी-भरनी सबसं पहिने मिथिलाक जीवनक यथार्थक भूमि कें सांकेतिक रूप मे निर्वाह करैए. हुनका पाछू अपन कथा कहबाक विराट परंपरा तं छन्हिएं, दोसर दिस दोखरल वर्तमान सेहो. नेहरूकालीन स्वप्न पूरा नै भेलाक बाद मोहभंग आ तक बाद विद्रोह, फेर ओहि विद्रोह अवनति आ तकर बीच मे कथा कहबाक हिस्सक-हिम्मति अशोकक कथा कें एक अलग मूड मे ल' जाइए. एक दिस सामाजिक आलोड़न आ दोसर दिस देह-मोनक टूटन परस्पर विपरीत बुझा पड़ैत दू अलग-अलग धाराक विशेषता कें साधब एकटा साहसिक काज छल जे समन्वित रूप सं अशोकक कथा संसार मे देखा पड़ैछ. संभवत: तैं हुनक किछु कथा स्थूल आ किनको ओझरायल बुझा सकैए, मुदा कथाकार अशोक मैथिल समाजक मांसल भूमि कें कतौ-कतौ छोड़ि वाक्य संकेत सं एकरा पूरा करैत छथि, जै सं कथ्य रस्ता नै भटकैए आ यैह कारण छै जे हुनक कथाकार रूप आलोचकीय रूप कें छोड़ि अलग रस्ता चुनैए. किछु कथा मे कलात्मक प्रभाव पर दृष्टि रखैत ओ अपन बात अभिधा मे नै कहि कें एक संकेतक रूप मे कहैत छथि. संभवत: तैं हुनक लेखन ओझरायल प्रतीत होइछ. यथार्थक प्रामाणिकताक संग सांकेतिक प्रभावान्वितिक समन्वयकक सभ प्रयत्न सफल भेल हो से हमर कहब नै ऐ, मुदा कतोक कथा एहन ऐ, जै

मे ऐ विशेषताक निर्वाह सफलतापूर्वक भेल अछि. ओहि रातुक भोर, बौका चुप अछि सन किछु कथाक वातायन सजीव आ सक्रिय चरित्रक रूप मे ट्रेजेडीक निर्माण करैए.

एना भ' क' कियो, गामक कातक हाइवे बदलैत समाजक गह कें पकड़ैत ऐ, तं अभयक बेटा कें दूटा दांत भेलनि, खुशीक नाम जीवन, टीस सन कथा मोन आ परिवारक गहींर इनारक भत्थन देखबैत ऐ. अर्थात मोन, परिवार आ अंतत: समाजक नब्ज कें अशोकक कथा नीक जकां पकड़ैए. समाजक बीमारी कें अशोक कथा पकड़ैत अछिए, कतौ-कतौ निदानक रस्ता सेहो देखबैए. अशोकक कथा कतौ मानव-मनक विकृतिक चित्रण क' ओइ वातावरणक भयावहताक संकेत सेहो दैए, जे ओहि विकृति कें जन्म दैत ऐ. किछु ठाम एक चरित्र अथवा एक वातावरणक चित्रण सं कथाकार सलाह देबाक प्रयत्न करैत छथि. तैं हम एकटा पाठकक रूप मे कहि सकैत छी जे अशोकक रचना संसार एकांगी नै ऐ. ओ एकटा सुन्नर संसार रचबाक तैयारी सेहो करैत देखाइए.

-संपर्क-8825288748

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.लाल देव कामत- कथाकार अशोक मादे

लाल देव कामत

कथाकार अशोक मादे

मैथिली साहित्याकाशमे एकटा पैघ नाम उभैर आयल अछि कथाकार अशोक। नामेगुण अर्थ लागैत य ,जतय नै कोनू तरहक रहैछ शोक। से एकटा बूजूर्ग असाधारण व्यक्तित्वक अशोक कुमार झा,जिनक मधुबनी जिला आ दरिभंगा जिलाक मिलन स्थान प्रसिद्ध लोहना गाममे 18 जनवरी 1953 ई0 मेँ जन्म भेल छन्हि। 50 सँ अधिक कथा लिखनहार मिथिला मेँ अनेको रचनाकार भेल छथि। परँच नाम सँ पहिले कथाकार रूपेँ ख्याति हिनकेटा भेटलनि अछि। मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ जतेक जानल - पहचानल आ मानल कथाकार भेलाह अछि, ताहिमे सबसँ पहिले ओ लोकनि कविता गढलनि ; पछाति कथा दिसन उन्मुख भेल छथि। सयह आरम्भिक लक्षण हिनकोमे देखमे अबैछ। मुर्धन्य विद्वानक जुटान बनारस मेँ होइत रहैक। ओतय मैट्रिकमे पढैत कहियोकल अशोक जी स्रोता रूपेँ कविता सुनल करथि। से मनेमन हिनको किछ-किछ फुराइत रहय आ ई ताहिके शव्द आ वाक्य रुपेँ अपना रफ कागतमे उतारथि। फेयर करैत

चोटीक विद्वान लोकमे अपन रचना देखाकय संशोधन कराबथि। आरम्भे मेँ हुनक रचल साहित्यक पन्ना के अपनेह हाथे फारि देबाक आदेश सेहो होईन,जे कष्टप्रद लागैन। तैयो विद्वतजन के बीच अपन मौलिक कविता ल'के' पाठ करबाक अवसर भेटनि। मुदा नव लोक छलाह,से कविताक काज छोड़ि खिस्सा लिखय ले नेर्देश भेटलनि। भारी मोन सँ लघुकथा - कथा लिखकय देखेबाक अनुभव प्राप्त कयलनि। सन् 1960 सँ 68 धरिमे 10-15 कविता गोष्ठीमे सुना चुकल छलाह,जे धियापुता पत्रिका आ मिथिला मिहिर मेँ करीब दर्जनभरि कथा धीरेन्द्र जीके देखेलाक वाद 1971 दिसम्बर अंकमे छपलनि। 1980 मे हिनक कविता संग्रह चक्रव्यूह आयल।अशोक जीक कविताक बनशव्त कथाके लोक बेशी पसीन करैन। गाम-घरमे लोक अपना नानी - मैयाँ, नाना - बाबा मुँहेँ बालपन सँ मनलगू खिस्सा रातिमे सूते सँ पहिले सुनल करय। ई हिस्सक रहने पत्र - पत्रिका मेँ कथा पढैत पाठक डुमि जाथि। ओना कथा लेखन कार्य यूरोप सँ आयल अछि,जे वर्तमान समस्या कैँ केन्द्रमे राखि लिखल जाइक। कुरीति उन्मूलन - पतन संदर्भमे कथा लिखबाक प्रचलन बढल। करुण कथा सँ हरिमोहन झा व्यंग कथा दिसन आगू बैढ़ नव ढंगक कथा परसबाक परियास पाठक लग आरम्भ कयलनि। से देखा-देखी आधुनिक कथा लेखन क्रम चलैत गेल । तकरवाद छठम दशक सँ समकालीन दौड़ चलल अछि। कथाकार अशोक'क मत छन्हि- " 40 ई० सँ पूर्व करुण भावक रचना होय,1940 - 50 केर बीच खूब झमटगर कथा लिखेबाक मैथिली भाषा मेँ परिपाटी भेलैक।" देश स्वतंत्र भेलासन्ता आमूलचूल परिवर्तन'क नव - नव विषय पर कथाकार लोकनिक डेग उठलनि । बिहार सहकारिता सेवा (1978) मेँ पदाधिकारी रूप सँ काज करैत, आब सेवानिवृत्त भेल छथि अशोकजी। हिनक कथा लेखन क्रम अनबरत चलैत रहलैन,आगुओ चलैत रहत । हिनक प्रथम कथामे शुमार "विराम सँ पहिले" छैक। ओना रचना सक्रियता बढौलनि 'बौका चुप छल' रचिकय। एखनो

मैथिली भाषा मेँ कथा प्राय: जे कोनू रचनाकारक नीक लागैत छैक, तँ ओहिक पाठक तकर रसास्वादन करैत तहतक केर कथ्य पर स्वंय भाव सँ हंसनाई - कननाई वा जोर-जोर सँ हँसब,रोदन करय लागब ; ई तँ अन्त:करण केर असर होईछ। दोसर बात जे कथाक गरहैन जौँ व्यंग परक होईछ तँ पाठक अध्ययन- मनन करैत काल ओहिक आभाक प्रभावमे आबि उद्वेलित होईछ। पाठकक उपर जे मानसपटल कैँ गुदगुदी लगैछ से मुश्की देवा ले रहि-रहिके जोर मारैत छैक। कविता सँ कथा दिश उन्मुख होइत रहल अशोक जीक शूरूआति परिवेश कथा मादे केन्द्रीत रहल । हुनका विषयमे वा कहू जे हुनक कथा विषयमे जौं मनोयोग पूर्वक अध्ययन कय ओहिक वास्तविक अखियास करब ,चाहे पाठक हुनक समवयसक होथि वा जेष्ट-कनिष्ट होथि पढ़ाकू लेल सम नज़र सँ देखैत छथि। पढ़ाकू वा अध्ययनशील लोक कथाकार अशोक कैँ 21म् शताब्दीमे आन लेखकक तुलनामे खूब पढैत छन्हि। ई दीर्घ कथा यात्रा पर छथि। एखन बहुत किछ आरो लिखब शेष हुनक निजी अभिष्ट छन्हि। नवारम्भके प्रकाशक अजीत आजाद अपन मधुबनी डेरापर हमर परिचय कराबैत हुनका कहलकैन - ई लाल देव कामत हमर गामक संगी छथि आ हमर दुश्मन नहिँ छथि। संगहि इहो बतेलकनि कामतजी मैथिली जगतके नव पुरान लेखक पर अध्येता छथि। ओना वरेण्य साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल जीक गाम बेरमा मेँ आयोजित सगर राति दीप जरय 'कथा गोष्ठीक ' अवसर पर सेहो आ कतेको ठाम अशोक जी सँ भेंटघांट भेल अछि। हिनक वकतव्यमे सुनने छी -: बेसीतर ग्रामीण क्षेत्रमे कथा गोष्ठी " सगर राति दीप जरय" कार्यक्रम आयोजन होईछ,जाहि सँ नव कथाकार बनैत अछि।" कथा पाठ कयलाक वाद लेखक कैँ समीक्षक लोकनि ओहि कथा पर सोझा सोझीमे अपन नव विचार प्रवाहित कय कथाक त्रुटि पर धीयान दिअबैत छैक। आब तँ दीवा आ संध्या काल ओहि तिथिमे कथा प्रसंग आन - आन ठाम सेहो बैसारीक आयोजन हुअय लागल हन्। अनियमितकालीन संधान पत्रिका माध्यम आ संरक्षक हैसियत सँ ' उपमान ' त्रिमासिक साहित्यिक पत्रिका सँ

अलख जगेबामे अशोक जी मैथिली भाषा अभियानीक बीच अगुएलाह अछि। तेँ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनीक अशोक जीक खातामे हिन्दी क' समीक्षात्मक आलेखक प्रसंशाक सँग हिनका यशस्वी रचनाकार, कथाकार,कवि, सम्पादक,निवंधकार, व्यंग्यकार आ आलोचक रुपेँ जगजियार भ' लोकक बीच चिन्हाय छथि। हिनक चर्चित पोथी -: मैथिल आँखि (निवंध संग्रह) दाम 69 टाका, कथाक उपन्यास - उपन्यासक कथा (नोवेल) दाम 75 टाका , डैडी गाम (कथा संग्रह) दाम 200 टाका,बात विचार (निवंध संग्रह) दाम 150 टाका , नीक दिनक वाईस्कोप (लघु कथा) व्यंग संग्रह किमत 50 टाका आ आँखिमे बसल (यात्रा कथा) दाम 150 टाका 'क मैथिली मेँ छन्हि। मैथिल बीच दृष्टिसम्पन्न रचनाकार अशोक जीक ओहि रातिक भोर, मातबर कविता संग्रह आ चक्रव्यूह निकलल छन्हि।

अशोक जीक तानपुरा कथाक बानगी ऐ तरहक होई छैक,यथा -: खर्चा आ आमदनी 'क लेखा जोखा संधारण लेल सरकारी कार्यालयक औडिट करय सँ बिनोद बाबू छीहकैत रहैत छै। हुनका बस- ट्रेन मेँ सड़क सँ यात्रा करैत आ आनो जगह तथा घरोमे आराम सरिया केँ नहिँ होई छै। घरक झंझटि तँ आरो जानमारा बुझाइछ।आफिस सँ आडिट काज कय डेरामे अयलापर पैन्ट सर्टक बटन फोलैत काल अव्यवस्थित होई छै। लुंगी बदैलैत घरी टुटल बटन देखि पत्नी रमझौहैर ठाढ क' दई छैक। पति-पत्नी क' बीच वाक्युद्ध सँ थाह चलैत छै जे दाम्पत्य जीवन नोंकझोंक सँ भरल छै। पत्निक लोहछब वाणी जेना बरछी भोकल जाइत होउ। बटनों तँ आखिर पत्नी माया केँ टांकि टँच करय पड़ैत छै। ऐहनसन बिकट स्थिति सँ बढ़ल उलझन फेर सँ मिलानमे परिणत होई छै। एकबेर पुर्णिया सँ आडिटर महोदय घर अबैत छै, तँ रेडियो पर प्रसारित गीत ...बनके चकोड़ी.....बजैत सुनैत य। ई गीत सुनि 15 साल पुरान समयके दृश्य मोन पड़ैत छै। इयह गीत न विनोद

बाबु मायाजी कैँ पहिलखेप गाबि सुनौने छलैक। आ गीतक रस मुरी गोंतिके माथ झूकौने माया गंभीर भ' सुनने रहथिन। 15 वर्षीय बेटा आब सेहो संगीत सीखय चाहैत छैक। बालपनमे अपन बाबूक जूटमिल बाला डेरामे रहथि तँ ओतय अपनों संगीत पढय गुणै चाहने छलैक। परँच अंग्रेजी आओर गणितक' नीक ज्ञान रहने ,राधा कृष्ण मंदिर पर आयल गानबजान मंडलिक गबैया देखि मोनमे आयल रहैन मूलगाईन बनी।मुदा बाबूजी तैयार नहिँ भेल रहैक। हुनका तत्काल जे शिव नचारी सुनि आयल रहथि, से पाँति गबैत ....गौरा तौर अंगना ..अपन मीठ कंठ सँ पिताजी कैँ सुनौने धरि रहय। पिताजी बंगाली टोलक घोषबाबू लग जाकय संगीत साँझखनके दूई घंटा २० टाका महिना दर पर नियमित सिखबाक निश्तुकी बात बताबैछ। परिवारिक आन-आन खरचमे कपैच बीश टाकाक औरियान तँ बड़े कठिनता सँ भ' सकलैक। आब की हो! नव बखेरा समक्ष ठाढ होईछ, सुरसाक मुंह बौने। से घरेलू कोन खर्च तोरल जाए जाहि सँ २०० टाकाक हारमुनियाँ नैका आनल जायत ! एकटा किफायती जुगत धरबैत पुरना मुस कटबा बाजा मेँ मोम सँ भुरकी भरि काज निकालबाक निठाहे योजना बनलैक। डेरा पर आब अभ्यास शुरू करैत सरगम गाबैक लेल सुर सँ लगनपुरवक मेहनैतक आवश्यकता रहैक। से छुटि गेला सँ संभव नहिँ होईछ। आब तँ पिताजी जहाँति आर्थिक अभाव नहिँ छैक। तेँ सेहन्ता सँ अपन दुलारू बेटा गौतम कैँ अवश्ये रियाज कराओत। पत्नी सँग अंग्रेजी सिनेमा देखेबाक एक पृथक आनन्दक अनुभूति होइत छैक। से आई पत्नी सँ विनोद बाबू आग्रह करैत छथि जे चलू भोरका उखराहाक शो मेँ ब्लू फिल्म देख अबैत छी। पत्नी निधोख भ' बजैत छथीन हम अंग्रेजी सिनेमा नहिँ देखय जाएब। ओई राति सौखगर लोक सब हमरा दिश घुईर- घुइर निहारैक। तेँ घरेमे वीसीपी० आनि फिल्म देखेबाक नियार भास होईछ। परंच विचार मेँ पत्निक सम्पुष्टि नहिँ होई छन्हि। कारण एहन फिल्म पारिवारिक वातावरण मे देखब उसके - अनसोहान्त बुझाइछ। अगिला मास सँ पुत्र तानपुरा किनिकय मल्लिकजी सँ अवश्ये सँगीत सिखत। मुदा पैघ हाकिम बनैमे ई संगीत - गीत

सीखनाई बड बाधक भ' सकैछ। ऐ बात पर दूनू प्राणिक बीच विशेष रूपेँ सहज सहमति बनि जाईत छै। साजबाज आ गीतनादक फेरमे पड़ि बेटा बंगट बनै सँ थम्हैत य। मैथिली साहित्य आन्दोलन मेँ एक समय एहनो आओत जाहिमे कथाकार अशोक केर वादक कथा आ अशोक सँ पूर्वक कथा बीच अशोक युगक कथा विधा पर सम्यक विमर्श होएत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.हितनाथ झा- कथाकार अशोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक बायस्कोप

हितनाथ झा

कथाकार अशोकक व्यंग्य संग्रह: नीक दिनक बायस्कोप

व्यंग्य लिखब असान गप नहिँ छै। तै पर ठाहि-पठाहि । महाग मुश्किल । ई बात श्री अशोकजी स्वयं कहैत छथि मुदा सेहो काज अखबार हिन्दुस्तान ,हिनकासँ करबाइए लेलकनि ।भलें ई अपनाकेँ कथाकार मानथु (मानिते छथि ,तैं ने फेसबुकपर अपन नामक पहिने कथाकार लिखने छथि) नीके केने छथि ,हिनकर नामधारी अनेको फेसबुकपर छिड़िआयल छथि ,तै मे ,हिनका बिकछायब कठिन काज भय सकैत छलैक् सामान्य पाठककेँ , से काज ई स्वयं कय देने छथि ।

ई स्वयं नहिँ ,मैथिली साहित्य संसार हिनका मैथिलीक विशिष्ट कथाकार मानि चुकल छनि । मुदा इहो बात सत्य जे हिनकर अध्ययनशीलता , हिनकर बजबाक शैली ,हिनकर बॉडी लैंग्वेज ,हिनकर सोचक विस्तार,हिनकर लिखबाक कला आ मैथिलीक हेतु सदिखन चिन्ता रखबाक कारणे हिनका कथा लिखबामे स्थिर नहिँ रहय देलकनि । मैथिलीकेँ जेतय जेहन जेना जरूरत पड़लैक ,हिनकर उपयोग कयलकनि । साहित्यिक मंच हो ,संयोजनक आ उद्घोषकक प्रयोजन पड़तैक ,तँ श्री अशोक सामने ठाढ़ । कथा तँ

सहजहिं ,कोनो पत्रिकाक लेल कोनो समीक्षाक विशेषक प्रयोजन पड़तैक ,तँ श्री अशोक । कविताक पोथीसँ अपन यात्रा प्रारंभ केनिहारि श्री अशोक एक विधा डेबने नहिँ रहि सकलाह ,जतय जेना जाहि तरहक प्रयोजन पड़लैक ,लिखैत चल गेलाह आ बजैत चल आबि रहल छथि ,तैं ने विविध विधामे हिनक अनेक पुस्तक प्रकाशित छनि ।

हिनकर व्यंग्य साहित्यपर चर्चा करबासँ पहिने ,हिनकहिं मुँहे सुनल गप्प कहय चाहैत छी ,जे ओ कमजोड़ी हमरोपर लागू अछि । जखन हमर यात्रा संस्मरण निकलल ,तँ एक पाठक (नाम स्मरण नहिँ अछि ,अछियो तँ एतय नहिँ कहब) पढलनि आ जखन ओ रूस गेलाह तँ हुनको यात्रा संस्मरण लिखबाक मन भेलनि ,ई बुझि जे लिखब बहुत आसान काज छैक , जे देखलियै ,सुनलियै , गुनलयै ओकरा लिखब कोन भारी बात ! मुदा ओ एक पेजसँ बेसी नहिँ बढ़ा सकलाह ,लिखल नहिँ भेलनि ।

सत्ते लिखब बहुत दुरूह काज छैक ,खास क' साहित्य । ओ सभ बूते नहिँ भय सकैत छैक ,ओना आइ काल्हिपर ई लागू नहिँ अछि ,ने फेसबुकपर ,ने पत्र-पत्रिकामे आ ने सुन्दर ,सुव्यस्थित मोट गेटअप-सेटअपमे प्रकाशित किताबपर ।जेना मोन भेल लिखि देलहुँ ,जकरासँ मोन भेल प्रसंशा करबा लेलहुँ आ समयानुकूल जोगाड़मे लागि गेलहुँ । साहित्यकार भेनाइ बहुत विरल आ कठिन काज छैक , जकरामे ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा रहैत छैक ,निरन्तर साधनारत रहैत छथि ,वैह साहित्यकारक रूपमे चिन्हल ,जानल आ मानल जाइत रहताह । बाँकी वर्तमानमे जे लूटि लेथु , वर्तमाने टामे रहताह । आगू क्यो नामो लेनिहार नहिँ !

श्री अशोकजी ओहि विरल साहित्यकारमे छथि ,जनिक मैथिलीकेँ खगता छैक । कथासँ समीक्षा दिस झुकाब , ई तँ अधिकांश लोक हिनकर विषयमे बुझैत छनि ,मुदा ई व्यंग्यो लिखलाह , ई बात हमरा जनैत कम लोक बुझैत हेतनि ।

जेना ऊपरमे कहलहुँ ,सेहो काज हिनकासँ 2014सँ 2016क बीचमे पटनाक दैनिक हिन्दुस्तान लिखबा लेलकनि । दू सालमे 31 टा लिखलनि आ ओ स्तम्भ बन्द भय गेलैक तँ हिनको व्यंग्य लिखब बन्द भय गेलनि ,ई एहिसँ बुझा पड़ैत अछि जे ओकर दू सालक बाद पुस्तक प्रकाशित भेलनि ,ओहिमे ओएह 31टा । एको टा बेसी नहिँ । तैं जे लिखलनि से मजबूरीवश लिखने हेताह ,मुदा लिखलनि तँ ओ सर्वत्र प्रसंशित भेलनि ,चर्चित भेलनि । हिन्दीक अखबारमे मैथिलीक स्तम्भ छपब ,ओहो हिन्दुस्तान सन प्रसिद्ध अखबारमे , जकर एक अलग आ सजग पाठक रहैत छैक , निश्चिते प्रत्येक मैथिली जननिहार पढ़ेत छल होयताह आ तै श्री अशोकजी नीके केलनि ,एकर पुस्तकाकार प्रकाशित कय ,स्थायी महत्वक बना लेलनि ,। फेर कोनो अखबार पकड़तनि ,तखने हिनकर कलम एहि विधा लेल ससरतनि । श्री अशोकजी स्वयं स्वीकारैत छथि -

अखबारक कारणे चर्चित भेलहुँ । जे सभ हमर कोनो पोथी नहिँ पढ़ने रहथि सेहो एकरा पढलनि ।कतेक लोक फोन क' कए प्रसंशो कहियो क' करथि ।सेवा जीवनक त' कतेको सहकर्मी हमर लेखनसँ एही माध्यमे परिचित भेलाह ।*

आब एहि पुस्तकक विषयमे । एखन बाढ़िक समयअछि , मिथिलाक बहुल क्षेत्र बाढ़िमे डूबल अछि । हिनकर एक व्यंग्य छनि "निचू चाड़ तर सोहाय मलार * । कतेक सटीक व्यंग्य छनि - जखने कारी-कारी मेघ लगैए तखने कोढ़ कॉपय लगैए । अंतमे कहैत छथि - एहन घर हो जाहिमे चुआठ नहिँ हो । निचू घर रहत तखन ने सोहायत मलार। स्मार्ट सिटीसँ लय नेपाल सरकार सँ वार्तापर तक नीक व्यंग्य छनि ।

*धूर्त समागम *मे कहैत छथि । नाटक देखि चकबिदोर लागि गेल । चकविदोर एहि दुआरे जे एक्केइसम शताब्दीक गप चौदहमे देखाओल गेल

छल । सात सौ वर्षहुमे लोकमे कोनो बदलाव नहिँ । बढियाँ तुलनात्मक व्यंग्य कयने छथि ।

चुनावक फगुआ पहिल व्यंग्य छनि । बढियाँ जकाँ पार्टी सभकेँ क्लास लेलानि अछि ।

22 मई 2014 क लिखल व्यंग्य *नीक दिनक बाइस्कोप* जाहि नामपर किताबोक नामकरण पडल अछि ,पाँच सालक बाद पढि रहल छी , नीक "बाइस्कोप" देखेने छलाह ।

एहिना एकसँ एक व्यंग्य छनि , किछु व्यंग्य तँ बहुत नीक सुतरलनि अछि ,ओना सभ रचना अपन नाम(शीर्षक)क सार्थकता देखबैत अछि । पुरनो लिखल व्यंग्य एखन टटका लगैत अछि । आ आगुओ पढ़ब तँ लागत एखनुक तँ बात थिक । यैह एहि पुस्तकक सार्थकता अछि ।

शेखर प्रकाशन,पटनासँ प्रकाशित ई पोथी मात्र ₹50/-मे उपलब्ध अछि ।तैं हम आब हिनकर अन्य रचनापर नहिँ कहब । स्वयं पढ़ी आ अपने निर्णय करी । हमरा विश्वास अछि ,हमरासँ अपने पूर्ण सहमत होयब ।

हँ ! श्री अशोकजीक कोनो विधा साहित्यक अमूल्य निधि भय मैथिली साहित्यमे सभ दिन पढ़ल जयताह आ से एक मानदंड साबितक संग ।

-संपर्क-09430743070

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.शिवशंकर श्रीनिवास- अशोकक कथा

शिवशंकर श्रीनिवास

अशोकक कथा

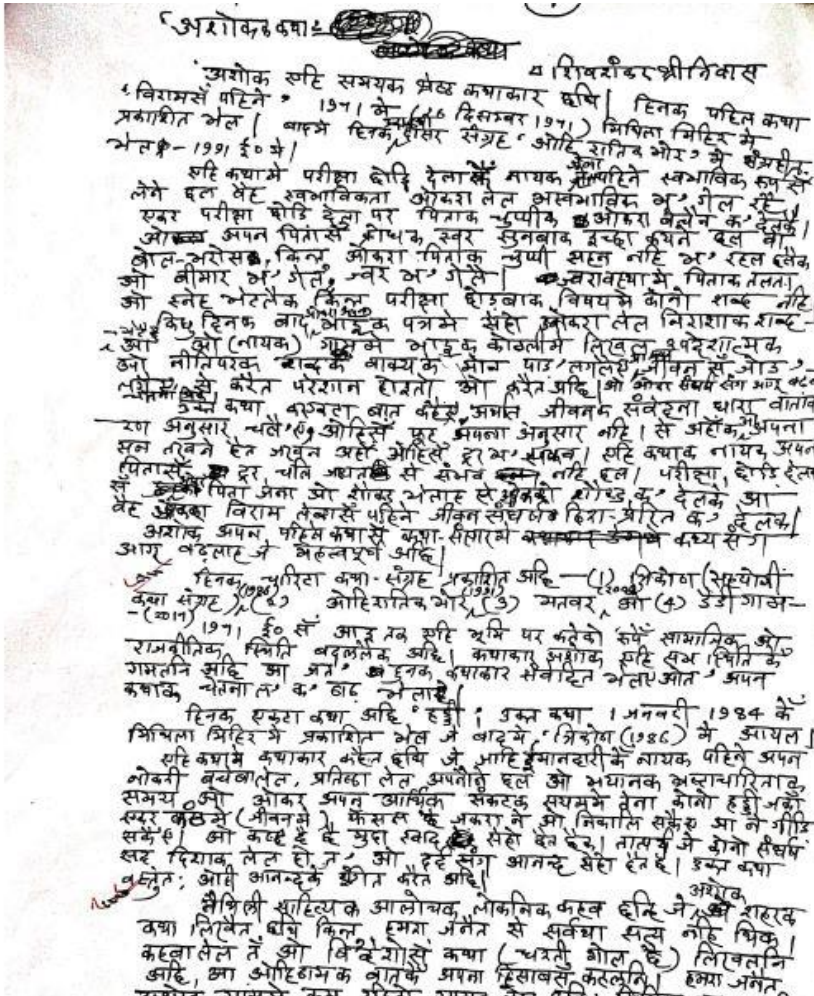

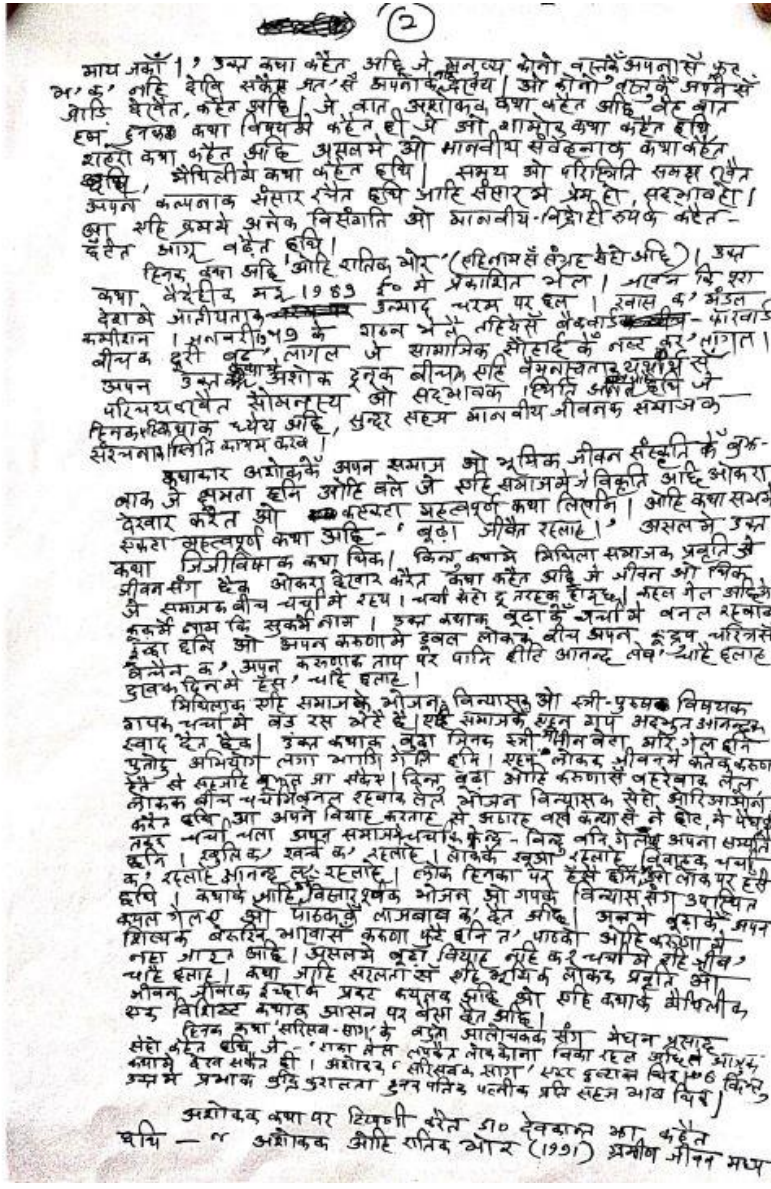

(2)

माय जकाँ।' उक्त कथा कहैत अछि जे मनुष्य कोनो वस्तुकेँ अपनासँ फूट भ' क' नहि देखि सकैत अछि, मन'सँ अपनाकेँ ओकरासँ जोड़ि दैत, कहैत अछि। जे बात अशोकक कथा कहैत अछि, वैह बात हम इनकर कथा विषयमे कहैत छी जे ओ ग्रामीण कथा कहैत छथि, शहरी कथा कहैत अछि, असलमे ओ मानवीय संवेदनाक कथा कहैत छथि, मैथिलीमे कथा कहैत छथि। समय ओ परिस्थिति समझ रखैत अपन कल्पनाक संसार रचैत छथि आहि संसारमे प्रेम हो, सद्भाव हो। आ एहि क्रममे अनेक विसंगति ओ मानवीय-विद्रोही रूपके कहैत-दैत आगू बढ़ैत छथि।

हिनक कथा अछि 'ओहि रातिक भोर' (एहि नामसँ संग्रह सेहो अछि)। उक्त कथा वैदेही मइ 1989 ई० मे प्रकाशित भेल। अखन कि एहा देशमे जातीयताक उन्माद चरम पर छल। रवास क' मंडल कमीशन। जनवरी 1979 के गठन भेलै तहियेसँ बैकवार्ड - फॉरवार्ड बीचक दूरी बढ़' लागल जे सामाजिक सौहार्दकेँ नष्ट कर' लागल। अपन उक्त कथामे अशोक इनक बीचमे एहि वैमनस्यताक यथार्थसँ परिचय करबैत सौमनस्य ओ सद्भावक स्थिति अनैत छथि जे हिनक कथाक ध्येय अछि, सुन्दर सहज मानवीय जीवनक समाजक संरचनात्मक स्थिति कायम करब।

कथाकार अशोककेँ अपन समाज ओ भूमिक जीवन संस्कृतिकेँ कुछ बात जे क्षमता छनि ओहि बले जे एहि समाजमे जे विकृति अछि ओकरा देखार करैत ओ कहुना महत्वपूर्ण कथा लिखलनि। ओहि कथा समूहमे एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि - 'बूढ़ा जीबैत रहलाह।' असलमे उक्त कथा जिजीविषाक कथा थिक। किन्तु कथामे मिथिला समाजक प्रवृत्ति जे जीवन संग छैक ओकरा देखार करैत कथा कहैत अछि जे जीवन ओ थिक जे समाजक बीच चर्चामे रहय। चर्चा सेहो दू तरहक होइत छैक। कहल गेल अछि जे कुकर्मे नाम कि सुकर्मे नाम। उक्त कथाक बूढ़ाकेँ चर्चामे बनल रहबाक इच्छा छनि ओ अपन करुणामे डूबल लोकक बीच अपन रूप चरित्रसँ बेलैन क' अपन करुणाक ताप पर पानि छींटि आनन्द लेब' चाहै छलाह। दुखक दिनमे हँस' चाहै छलाह।

मिथिलाक एहि समाजके भोजन-विन्यास ओ स्त्री-पुरुष विषयक गपक चर्चामे बड़ रस भेटै छै। एहि समाजके एहन गप अद्भुत आनन्दक स्वाद दैत छैक। उक्त कथाक बूढ़ा मिनक स्त्री मरलनि बेरा, मरि गेल छनि पुतोहु अभियोग लगा भागि गेलि छनि। एहन लोकक जीवनमे कतेक करुणा हैत से सहजहि बुझल जा सकैछ। किन्तु बूढ़ा ओहि करुणासँ बहरेबाक लेल लोकक बीच चर्चामे बनल रहबाक लेल भोजन विन्यासक सेहो आरिआओन करैत छथि आ अपने बियाह करताह से अठारह वर्ख कन्यासँ ने होइ, से पेघक तहर चर्चा चला अपन समाजमे चर्चाक केन्द्र-बिन्दु बनि गेलाह अपना सम्पति छनि। खुलि क' खर्च क' रहलाह। लोकके खुआ रहलाह विवाहक चर्चा क' रहलाह आनन्द लए रहलाह। लोक हिनका पर हँसै छनि, ओ लोक पर हँसै छथि। कथाके ओहि विस्तारपूर्वक भोजन ओ गपके विन्यास संग उपस्थित कएल गेलए ओ पाठककेँ लाजवाब क' दैत अछि। अन्तमे बूढ़ाकेँ अपन शिल्पक बेरुखि भावासँ करुणा फुटै छनि त' पाठको ओहि करुणामे नहा जाइत अछि। असलमे बूढ़ा बियाह नहि कर' चर्चामे रहि जीब' चाहै छलाह। कथा अहि सरलतासँ एहि भूमिक लोकक प्रवृत्ति ओ जीवन जीबाक इच्छाक प्रदर्श कयलक अछि ओ एहि कथाके मैथिलीक एक विशिष्ट कथाक आसन पर बैसा दैत अछि।

हिनक कथा 'सरिसब-साग' के बड़ा आलोचकक संग मेघन प्रसाद सेहो कहैत छथि जे - 'एका मेल लपकैत लोक कोना बिका रहल अछि से आधुनिक कथामे देख सकैत छी। अशोकक 'सरिसवक साग' एहन कथाक चित्र 1986 थिक, जाहिमे प्रभाव वृद्धि कुशलता इनक पतिक पत्नीक प्रति सहज भाव थिक।

अशोकक कथा पर टिप्पणी करैत डा० देवकान्त झा कहैत छथि — "अशोकक ओहि रातिक भोर (1991) ग्रामीण जीवन मध्य

(3)

सामाजिक जागरता पर आधारित पत्रहटगोट कथाक स्वतंत्र शृंखला थिक जे समाजके सामंजस्य भावना पर बल दैत छैक। 'मिरजा साहेब' साम्प्रदायिक समस्या पर केन्द्रित एक मार्मिक कथा अछि। 'तेसर प्रश्न' नामक ओकर नामसम्भी क व्यवस्था पर प्रहार करैत अछि जतय नायक गलत ढंगसँ अहल पद देल जाइत छथि, 'उरेन्दु' भयत मानासिकता पर आधारित एक सुन्दर कथा थिक। सरिसबद साग उपभोक्तावादी सांस्कृतिक प्रभाव पर एक प्रभुत्व कथा थिक। ई अशोक कथा कहैत अछि जे मनुष्यके अपन मौलिकता नहि छोड़क चाही, से छोड़बो ओतेक कठिनो छैक कारण कोनो ने कोनो रूपमे ओकर मौलिकता अवश्य प्रकट भ' जाइत छैक। यदि कोनो कारणवश केओ बनावटी चालि धरैत अछि तँ ओकर क्षमता जे मूल रूपमे ओकर नहि, रहि पबैत व्यक्तित्वक विशेषता छैक, ओ ओकरा दबेने ओछैन नहि, रहि पबैत अछि। तेँ जाहि स्थितिमे जे केओ अछि ओकरा ओही स्थितिसँ जीवनक पथ पर विकास करक चाही। इद्धस्थिति कखनो ककरो विकासक स्थिति पर नहि पहुँचा सकैछ। दिनक कथा 'सीवन रजकक हित निर्णक' एही स्थितिक कथा थिक। सीवन रजक बैंकमे चपरासीसँ कैशियर भ' जाइत अछि। ओकरा बैंक-सेवाक सहज प्रक्रिया तहत पदोन्नति होइत छैक, किन्तु ओकरा भ्रम होइत छैक जे ओकर पदोन्नति अपन ऊँच अधिकारीक कृपासँ भेलैक। ओ भ्रम ओकर सहजता पर प्रहार करैत ओकर मानसिकता सहज भ' जाइत छैक जे ओहि ऊँच अधिकारी सन अपन व्यक्तित्व बनब' चाहैत। ई बातक कारणे ओ ऊँच अधिकारीक अभिजात्य गंभीरता ओढ़ि लैत अछि। फलतः ओकर जीवनक उन्मुक्तता सुसुप्त भ' जाइत छैक। जाहि कारणेँ ओ ओकर जीवनक सरलता, सहजता नष्ट भ' जाइत छैक किन्तु अन्तमे ओकरा अपन जीवनक मर्म सहजतामे छैक से बोध होइत छैक।

दिनक कथा 'प्रतिलोम'मे मिथिलाक ओहि वर्गक भोज-संस्कृति पर, कथाकार दलित चेतनाक व्यंग्यात्मक प्रहार करैत छथि। जे चेतना सामाजिक न्यायसँ आगू सामाजिक समरसतासँ उपजल सांस्कृतिक चेतनाक रूप थिक।

अशोकक प्रसिद्ध कथा अछि—'दल'।

राज सत्ताक लोभमे एहि देशक विभिन्न राजनीतिक दल द्वारा जाहि प्रकारेँ धार्मिक उन्मादकेँ प्रज्वलित करबाक चेष्टा भ' रहल अछि ओ जनताक समक्ष अछि। हिन्दूकेँ उत्तेजित कयल जा रहल छ, मुसलमानकेँ उत्तेजित कयल जाय रहल छ। एही अनुसार ध्रुवीकरण करबाक प्रयास सेहो भ' रहल अछि। सभ राजनीतिक दल अपन-अपन वोट-बैंक बनेबामे लागल अछि। जाहिसँ एहि देशकेँ, एहि समाजकेँ भारी नोकसान भ' रहलैए।

एहि ठाम प्रश्न उठैत अछि जे राजनीतिक दल एहन षड़यंत्रक नाटक करैत दोसरकेँ अपना पक्षमे ठाढ़ करैत वा उग्र बनेबाक हेतु स्वयं किएक उग्र भ' जाइत छथि? एहि प्रश्नक उत्तर अछि जे लोक ओकर नाटकके नाटक नहि बुझय। यैह डर छै उक्त कथाक मुख्य पात्र भोली ठाकुरकेँ। लोक ई नहि बुझै जे ओ 'दल' क' क' मुसलमान बनल अछि, कारण ओकरा ओहि सभामे मुसलमान डेलिगेट बनबाक मजबूरी छलैक। ओ मुसलमानक पाट बढ़ ओहि नाटकमे खेला रहल छल। ओकरा भीतरमे जे डर छलैक ओ ई जे ओकर 'दल' देखार ने भ' जाइ, ओ ओकरा असहज बना देने छलैक तेँ मुसलमान पर टिप्पणी सुनैत-सुनैत ओ असहज भ' गेल। ओ मुसलमानक नाटक करैत-करैत जेना ठीके मुसलमान भ' जाइए आ ओ बेचैन भ' मुसलमान पक्षमे उग्र भ' जाइत अछि।

(4)

सम्प्रदायिक उग्रताक यथार्थकेँ कथाकार समक्ष अनैत · समाजकेँ साकाञ्न करैत छथि, जे कथाकेँ महत्वपूर्ण बना दैत अछि।

हिनक कथा अछि 'लाश'। लाश वस्तुतः लाश थिक। कथामे कथा-नायक एकटा 'कुरता' लैत छथि, वैह कुरता एकटा लाश थिक असलमे कथा प्रेममे ओहि कुरता लाले रस भरैत छथि। ओ (कथाकार) एहि कथा माध्यमे बहुत सहजतासँ प्रेमकेँ अगेवाक लेल नव-नव उपक्रमकेँ आवश्यक मानैत छथि।

अशोकक कोनो कथा एतेक सहज रहैत अछि जे लागत जे ओ की कहि रहला है? किन्तु कथाक समाप्तिक बाद जेना अन्हार घरमे भकक दऽ इजोत भऽ जाय तहिना हिनक कथा जीवन सहज व्याख्याक बोध दऽ जायत। असलमे कथाकारक जीवन आहि सादगी ओ मानव-मूल्यक रक्षा करैत रहल, ओ सादगी हिनक कथाक विशेषता बनि कऽ सेहो समक्ष अबैत अछि। जे हिनक कथाकेँ ~~ओ जीवनकेँ~~ महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

प्रसिद्ध आलोचक प्रो० ललितेश मिश्र, हिनक कथाक महत्वकेँ लिखैत कहैत छथि— "इनक (अशोक) सभ कथाक स्वरूप ओहिन अछि जेना चेखव कथाकेँ परिभाषित करैत कहल अछि— 'ए स्लाइस ऑफ लाइफ' अर्थात जीवनक कोनहुँ क्षण विशेषक कथा। इनक कोनहु कथा रचना, यथा हड्डी हेयरपिन मातबर राग-विराग तानपूरा, शंड, हरिसिंह देवी, लाश, स्वाधीन डेमोक्रेसी, 'ओ दूर साइकिल 'सिवैत' अदि, एना भऽ कऽ 'किये जीवन सम्पूर्णतामे नहि जीबैत अछि, जीवनक उत्थान-अवसानक वर्णन अभिष्ट नहि रहैछ, अपितु क्षण विशेषमे रहैत जीबैत चरित्र सभक मानसिक वैचित्र्य जे मनोवैज्ञानिक यथार्थसँ ओतप्रोत रहैछ राग-विराग, दुविधा-सुविधासँ परिचालित होइछ, उद्घाटित होइछ। सहज चित्रणमे रचना कौशलमे यथार्थ प्रगतिशील भावनाक यथेष्ट संचरण विदित होयत, जेना शंड कथामे, तहिना प्रच्छन्न व्यंग्यक दर्शन होयत जेना मातबर हरिसिंह देवी कथामे।"

आइ उदारीकरण आ बाजारवादी हमसभ प्रहार सबसँ बेसी मनुष्य संवेदना सकुचि रहलैक अछि। कुटुम्बक आगू सभ किछु निरर्थक बुझाइ छै। कर्तव्य ओ सम्बन्धक सीमा छोट भऽ रहलैए। जीवन-चर्या बदलि रहलैए। एकरे कथा कहैत अछि हिनक 'मनसुखा', किन्तु हिनक कथा कहैत अछि माय (स्त्री) एखनो एहि स्थितिकेँ ठीक कऽ सकैत अछि। उक्त कथामे रणजीतकेँ माय कहैत छथि— "घरकेँ अहीं देवाल बुझैं छियै की?" एहन कहेको प्रश्न करैत छथि मुदा उत्तर रणजीत जेना पिताकेँ दै छथिन तेना मायकेँ नहि दऽ पबै छथि। कथाकारक उक्त कथाक कहैत अछि जे मनुष्यक जीवन अहि बल पर घरसँ संसार बसौलक वैह नष्ट भऽ रहलैए। ~~एहि कथाक भाव हमरा अबैत~~ एहि कथामे मात्र ओहि बल (स्त्रीक) केँ अगबैत अछि। कहल जाइत छैक स्त्रीये पत्नीक रूपमे घर बसौलक वैह बात ई कथा अपन प्रसंगसँ कहैत अछि जे ओ एखनो घरकेँ दूबऽ सँ बचा सकैए। कारण माय वा पत्नी कोनो रूपमे स्त्री, बेटीक लेल आ बेटियोक लेल आ पतियोक लगीच होइत अछि।

ऐतिहासिक कालमे मनुष्य भोजन लेल जंगले-जंगले

(5)

बौआइत छल। आइ कोनो रूपमे भोजन वा अर्थक चमक लोकके शहरे-शहर, देश-विदेश बौआय रहलैए। मात्रिक निजताके लोक बिसरि रहलैए। घर-परिवार ओ समाज सभ छिड़िया रहलैकए, आ सभ मानवीय मुद्दाके क्षति पहुँचा रहलैए। एहि पर सोचक छैक। ओहि सोचके स्त्रीये बढ़ा सकैए। मानवीय संवेदनाके ओहि सकैए। हमरा जनैत उक्त कथा ओहि बातके प्रेरित करैत अछि।

एहि पीढ़ीक कथाक विषय पर ध्यान देब तँ ओहिमे कोनो जमीन पर अधिकार लैल संघर्ष नहि भेटत वा कोनो श्रमिक आ मालिक बीच कोनो झमेला नहि भेटत से एहि कारणे नहि जे आइ समाजमे एहि तरहक बात नहि अछि, किन्तु समाजमे दोसर तरह संघर्ष बढ़ि गेल अछि जे मानवीय स्वरूप पर प्रहार क' रहल ए। आइ जातीय संघर्ष धार्मिक उत्पीड़न बढ़ल अछि। भूमंडलीकरण ओ बाजारवादक वातावरण मानवीय स्वभावके आत्मकेन्द्रित क' रहल अछि, एहि स्थितिके परखैत मैथिली कथा समाजके सचेत करैत लिखा रहल अछि।

अशोकक कथा 'स्वाधीन' मे स्त्री अपन अनिच्छाक विरुद्ध पतिक बलात्कारसँ अपन गर्भमे पलैत बच्चाक माय नहि बन' चाहैत छथि आ अन्तत: ओ नहिये बनैत छथि। उक्त कथामे नारी प्रबल स्वाधीनताक बोध आयल'ए जे परम्परासँ एकदम उलट अछि किन्तु ओहिमे स्त्रीक ~~स्वभाव~~ स्वाभिमानक प्रबल वैचारिकता अछि जे कथाके महत्वपूर्ण बनबैत अछि।

हिनक प्रसिद्ध कथा 'डैडीगाम' कहैत अछि जे आजुक समयमे जेना कोनो भौतिक संस्कृति पर प्रहार भ' रहलैए ओही वेगमे अपन परिचय, अपन संस्कृति बचेबाक भाव सेहो कोनो भू-खण्ड पर बढ़ि रहलैए। उक्त कथामे ई बात आयल'ए जे जेना गाम सँ पलायन भ' रहलैए ओही हिसाबे लोक अपन गामक कुलाति सेहो चाहि रहल अछि। गामक लोक आब गाममे कोनो मंदिर निर्माणसँ बेसी अस्पताल खोलब पर प्रफुल्लित भ' रहल'ए जे आवश्यको अछि, उक्त कथा एहि बातके बहुत गहींर तक ल' जा ~~गामके लोकके~~ गामक लोकके ओकर प्राकृतिक सोच दैत अछि।

एहि रूपेँ हम देखैत छी जे अशोकक कथाक दृष्टि नव-निर्माणक अछि, जे एहि भूमि गाड़िसँ फूटि समस्त हाइत कथाक विकासके नव मोड़ देलक अछि।

□

२.१२.जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

अशोकजीक कथामे कथापर विमर्श

अशोकजीक कथामे मैथिली कथापर विमर्श आकर्षित करैत अछि ।

मैथिली कथाक अतीत, वर्त्तमान आ भविष्यपर विमर्श अशोकजीक 'छुट्टीक एक दिन' सँ पहिने कोनो कथामे हम नहि पढने छी । वर्तमान स्थिति ई अछि जे बहुत घरमे गप-सपमे मैथिलीक प्रयोग कम भ' गेल अछि । माइयो अपन धिया-पूतासँ मैथिलीमे गप नहि करै छथि, पढ़ाइ-लिखाइ, नोकरी-चाकरी,बजार-हाट,टी.भी.-सिनेमा सभ ठाम हिन्दी-अंग्रेजी पसरल अछि । जीवनमे मैथिलीक लेल स्थान बहुत कम भ' गेल अछि, जकर परिणाम अछि जे मैथिलीक प्रति अपनत्व आ ममत्व कमल जा रहल अछि ।

बहुत मैथिल एहेन छथि जे मैथिली बाजि त लै छथि मुदा पढ़ल-लिखल नहि होइत छनि । जखन मैथिली पढले ने होइ छनि तखन मैथिली कथा-कविता कोना पढ़ता ? पोथी पत्रिका कोना बिकेतै ? प्रकाशन व्यवसायक लेल व्यवसायी बुद्धि वला पूजीपति आगाँ कोना एताह ? मैथिलीक बजार नहि रहतै त साहित्यकार मैथिलीमे किए लिखताह ?

बहुत साहित्यकार जे मैथिलीमे सोचैत छथि ,अपन भाषामे अपनाकें बेसी नीक जकाँ अभिव्यक्त क' सकैत छथि,से मैथिलीमे लिखैत छथि, तें एखन पोथी त छपि रहल अछि ।

अतीत ई कहैत अछि जे हरिमोहन झाक साहित्य पढबाक लेल बहुत गोटे मैथिली सिखलनि । वर्तमानमे सेहो हरिमोहन बाबू आ यात्रीजीक साहित्य खूब पढल जा रहल अछि आ हिनकासभक पोथी सभसँ बेसी बिकाइयो रहल अछि । तखन स्थिति चिंताजनक किए लागि रहल अछि ? की मैथिलीमे पढबा जोगर साहित्य नहि रचल जा रहल अछि ? की मैथिलीक साहित्यकार खाली एक-दोसरक खिधांसमे लागल रहैत छथि ?

हरिमोहन बाबूक साहित्यक जे सामाजिक सौन्दर्य छनि से आइयो हुनका प्रासंगिक बनौने छनि ।

की आजुक रचनामे सामाजिक सौन्दर्यक अभाव अछि ? की साहित्यमे कलात्मकताक संग सामाजिक चिन्ताक अभाव रहैत अछि ? की सामाजिक सरोकारक व्यापकताक उपेक्षा होइत अछि ? की रचनाकारक जुड़ाओ आ लगाओ समाजसँ कम भ' गेल छनि ? की मैथिल समाज आगू भ' गेल अछि आ साहित्य पाछू चलि रहल अछि ?

युवा वर्गक सोच बदलि रहल अछि ।

हरिमोहन बाबू अपन कन्यादान उपन्यासमे ई कामना व्यक्त केने छलाह जे शारीरिक ओ मानसिक स्तर पर समान स्थितिक युवक-युवती यदि स्वेच्छापूर्वक विवाह करैत छथि त यैह आदर्श विवाह थिक, एहिसँ समाज बदलत ।

से भ' रहल अछि । प्रेम-विवाह भ' रहल अछि, जाति आ धर्मक बन्धन टूटि रहल अछि । समाज बदलि रहल अछि, नव समाज बनि रहल अछि, मुदा साहित्यमे जेना अभिव्यक्त हेबाक चाही से नहि भ' रहल अछि । प्रश्न इहो उठैत अछि जे हमर समाज धन अथवा जातिक हानिके सहर्ष स्वीकार क' रहल अछि अथवा अभिभावकक असह्यतिक कारण युवक-युवतीकें कोर्टक शरणमे जाय पड़ैत छनि ।

प्रश्न अछि जे नव समाजक हलचल मैथिली साहित्यमे किए नहि देखाइ द' रहल अछि ? परिवर्तनक आकांक्षी युवा पीढ़ीक लेल की साहित्यक अभाव भ' गेल अछि ? की मैथिलीमे प्रेम प्रगट करबाक लेल 'आइ लव यू' सन शब्दक अभाव अछि ? यैह सब किछु प्रश्न अछि जाहिपर विमर्श अछि एहि कथामे ।

विमर्शमे चारि गोटे भाग लैत छथि अभिनव,अंकिता,नीलम आ स्वयं कथाकार ।

अभिनव एम बी ए क' क' नोकिया मोबाइल कम्पनीमे काज करैत छथि, अंकिता अंग्रेजी साहित्यसँ एम. ए. कय पी.एच.डी. क'रहल छथि,नीलम डी.ए.बी.मे विज्ञानक शिक्षक छथि ।

अभिनव आ अंकिता अंतरजातीय प्रेम विवाह केने छथि । अंकिताकें साहित्यमे रूचि छनि, कथा, कविता सभ पढैत छथि, अनुवादक माध्यमसँ सभ भाषाक कविता,कथा पढैत रहैत छथि, मैथिलीसँ लगाओ छनि, मैथिली साहित्य बेसी नहि पढने छथि मुदा, पढबाक इच्छा रहैत छनि । बजारमे ओल किनबाक लेल अभिनव आ अंकिताक बीच मतान्तरक बात कथाकें सरस बनबैत अछि ।

अभिनव आ अंकितासँ इहो पता चलैत अछि जे समाज एखन एहि परिवर्तनके सहज स्वीकृति देबामे सक्षम नहि भेल अछि, एकटा पक्ष एकरा धनक हानि बुझैत अछि आ दोसर जातिक हानि ।

हिनका दुनू गोटेकें सेहो कोर्टक शरणमे जाय पड़लनि । साहित्यमे एहि तरहक सोचपर कम रचना एबाक ईहो एकटा कारण भ' सकैत अछि ।

हिनका लोकनिक माध्यमसँ मैथिली साहित्यक प्रति शिक्षित युवा वर्ग,अन्य प्रौढ़ शिक्षित वर्ग आ मैथिली लेखकक दृष्टिकोण बुझबाक आ समस्याक समाधानक लेल सार्थक चिन्तन भेल अछि एहि कथामे ।

वस्तुतः मातृभाषाक अस्तित्वपर जे संकट आएल अछि ताहिपर सेहो संवाद चलैत अछि कथामे ।

ई कहब पूर्णतः सत्य नहि अछि जे नव समाजक हलचल वर्त्तमान मैथिली साहित्यमे नहि आएल अछि अथवा मैथिलीमे प्रेमकथाक अभाव अछि, तथापि जतेक अछि ततेकसँ संतुष्ट होयब उचित नहि अछि ।

प्राथमिक कक्षामे मातृभाषाक माध्यमसँ पढाइ नहि हेबाक विषय पर ई कथा मौन अछि, तथापि मैथिलीक संकटक समाधानक दिशामे एकटा स्वस्थ

चिन्तन लेल प्रेरित करैत अछि अशोकजीक चर्चित कथासंग्रह 'डैडीगाम'क कथा 'छुट्टीक एक दिन' ।

-संपर्क-8789616115

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.नारायणजी- मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य

नारायणजी

मूल्यांकन- अशोकजीक लेखन वैशिष्ट्य

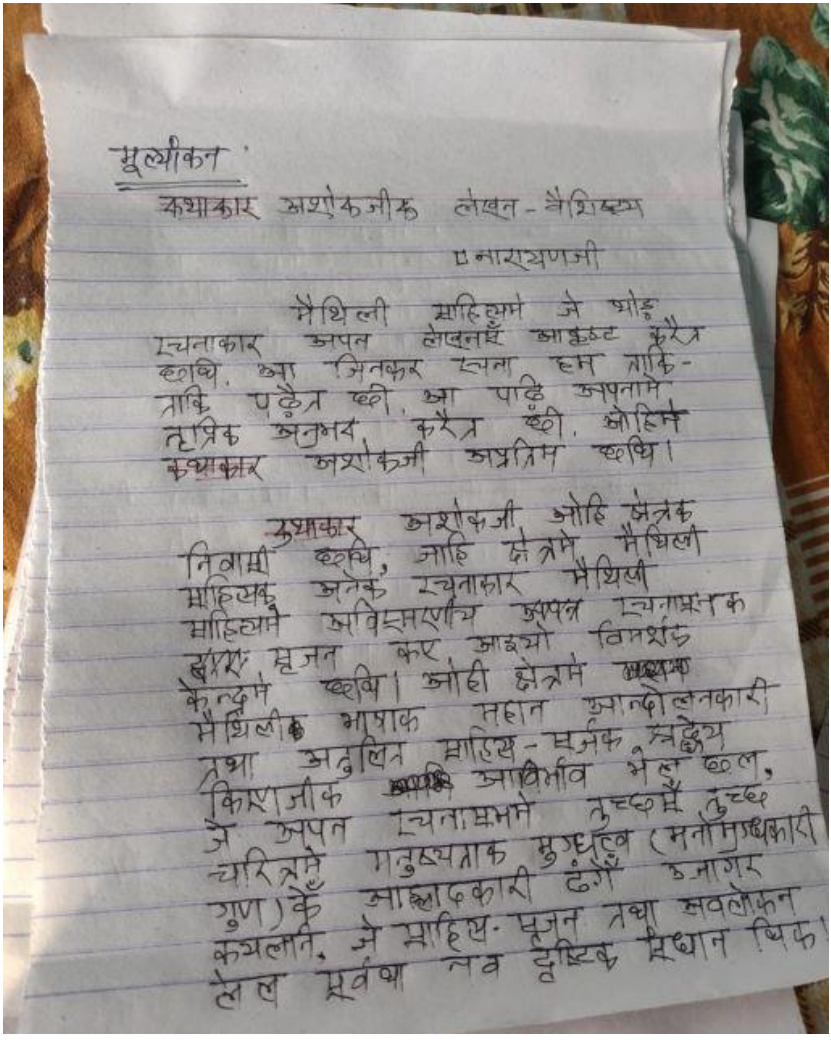

मूल्यांकन

कथाकार अशोकजीक लेखन-वैशिष्ट्य

:नारायणजी

मैथिली साहित्यमे जे थोड़ रचनाकार अपन लेखनसँ आकृष्ट करैत छथि, आ जिनकर रचना हम ताकि-ताकि पढ़ैत छी, आ पाढ़ि अपनामे तृप्तिक अनुभव करैत छी, ओहिमे कथाकार अशोकजी अप्रतिम छथि।

कथाकार अशोकजी ओहि क्षेत्रक निवासी छथि, जाहि क्षेत्रमे मैथिली साहित्यक अनेक रचनाकार मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय अपन रचनात्मक द्वारा सृजन कए आइयो विमर्शक केन्द्रमे छथि। ओही क्षेत्रमे आन्दोलनकारी मैथिलीक भाषाक महान साहित्य-सर्जक, श्रद्धेय तथा अतुलित किरणजीक आविर्भाव भेल छल, जे अपन रचनाक्रममे तुच्छसँ तुच्छ चरित्रमे मनुष्यताक मुग्धत्व (मनोमुग्धकारी गुण)केँ आह्लादकारी ढंगेँ उजागर कयलनि. जे साहित्य-सृजन तथा अवलोकन लेल सर्वथा नव दृष्टिक प्रधान चिह्न

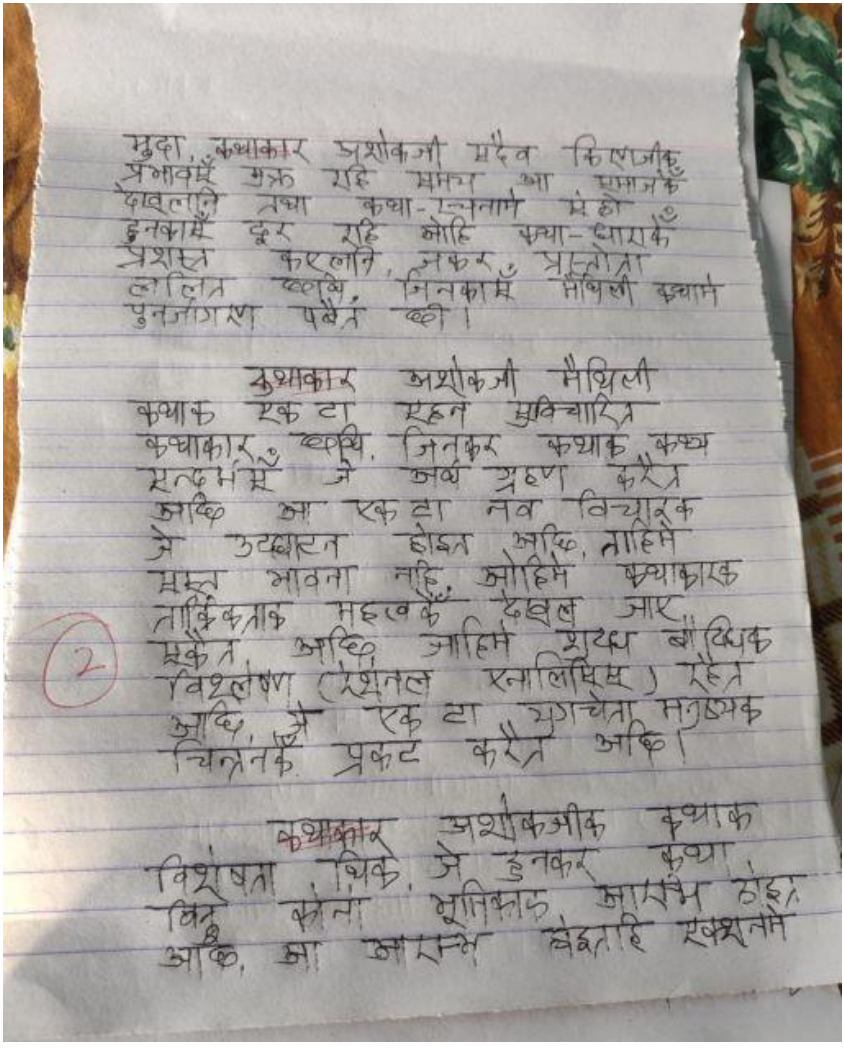

मुदा, कथाकार अशोकजी सदैव किरणजीक प्रभावसँ मुक्त रहि समय आ समाजकेँ देखलनि तथा कथा-रचनामे सेहो हुनकासँ दूर रहि ओहि कथा-धाराकेँ प्रशस्त कएलनि, जकर प्रणेता ललित छथि, जिनकासँ मैथिली कथामे पुनर्जागरण पबैत छी।

कथाकार अशोकजी मैथिली कथाक एक टा एहन सुविचारित कथाकार छथि, जिनकर कथाक कथ्य सन्दर्भसँ जे अर्थ ग्रहण करैत अछि आ एक टा नव विचारक जे उद्घाटन होइत अछि, ताहिमे मात्र भावना नहि, ओहिमे कथाकारक तार्किकताक महत्वकेँ देखल जाए सकैत अछि, ओहिमे शुद्ध बौद्धिक विश्लेषण (रेशनल एनालिसिस) रहैत अछि, जे एक टा युगचेता मनुष्यक चिन्तनकेँ प्रकट करैत अछि।

(2)

कथाकार अशोकजीक कथाक विशेषता छिऐ, जे हुनकर कथा, बिनु कोनो भूमिकाक, आरम्भ होइत अछि, आ आरम्भ होइतहि रचनामे

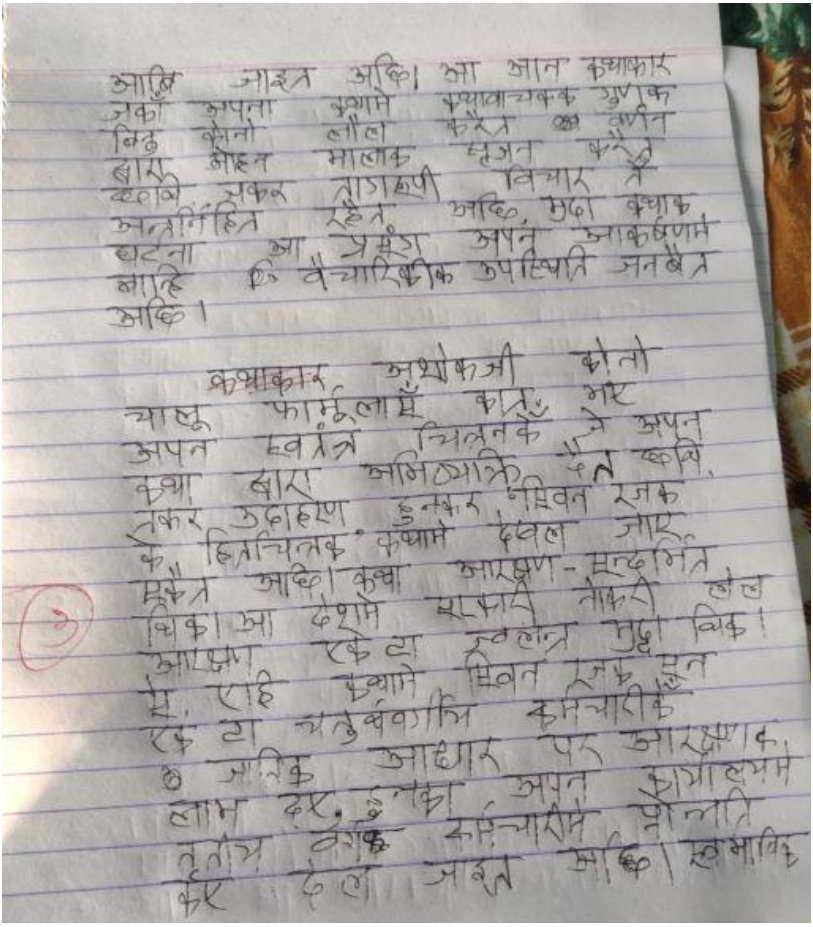

आबि जाइत अछि। आ आन कथाकार
जकाँ अपना कथामे कथावाचकक गुणक
बिनु कोनो लोल कएने वर्णन
द्वारा मोहन मालाक सृजन करैत
छथि एकर तागरूपी विचार तँ
अन्तर्निहित रहैत अछि, मुदा कथाक
घटना आ प्रसंग अपन आकर्षणमे
लाति कऽ वैचारिकीक उपस्थिति जनबैत
अछि।

कथाकार अशोकजी कोनो
चालू फार्मूलामे कथा भरैत
अपन स्वतंत्र चिन्तनकेँ अपन
कथा द्वारा अभिव्यक्ति दैत छथि,
एकर उदाहरण छन्हि, 'जीवन एक
के, छितचित्तक' कथामे देखल जाए
सकैत अछि। कथा आरक्षण-सन्दर्भित
छिक। आ देशमे सरकारी नोकरी लेल
आरक्षण एकटा स्वतन्त्र मुद्दा छिक।
ये. एहि कथामे जीवन एक सन्त
एकटा चतुर्थवर्गीय कर्मचारीकेँ
जातिक आधार पर आरक्षणक
लाभ दए, इनका अपन कार्यालयमे
तृतीय वर्गक कर्मचारीमे प्रोन्नति
दए देल जाइत अछि। स्वभाविक

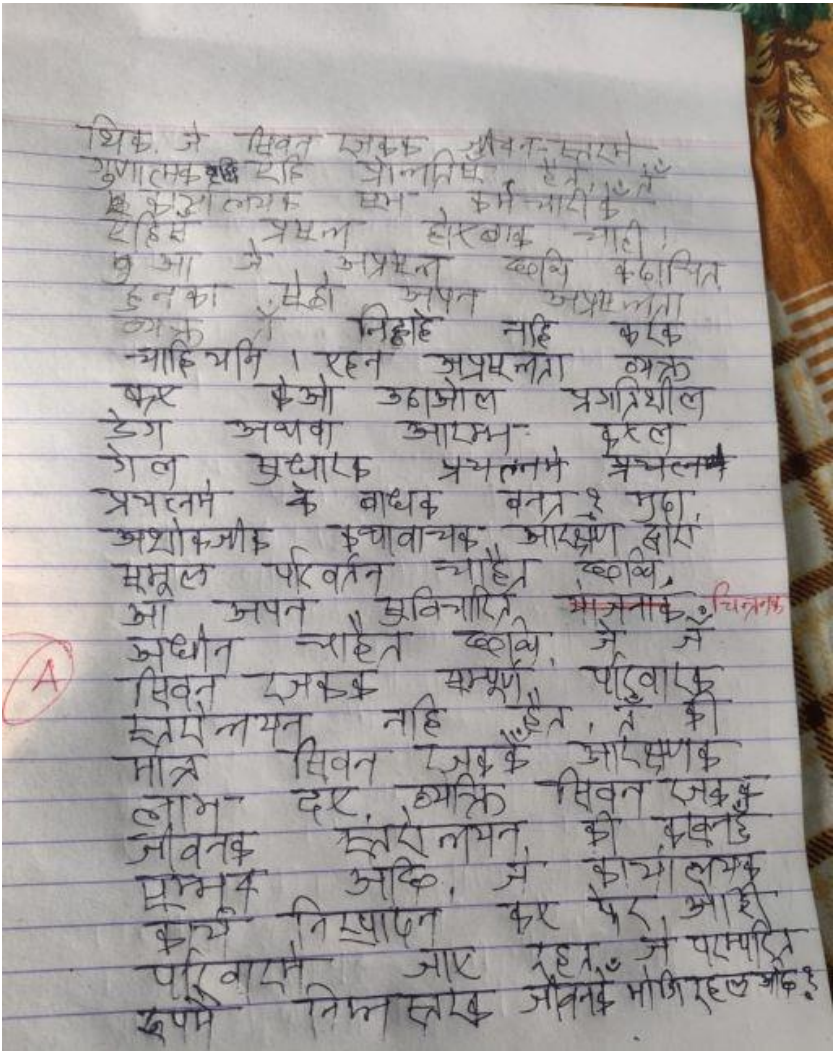

थिक. जे सिवन रजकक जीवन-स्तरमे
गुणात्मक वृद्धि एहि प्रोन्नतिमे हैत, तैं
कार्यालयक प्रम, कर्मचारीके
एहिमे प्रयत्न होरबाक चाही!
आ जे अप्रयत्न छथि कदाचित
हुनका सेहो अपन अप्रयत्नता
व्यक्त निबाहे नहि करक
चाहियनि। एहन अप्रयत्नता व्यक्त
कए ओ उत्कालोल प्रगतिशील
डेग अथवा आरम्भ कएल
गेल सुधारक प्रयत्नमे ~~प्रयत्न~~
प्रयत्नमे के बाधक बनत? मुदा,
अशोकजीक कथावाचक आरक्षण द्वारा
समूल परिवर्तन चाहैत छथि,
आ अपन सुविचारित ~~भावनाक~~ चिन्तनक
अधीन चाहैत छथि, जे जे
सिवन रजकक सम्पूर्ण परिवारक
स्तरोन्नयन नहि हैत, तँ की
मात्र सिवन रजकके आरक्षणक
लाभ देल, व्यक्ति सिवन रजकक
जीवनक स्तरोन्नयन की करतैक
प्रमुख आदि, जे कार्यालयक
कार्य निष्पादन करैत पर, ओही
परिवारमे आर रहत, जे परम्परित
रूपमे निम्न स्तरक जीवन भोगि रहल अछि?
A

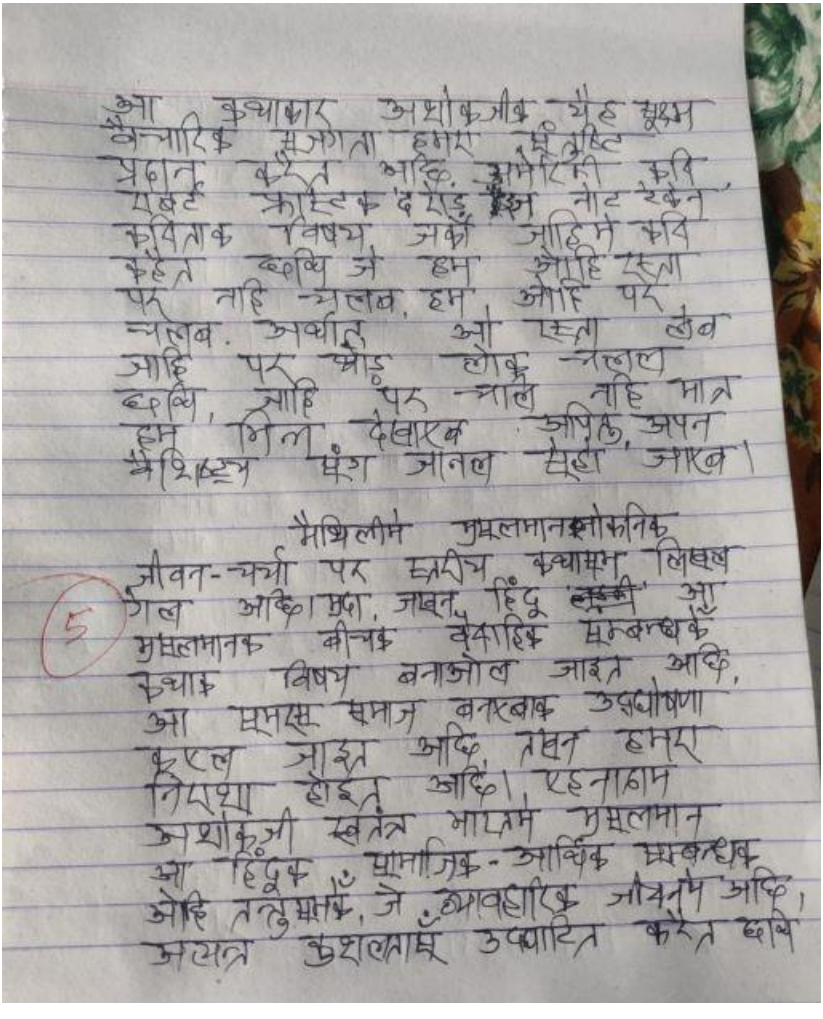

आ कथाकार अशोकजीक ई सूक्ष्म
वैचारिक सजगता हमरा संतुष्टि
प्रदान करैत अछि. अमेरिकी कवि
रॉबर्ट फ्रॉस्टक 'द रोड नॉट टेकेन'
कविताक विषय, जकाँ जाहिमे कवि
कहैत छथि जे हम ओहि रस्ता
पर नहि चलब, हम ओहि पर
चलब. अर्थात् ओ रस्ता जेब
आहि पर भीड़ होइत चलल
छथि, जाहि पर चालि नहि मात्र
हम मिल, देखारब आपिक, अपन
वैशिष्ट्य संग आनल जेहा जारब।

मैथिलीमे मुसलमानलोकनिक
जीवन-चर्या पर स्तरीय कथासभ लिखल
गेल अछि। मुदा, जखन, हिंदू ~~लड़की~~ आ
मुसलमानक बीचक वैवाहिक सम्बन्धकेँ
कथाक विषय बनाओल जाइत अछि,
आ समरस समाज बनएबाक उद्घोषणा
कएल जाइत अछि, तखन हमरा
निराशा होइत अछि। एहनामे
अशोकजी स्वतंत्र भारतमे मुसलमान
आ हिंदूक सामाजिक-आर्थिक सम्बन्धक
ओहि तन्तुसभकेँ, जे व्यावहारिक जीवनमे अछि,
अत्यन्त कुशलतासँ उद्घाटित करैत छथि

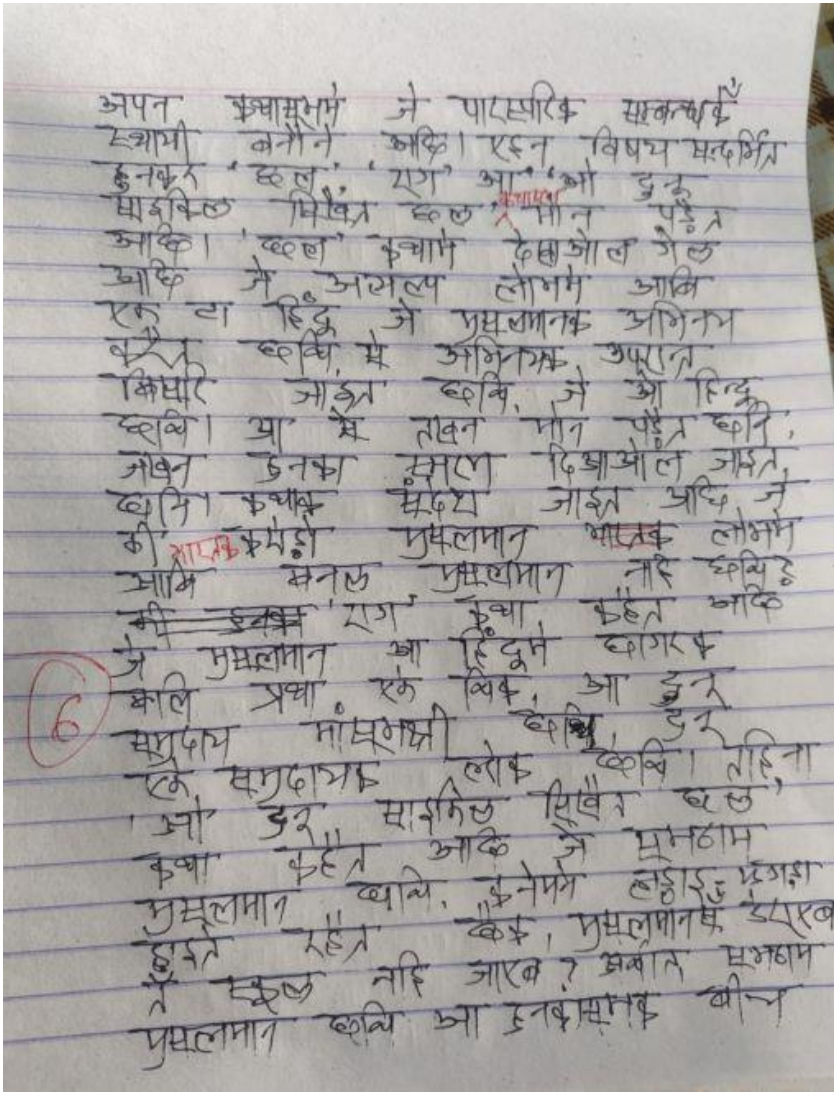

अपन कथासूभमे जे पारस्परिक सम्बन्धकेँ
स्थायी कतौने अछि। एहन विषय सन्दर्भित
हुनकर 'छल', 'राग' आ 'ओ दुनू
धाड़विल मिर्वत्र छल' (कथापद) मोन पड़ैत
अछि। 'छल' कथामे देखाओल गेल
अछि जे अगल लोकमे आकि
एकटा हिंदू जे मुसलमानक अभिनय
करैत छथि, से अभिनयक उपरान्त
किछारि जाइत छथि, जे ओ हिन्दू
छथि। आ से तखन मोन पड़ैत छनि,
जखन हुनका सभले दिआओल जाइत
छनि। कथाक उद्देश्य जाइत अछि जे
की (आस्तिक) कथंड़ो मुसलमान भावक लोकमे
आमि सनल मुसलमान नहि छथि?
~~की इसक~~ 'राग' कथा कहैत अछि
जे मुसलमान आ हिंदूमे फागरक
(6) कालि प्रथा एकेँ छैक, आ दुनू
सम्प्रदाय मांसभक्षी छथि, दुनू
एके समुदायक लोक छथि। तहिना
'ओ दुर साइकिल खिँचैत छल'
कथा कहैत अछि जे मुसलमान
मुसलमान छथिये, किनेपमे लड़ाइ-झगड़ा
होइते रहैत छैक, मुसलमानक उपरब
तँ रुकल नहि जाएत? अर्थात मुसलमान
मुसलमान छथि आ हुनकासभक बीच

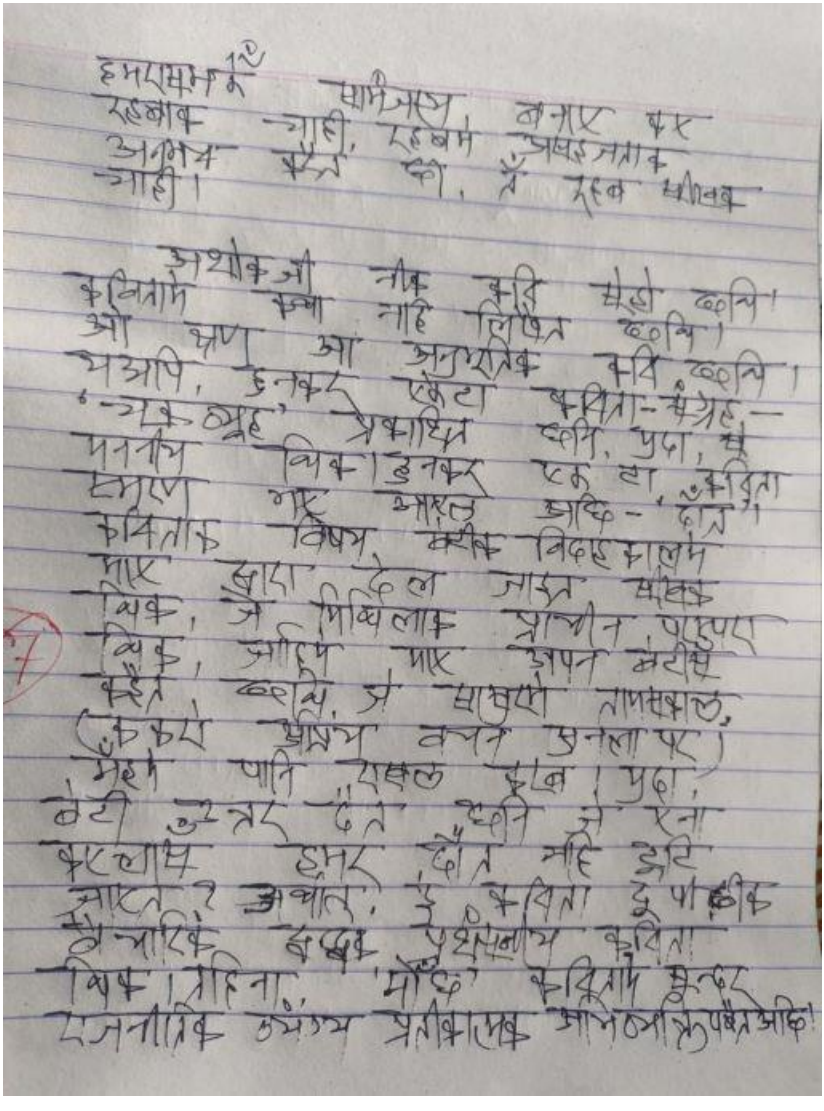

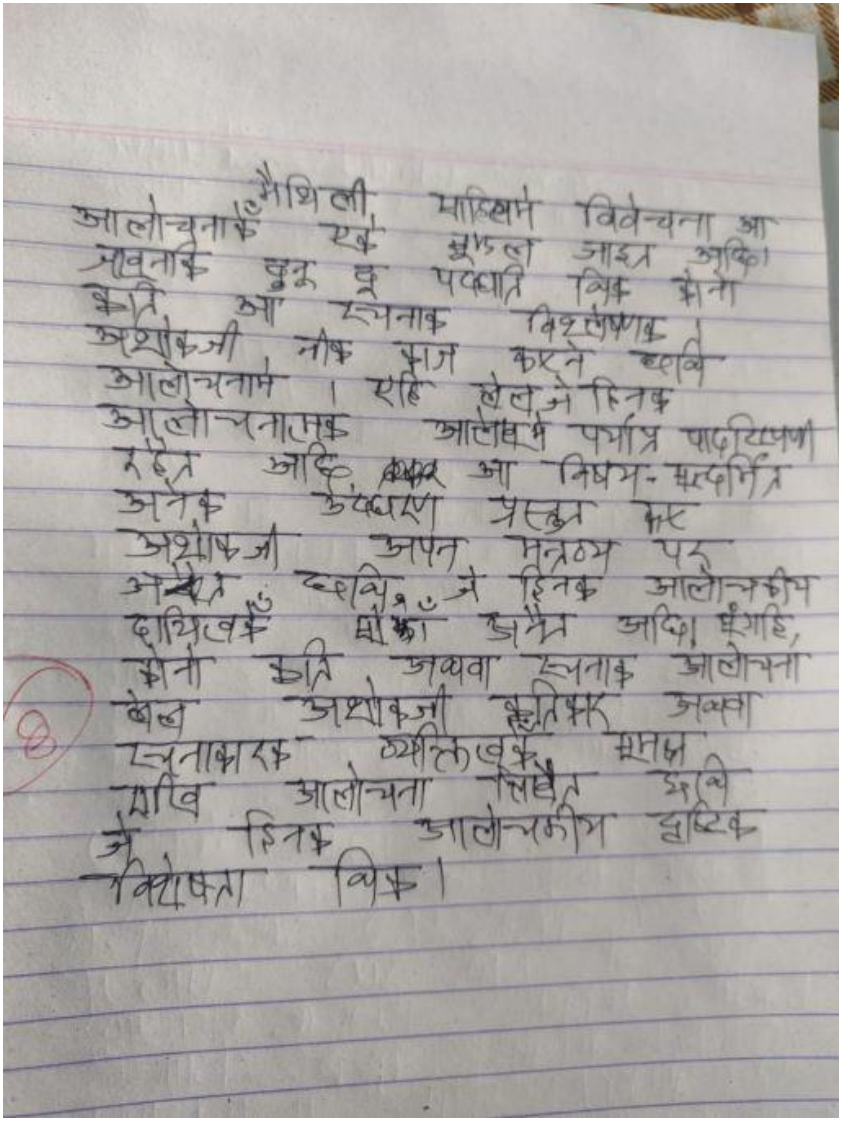

मैथिली साहित्यमे विवेचना आ
आलोचनाकेँ एकं झुण्ड जाइत अछि।
भावनाकेँ कूकू कू पक्षपाति बिक कोनो
कृति आ रचनाक विश्लेषणक।
अशोकजी नीक काज करैत छथि
आलोचनामे। एहि लेलमे हिनक
आलोचनात्मक आलेखमे पर्याप्त पाण्डित्यपण
रहैत अछि, आ विषय-सन्दर्भित
अनेक उदाहरण प्रस्तुत करैत
अशोकजी अपन मन्तव्य पर
ओ रहैत छथि, जे हिनक आलोचकीय
दायित्वकेँ सीमा जनैत अछि। संगहि,
8 कोनो कृति अथवा रचनाक आलोचना
केवल अशोकजी कृतिकार अथवा
रचनाकारक व्यक्तित्वकेँ समक्ष
राखि आलोचना लिखैत छथि
जे हिनक आलोचकीय दृष्टिक
विशेषता थिक।

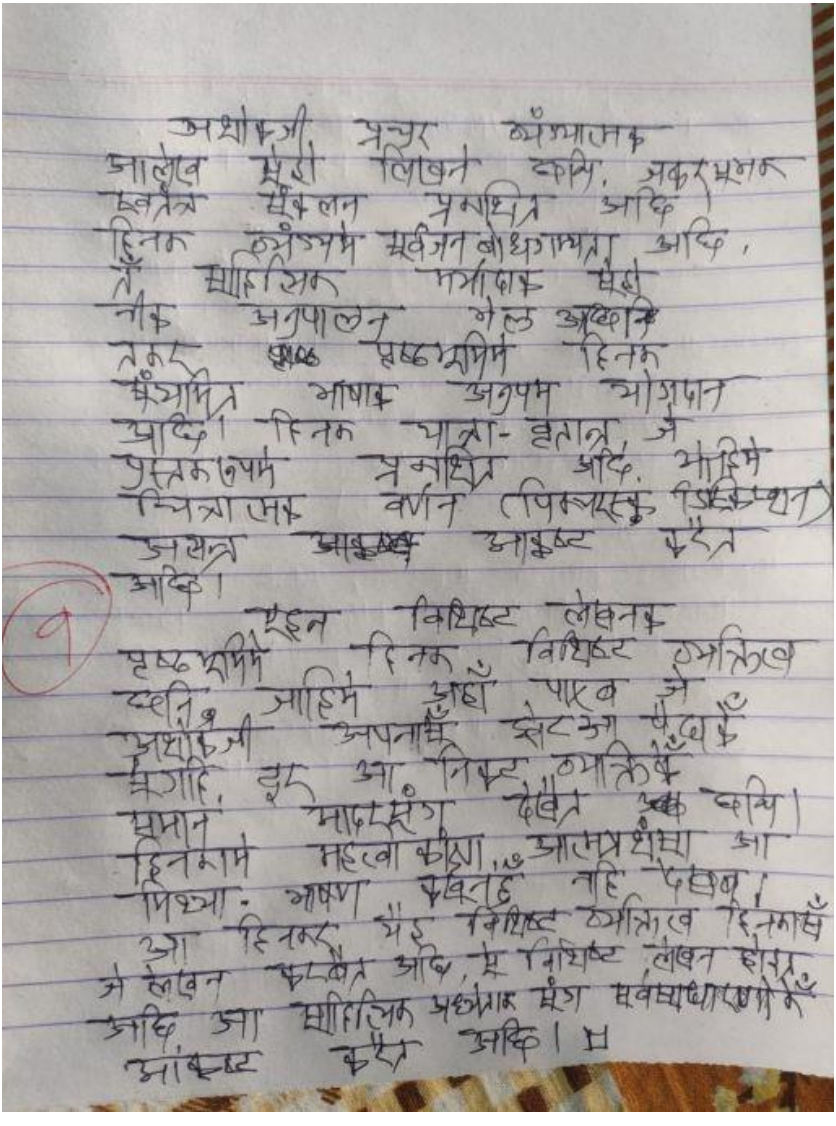

अशोकजी प्रचुर अँख्यात्मक
जालेबे सेहो लिखने छथि, जकरासभक
स्वतंत्र संकलन प्रकाशित अछि।
हिनक लेखनमे सर्वजन बोधगम्यता अछि,
तँ साहित्यिक मर्यादाक सेहो
नीक अनुपालन भेल अछि।
तकर पृष्ठभूमिमे हिनक
संपादित भाषाक अनुपम योगदान
अछि। हिनक यात्रा-वृतान्त, जे
पुस्तकरूपमे प्रकाशित अछि, ओहिमे
चित्रात्मक वर्णन (पिक्चरस्क डिस्क्रिप्शन)
जयत्र आकृष्ट करैत
अछि।
एहन विशिष्ट लेखनक
पृष्ठभूमिमे हिनक विशिष्ट व्यक्तित्व
छनि। ओहिमे आहाँ पाएब जे
अशोकजी अपनामे छोट आ पैघकेँ
सेहो दूर आ निकट व्यक्तिकेँ
समान आदरसँग देखैत छथि।
हिनकामे महत्वाकांक्षा, आत्मप्रशंसा आ
मिथ्या-भाषण कखनहुँ नहि देखब।
आ हिनकर येह विशिष्ट व्यक्तित्व हिनकासँ
जे लेखन करबैत अछि, से विशिष्ट लेखन होइत
अछि आ साहित्यिक अध्येता सभ संग सर्वसाधारणोकेँ
आकृष्ट करैत अछि। ¤

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.शिव कुमार मिश्र- अशोक ओ मैथिली साहित्य संस्थान

शिव कुमार मिश्र

अशोक ओ मैथिली साहित्य संस्थान

प्रसिद्ध साहित्यकार अशोक कुमार झा अपन लेखनक बलें साहित्यकार विशेषरूपसं कथाकारक मांझमे विशिष्ट स्थान पाबि गेल छथि। सरकारी पदाधिकारीक रुपमे जहिना हिनक विलक्षण दायित्व प्रसंशनीय रहल अछि तहिना साहित्यिक संस्थान सभक संगठन ओ संचालनमे सेहो हिनक दीर्घ अनुभवक सहयोग भेटैत रहल अछि।

मैथिली साहित्य संस्थान,पटनाक क्रियाकलाप पुनः आरंभ कयल जाय ताहि विषय पर 2014 इस्वीमे अशोक जी, भैरव लाल दास ओ हम बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यालयमे विमर्श कयल। एहिलेल एकटा कार्ययोजना पर सेहो चर्चा भेल। हमरालोकनि एहि लेल सेहो चर्चा कयने छलहुं जे आन संस्था द्वारा विद्यापति पर्व मनाकय सांस्कृतिक कार्यक्रमक परम्पराकें आगू बढाओल जा रहल अछि मुदा मैथिली साहित्य संस्थान मैथिली दिवसक आयोजन कय मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा विषयक अनुसंधान कार्यकें आगू बढाओत। मैथिली दिवसक आयोजनक पाछू एहि तथ्य पर विचार भेल छल जे

संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली भाषाक प्रवेश जाहि तिथि क' भेल छल ताहि तिथिकेँ मैथिली दिवसक रुपमे मनाओल जाय। हमरा तीनू गोटे एहि विषय पर एकमत भय एकटा बैसारक आयोजन बिहार रिसर्च सोसायटीक सभागारमे कयल जाहिमे ओहि विद्वान सभकेँ आमंत्रित कयल गेल जे लोकनि एकर स्थापना कालसं संबद्ध छलाह।

ओना मैथिली साहित्य संस्थानक स्थापनाक श्रेय स्वर्गीय राजेश्वर झाकेँ देल जाइत छनि जे 1969 ईस्वीमे ताहि कालक मैथिल ओ अमैथिल विद्वानसभक सहयोगसं पटनाक बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यालयमे कयलनि। दीनानाथ झाक अध्यक्षतामे एकर गठन भेल जकर सचिव स्वयं राजेश्वर झा भेलाह। संरक्षक बाबू लक्ष्मीपति सिंह छलाह ओ रमानाथ झा, जटा शंकर झा, गौरी नंदन सिंह, गोपी रमण चौधरी, प्रोफेसर जगदीश चंद्र झा (मुख्य संपादक, मिथिला भारती), सुधांशु शेखर चौधरी,आचार्य परमानंदन शास्त्री,कुलानंद नंदन,बलदेव मिश्र, सुरेंद्र मिश्र, प्रोफेसर हेतुकर झा,लेखनाथ मिश्र, इन्द्र कान्त झा,सुशील कुमार झा, शैलेंद्र मोहन झा,चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा, अभय कांत चौधरी, दया शंकर उपाध्याय, राधा कृष्ण चौधरी, उपेंद्र ठाकुर, रामदेव झा,जगदीश्वर पांडेय, विनोदानंद झा, कमल नारायण झा कमलेश, हंसराज, अमरेश पाठक, बी पी मजुमदार, परमेश्वर झा,जय नारायण ठाकुर, वेदनाथ झा, विजय कुमार ठाकुर, राजेंद्र राम,नरेंद्र झा,रमाकांत झा, करुणानंद दास,सच्चिदानंद सहाय,जटाशंकर दास,भीमनाथ झा,मंत्रेश्वर झा, प्रबोध नारायण झा,बाल गोबिंद झा,गंगेश गुंजन, नवीन चंद्र मिश्र, कपिलेश्वर झा, गोलोक नाद मिश्र, इन्द्र नाथ सिंह ठाकुर, गिरीन्द्र मोहन भट्ट, सीताराम राय,प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन',प्रकाश चरण प्रसाद, उपेंद्र दोषी, उदय चंद्र झा 'विनोद' प्रभृति कतोक विद्वानसभक सहयोग एहि संस्थानकेँ भेटैत रहल।

त्रैमासिक शोधपत्रिका मिथिला भारतीक प्रकाशन 1969 सं प्रारंभ भेल छल। कुल पांच अंक प्रकाशित भेलोपरांत 1977मे एकर प्रकाशन बन्न भय गेल। पंडित राजेश्वर झाक स्वर्गवास भेलाक पछाति एकर कार्यकलाप ठमकि गेल। एहिमे जे शोधालेख प्रकाशित भेल छल ताहि सभ पर कतोक शोध प्रबंध पछाति तैयार भेल मुदा एकर अभाव मिथिलाक अनुसंधान विधाकें बेस आघात पहुंचेलक। मिथिला भारतीक अतिरिक्त कतोक आओर शोधग्रंथ ओ साहित्यसभ प्रकाशित भेल छल।अवहट्ट :उद्भव ओ विकास नामक पंडित राजेश्वर झाक पोथीकेँ साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छल।लोकगाथा विवेचन नामक शोधग्रंथ एकटा विशिष्ट उपलब्धि छल। पंडित राजेश्वर झाक पछाति एकर शोध ओ प्रकाशन कार्य बन्न भेलोपरांत दोसर स्तरीय शोधपत्रिकाक प्रकाशन नहि भय सकल। ओना रांटी ड्योढ़ीसं किछु अंक जिज्ञासाक अवस्स प्रकाशित भेल मुदा ओहो अल्पायु रहल। मैथिली साहित्य संस्थान द्वारा साल भरिमे मात्र विद्यापति स्मृति दिवसक एक गोट बिध पुराओल जाय लागल। बिहार रिसर्च सोसायटीक कार्यकलाप बन्न भेलापर 1997सं ओहो बन्न भय गेल।

बिहार रिसर्च सोसायटीके बचयबाक लेल प्रायः बारह बर्ख धरि संघर्ष करय पड़ल। तीस गोटसं बेसी मामिला लड़य पड़ल।2009मे एकर सरकार द्वारा अधिग्रहण कय पटना संग्रहालयमे मिला देल गेल। तकर पछाति सेहो कतोक मामिलासभ चलैत रहल।2014मे किछु संघर्ष विराम भेल।

एतेक पैघ संघर्षक अवधिमे कतोक बुद्धिजीवी ओ विद्वानलोकनिक सहयोग भेटल। एहि क्रममे 2008-9मे बिहार विधान परिषदक परियोजना पदाधिकारी भैरव लाल दासजीसं संपर्क भेल। संघर्षक अवधिमे सदिखन ई अभिलाषा रहल जे जहिया संघर्षक अंत हएत आ बिहार रिसर्च सोसायटी अपन कार्यकलाप प्रारंभ करत तकर पछाति मैथिली साहित्य संस्थानक

क्रियाकलाप सेहो फेरसं प्रारंभ कयल जायत। हमर चिरप्रतीक्षित अभिलाषाक कार्यान्वयनमे भैरव लाल दासजी ओ अशोक कुमार झाजी सहयोग भेटल।

अस्तु, अशोक कुमार झाक संयोजनमे एकटा बैसार हमर कार्यालय बिहार रिसर्च सोसायटीक सभागारमे भेल।प्रोफेसर हेतुकर झा,प्रोफेसर रत्नेश्वर मिश्र, प्रोफेसर इन्द्र कान्त झा, प्रोफेसर महेन्द्र नारायण कर्ण,रामचंद्र खान,योगानंद झा,भैरव लाल दास प्रभृति कतोक विद्वानसभ उपस्थित भेलाह आ मैथिली साहित्य संस्थानकें पुनर्जीवित करबाक निर्णय लेल गेल।मिथिला भारतीक नवांक शृंखलाक प्रकाशनक सेहो निर्णय भेल जाहिमे अंग्रेजी भाषाक शोधालेख सेहो प्रकाशित करबाक निर्णय भेल।मैथिली दिवस 8 जनवरीकें मनेबाक निर्णय सेहो भेल।पछाति पटना उच्च न्यायालयक न्यायमूर्ति वी के वर्माजीक निदेशानुसार एकर तिथि 7 जनवरी कयल गेल आ मैथिली दिवसक आयोजन सात जनवरी क' होमय लागल। एकर आयोजनमे आदरणीय अशोकजीक सहयोग सदिखन भेटैत रहल अछि।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर हेतुकर झाक निर्देश पर हम आ भैरव लाल दासजी मिथिला भारतीक संपादक दायित्व ग्रहण कयलहुं।संपादक मंडल मे वरिष्ठ विद्वानसभकें स्थान भेटलन्हि। सभक सहयोगसं एखन धरि मिथिला भारतीक नौ अंक प्रकाशित भेल अछि।एकर स्तर बचेबाक सदिखन चुनौती बनल रहैछ। बिहार -झारखंड राज्यक ई एकमात्र शोधपत्रिका भय गेल अछि जकरा विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक आर्ट एंड ह्यूमनिटी शाखाक केयरलिस्टमे स्थान भेटल छैक।एहिमे मैथिलक अलावा अमेरिका, जापान, कनाडा, नेपालक विदेशी विद्वानसभक संगहि बंगाल, असम,मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश प्रभृति अन्य प्रांतक विद्वानसभक

शोधालेख सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि।एवम् प्रकारेँ मिथिला भारती अंतरराष्ट्रीय शोधपत्रिकाक स्वरूप ग्रहण कय लेलक अछि।

एहि तरहेँ मैथिली साहित्य संस्थानकेँ पुनर्जीवित करबाक लेल आदरणीय अशोक कुमार झाजीक योगदान स्मरणीय रहत।हम हुनक आभारी छी। हुनक स्वस्थ ओ सुदीर्घ जीवनक कामना करैत छी।

-संपर्क-9122686586

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१५.शैलेन्द्र आनन्द- अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार

शैलेन्द्र आनन्द

अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार

अशोक: एकटा जीवन्त कलाकार [redacted]

□ शैलेन्द्र आनंद

शायद सत्तरि ई.क धक छल हेतै। हम बोर्ड परीक्षा पास कऽ गेल रही। मोन उल्लाससँ भरल रहय। एहि बीच पैटघाट पर 'नवयुवक नाट्यकला परिषद, लालगंज' द्वारा श्री जीवनाथ मिश्रक निर्देशनमे कोनो एकांकी (नाम विस्मृत भऽ गेल अछि) केर आयोजन भेल रहैक। लग-पासक गाममे जँ कोनो नाटक प्रदर्शित कएल जा रहल अछि आ हमरा लोकनि नाटक देखबाक लेल नहि जाय, ई सम्भवे नहि छल। नाटक देखबाक लेल पैदल तीन-चारि कोस जायबला एहि दलमे हमर अग्रज राज, सियाराम, हर्षपति, लक्ष्मण आदि रहथि। हमर सभक ई दल गामक रामलीला धरि देखब नहि छोड़ैत छल। रामलीलाक 'सुपारीलाल' आखनहुँ धरि विस्मृत नहि भेलाह अछि। से, नैनपनक ओ स्मृति कहियो-कहियो मोनक अकासमे उदित भऽ जाइए आ तखन विगत जीवनक कतेको पृष्ठ अनायास फड़फड़ाय लगैए।

अशोक, अर्थात कथाकार अशोक, ओहि समय बनारसमे रहैत रहथि। कहियो-कहियो गाम आबथि। हुनक घर भुइयाँथा अर्थात लोहना दछिनवारि टोलमे आ हमर पछबारि टोलमे। हुनक जेठ भाइ आदरणीय सुशील बाबू आ हमर जेठ भाइ आदरणीय धीरेन्द्रजी दुनू मित्र। तावत हुनका लोकनिक छोट भाइ अर्थात अशोक-शैलेन्द्रक मैत्री नहि भेल छल। शिवशंकर, अर्थात कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास सँ मात्र अन्तरंगता रहय। हटाउ एहि पृष्ठकेँ। जीवनमे अहिना दृश्य बदलैत रहैत छैक। दृश्य बदलल आ हम कोना दूसँ तीन भऽ गेलौं, एकरो संदर्भित करैत अछि-हमर नाट्य-प्रेम। से कहऽ जे लागल रही जे अशोक कें पहिले-पहिल पैटघाटक ओहि एकांकीमे देखने रहियनि। ई बात आब हुनको स्मृतिमे नहि छनि। मुदा परिचित ओ ओही दिन भऽ गेल छलाह, मुदा मैत्री नहि भेल छल। ओना ओ कहियो-कहियो हमर बड़का भाइ (धीरेन्द्रजी) क लग कविता-कथा लऽ कऽ आएल करथि। ओहू समय हमर मैत्री नहि भेल। मुदा, कतौ ने कतौ मैत्रीक बीजारोपण अवश्य कऽ गेल। हम अशोककेँ चिन्हय लगलियनि। 1975 ई.मे 'गोविन्द दास नाट्यकला परिषद, लोहना'क स्थापना, परिसरक तीन-चारि गामक कलाकारक सहयोगसँ भेल। आदरणीय सुशील बाबू, सद बाबू आ जीबू बाबू एहि संस्थाक प्रधान रहथि। संस्था लोहना पाठशालापर प्रत्येक वर्ष शारदीय नवरात्रिमे तीन राति नाटकक आयोजन करैत छल। एही क्रममे पूर्वाभ्यासक लेल हम आ शिवशंकर अशोकक घर पर गेल रही। अशोक गाम आएल रहथि।

(1)

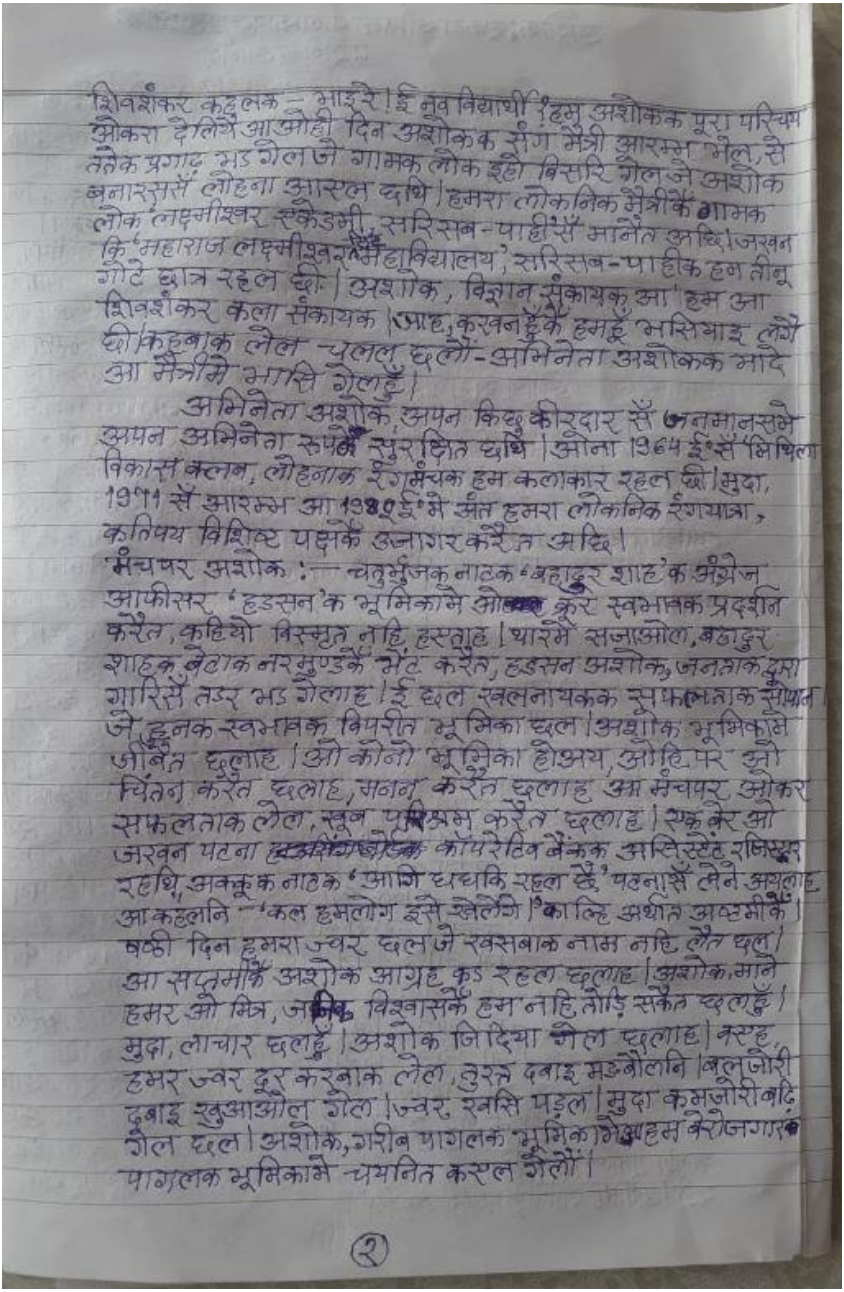

शिवशंकर कहलक - भाइ रे! ई नव विद्यार्थी ! हमु अशोकक पूरा परिचय ओकरा देलियै आ ओही दिन अशोकक संग मैत्री आरम्भ भेल, से तेहेन प्रगाढ़ भऽ गेल जे गामक लोक इहो बिसरि गेल जे अशोक बनारससँ लोहना आएल छथि। हमरा लोकनिक मैत्रीकेँ गामक लोक लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब-पाहीसँ मानैत अछि। जखन कि 'महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय', सरिसब-पाहीक हम तीनू गोटे छात्र रहल छी। अशोक, विज्ञान संकायक आ हम आ शिवशंकर कला संकायक। आह, कखनहुँ के हमहूँ भसियाइ लगै छी। कहबाक लेल चलल छलौं- अभिनेता अशोकक मादे आ मैत्रीमे भासि गेलहुँ।

अभिनेता अशोक, अपन किछु कीरदार सँ जनमानसमे अपन अभिनेता रूपकेँ सुरक्षित छथि। ओना 1964 ई. सँ 'मिथिला विकास क्लब, लोहनाक रंगमंचक हम कलाकार रहल छी। मुदा, 1971 सँ आरम्भ आ 1985 ई. मे अंत हमरा लोकनिक रंगयात्रा, कतिपय विशिष्ट पक्षकेँ उजागर करैत अछि।

'मंचपर अशोक :— चतुर्भुजक नाटक 'बहादुर शाह'क अंग्रेज आफीसर 'हडसन'क भूमिकामे ओ क्रूर स्वभावक प्रदर्शन करैत, कहियो बिस्मृत नहि हएताह। थारमे सजाओल, बहादुर शाहक बेटाक नरमुण्डकेँ भेंट करैत, हडसन अशोक, जनताक दुसा गारिसँ तऽर भऽ गेलाह। ई छल खलनायकक सफलताक सोपान। जे हुनक स्वभावक विपरीत भूमिका छल। अशोक भूमिकामे जीबैत छलाह। ओ कोनो भूमिका होअय, ओहि पर ओ चिंतन करैत छलाह, मनन करैत छलाह आ मंचपर ओकर सफलताक लेल, खूब परिश्रम करैत छलाह। एक बेर ओ जखन पटना कॉपरेटिव बैंकक असिस्टेंट रजिस्ट्रार रहथि, अक्कूक नाटक 'आगि धधकि रहल छै' पटनासँ लेने अयलाह आ कहलनि -'कल हमलोग इसे खेलेंगे।' कालि अर्थात अष्टमीकेँ। बड़ी दिन हमरा ज्वर छल जे खसबाक नाम नहि लैत छल। आ सप्तमीकेँ अशोक आग्रह कऽ रहल छलाह। अशोक माने हमर ओ मित्र, जनिक विश्वासकेँ हम नहि तोड़ि सकैत छलहुँ। मुदा, लाचार छलहुँ। अशोक जिदिया गेल छलाह। कहुना, हमर ज्वर दूर करबाक लेल, तुरत दबाइ मङबौलनि। बलजोरी दबाइ खुआओल गेल। ज्वर खसि पड़ल। मुदा कमजोरी बढ़ि गेल छल। अशोक, गरीब पागलक भूमिकामे आ हम बेरोजगारक पागलक भूमिकामे चयनित कएल गेलौं।

२

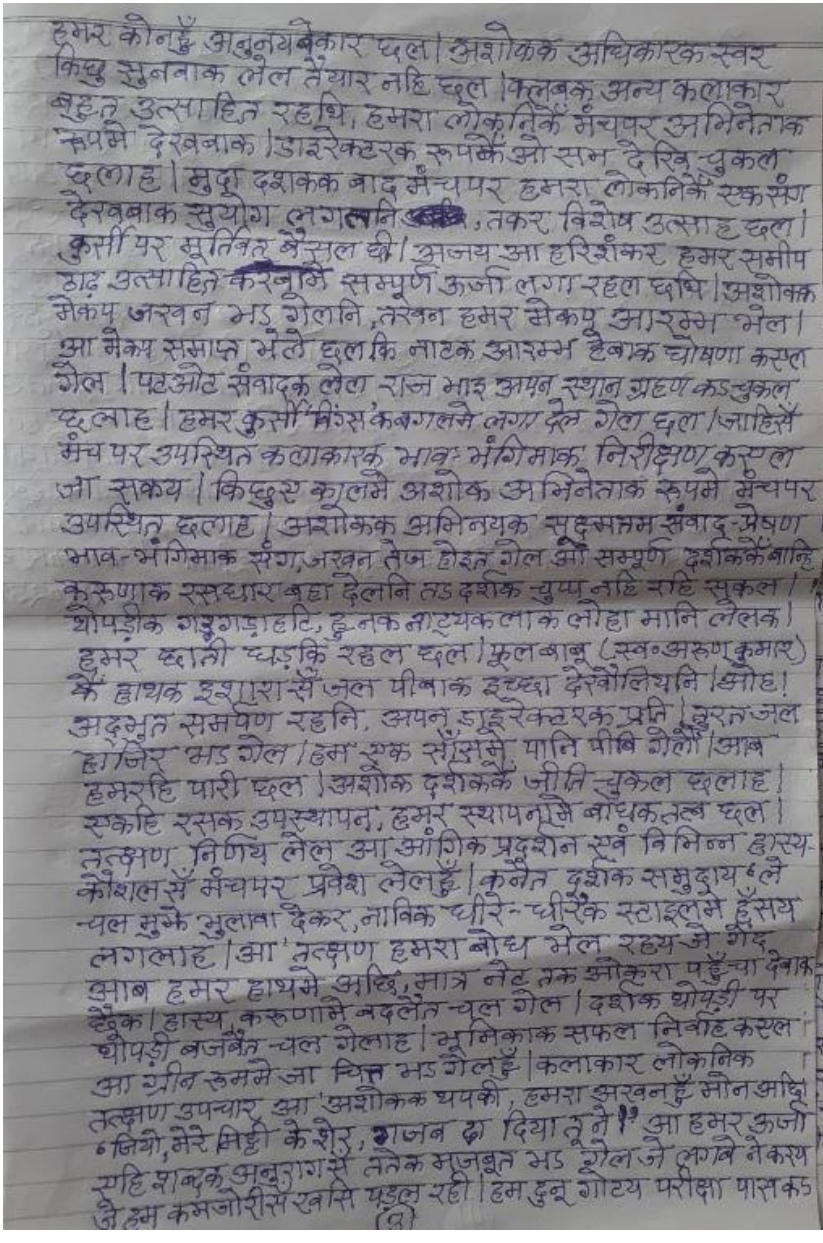

हमर कोनहुँ अनुनय बेकार छल। अशोकक अधिकारक स्वर
किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छल। क्लबक अन्य कलाकार
बहुत उत्साहित रहथि, हमरा लोकनिकेँ मंचपर अभिनेताक
रूपमे देखबाक। डाइरेक्टरक रूपमे ओ सभ देखि चुकल
छलाह। मुदा दशकक बाद मंचपर हमरा लोकनिकेँ एकसंग
देखबाक सुयोग लगलनि, तकर विशेष उत्साह छल।
कुर्सी पर मूर्तिवत बैसल छी। अजय आ हरिशंकर हमर समीप
ठाढ़ उत्साहित करबामे सम्पूर्ण ऊर्जा लगा रहल छथि। अशोकक
मेकप जखन भऽ गेलनि, तखन हमर मेकप आरम्भ भेल।
आ मेकप समाप्त भेले छल कि नाटक आरम्भ हेबाक घोषणा कएल
गेल। पटओट संवादक लेल राजा भाइ अपन स्थान ग्रहण कऽ चुकल
छलाह। हमर कुर्सी विंगसक बगलमे लगा देल गेल छल, जाहिसँ
मंच पर उपस्थित कलाकारक भाव-भंगिमाक निरीक्षण कएल
जा सकय। किछुए कालमे अशोक अभिनेताक रूपमे मंचपर
उपस्थित छलाह। अशोकक अभिनयक सूक्ष्मतम संवाद-प्रेषण
भाव-भंगिमाक संग, जखन तेज होइत गेल आ सम्पूर्ण दर्शककेँ बान्हि
करुणाक रसधार बहा देलनि तऽ दर्शक चुप्प नहि रहि सकल।
थोपड़ीक गड़गड़ाहटि, हुनक नाट्यकलाक लोहा मानि लेलक।
हमर छाती धड़कि रहल छल। फूलबाबू (स्व० अरुण कुमार)
केँ हाथक इशारासँ जल पीबाक इच्छा देखौलियनि। ओह!
अद्भुत समर्पण रहनि, अपन डाइरेक्टरक प्रति। तुरत जल
हाजिर भऽ गेल। हम एक साँसमे पानि पीबि गेलौं। आब
हमरहि पारी छल। अशोक दर्शककेँ जीति चुकल छलाह।
एकहि रसक उपस्थापन, हमर स्थापनामे बाधक तत्व छल।
तत्क्षण निर्णय लेल आ आंगिक प्रदर्शन एवं विभिन्न हास्य-
कौशलसँ मंचपर प्रवेश लेलहुँ। कुनैत दर्शक समुदाय ले
चल मुझे भुलावा देकर, नाविक धीरे-धीरेके स्टाइलमे हँसय
लगलाह। आ तत्क्षण हमरा बोध भेल रहय जे गेंद
आब हमर हाथमे अछि, मात्र नेट तक ओकरा पहुँचा देबाक
छैक। हास्य, करुणामे बदलैत चल गेल। दर्शक थोपड़ी पर
थोपड़ी बजबैत चल गेलाह। भूमिकाक सफल निर्वाह कएल
आ ग्रीन रुममे जा चित्त भऽ गेलहुँ। कलाकार लोकनिक
तत्क्षण उपचार आ अशोकक थपकी, हमरा अखनहुँ मोन अछि।
"जियो, मेरे मिट्टी के शेर, गजब ढा दिया तूने!" आ हमर ऊर्जा
एहि शब्दक अनुरागसँ ततेक मजबूत भऽ गेल जे लागै नेकरय
जे हम कमजोरीसँ खसि पड़ल रही। हम दुनू गोटय परीक्षा पास कऽ

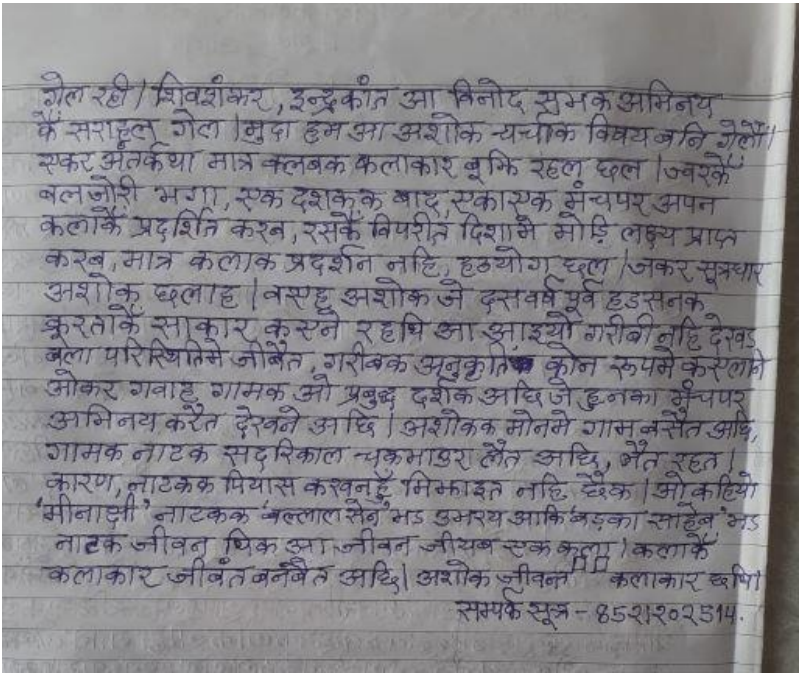

गेल रही। शिवशंकर, इन्द्रकांत आ विनोद सुभक अभिनय
कें सराहल गेल। मुदा हम आ अशोक चर्चाक विषय बनि गेलौं।
एकर अंतर्कथा मात्र कलबक कलाकार बूझि रहल छल। जकरे
बलजोरी भगा, एक दशकक बाद, एकाएक मंचपर अपन
कलाकें प्रदर्शित करब, एसकें विपरीत दिशामे मोड़ि लक्ष्य प्राप्त
करब, मात्र कलाक प्रदर्शन नहि, हठयोग छल। जकर सूत्रधार
अशोक छलाह। वएह अशोक जे दसवर्ष पूर्व हडसनक
कृतीकें साकार करने रहथि आ आइयो गरीबी नहि देखड़
बला परिस्थितिमे जीबैत, गरीबक अनुकृति कोन रूपमे करैलनि
ओकर गवाह गामक ओ प्रबुद्ध दर्शक अछि जे हुनका मंचपर
अभिनय करैत देखने अछि। अशोकक मोनमे गाम बसैत अछि,
गामक नाटक सदरिकाल चकमाडरा लैत अछि, भैत रहत।
कारण, नाटकक पियास करबनहुँ मिझाइत नहि छैक। ओ कहियो
'मीनाक्षी' नाटकक 'बल्लाल सेन' भऽ उभरय आकि 'बड़का साहेब' भऽ
नाटक जीवन थिक आ जीवन जीयब एक कला। कलाकें
कलाकार जीवंत बनबैत अछि। अशोक जीवन्त कलाकार छथि।
सम्पर्क सूत्र - 85२१२०२514.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१६.गजेन्द्र ठाकुर- कवि अशोक

गजेन्द्र ठाकुर

कवि अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दवाब

पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबश्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दइ छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कवि अशोक

पहिल चरण: अशोकक 'चक्रव्यूह' (सामान्य पाठ)

महाभारत एकटा अद्भुत ग्रन्थ अछि। ई जय संहिता कथा लेखकक वर्कशॉप अछि, महाभारत कथा, मुदा ई कथा सभ पद्यमे अछि! महाभारतक अति लघु पद्यात्मक मैथिली रूप हमर त्वञ्चाहञ्च- गीत प्रबन्ध मे भेटत।

फेर तेरहम दिनक युद्ध भेल शुरु जखन,

संसप्तक आ त्रिगर्तकेँ पछुआबैत गेल अर्जुन।

तखनहि युधिष्ठिरकेँ पता चल चक्रव्यूहक,

अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकेँ कहल,

गर्भमे सुनल पिता माताकेँ वर्णन सुनबैत छल,

चक्रव्यूहक छह द्वारकेँ तोड़बाक सभटा,

स्मरण युद्धक वर्णनक विधि बचल नहि कोनोटा।

मुदा सातम द्वारक युद्धक वर्णन सुनल नहि,

माता सुतलि तखने बचल एकेटा द्वार सैह।

कवि ब्यासक पेटमे सीखि अएबाक बिम्ब,

शब्दार्थ नहि वीरक अछि ई प्रतीक ।

सोझाँ तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नहि बुझाएल,

कतए अछि द्वार कतए प्रवेश जयद्रथ रक्षक जतए,

आउ भीम काक ई अछि प्रवेश द्वार पैसब एतहि।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल भीतर,

भीम दोसर सेनानीकेँ रोकि जयद्रथ ठाढ़ ओतहि।

दोसर द्वारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,

काटल धनुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।

तेसर द्वारपर चकित कर्णपर कए वाण बरखा,

बढ़ल चारिम द्वारपर अश्वत्थामा जतए छल,

युद्ध भेल घनघोर एतए मुदा रोकि सकल नहि,

अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल चिन्तित,

कर्ण आब करब की बाजू पराजय बुजाइछ निश्चित।

कर्ण बाजल सभ मिलि सातो महारथी हम सभ,

रोकि सकब एहि बालककेँ नहि क्यो सकत असगर।

सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,

पहुँचि गेल सातम द्वार पहुँचल अभिमन्यु तावत।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतए कहल,

ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराएब,

अर्जुन पुत्र हम नहि छोड़ब युद्ध हम एना देखू,

पार्थ-पुत्रक शौर्य रथ घुमाऊ चक्राकार कए अहँ।

तखन लक्ष्मण आएल सोझाँ अभिमन्युक ओतए,

वाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक, द्रोण कहल,

अजेय ई अछि अभेद्य एकर कवच करू प्रहार सिरसि आ

तखनहि सारथि अभिमन्युक खसल टूटि गेल रथ ।

नीचाँ आबि तरुआरि चक्र गदा लए ओतए ओ चलल,

दुःशासनक पुत्रसँ गदा युद्ध भेल दुनू ओतहि खसल ।

पहिने उठि दुःशासनक पुत्र प्रहार कएलक मस्तकपर,

सप्तरथीक बीच खसि पड़ल सुभद्रापुत्र पति उत्तराक।

(गजेन्द्र ठाकुर, त्वञ्चाहञ्च- गीत प्रबन्ध, २००९)

'चक्रव्यूह' कविता संग्रहक पहिल कविता अछि 'चक्रव्यूह' जइमे आइ ने कृष्ण छथि ने युधिष्ठिर आ ने अर्जुन, आइ (महाभारत युद्धक तेरहम दिन) तँ रचल अछि चक्रव्यूह।

'हम किछु पूछब मे' चीर-हरणक वर्णन अछि।

खिसियाकेँ दुर्योधन देलक ई आज्ञा पुनः ई,

चीर-हरण करू दुःशासन द्रौपदी दासी छी।

द्रौपदी कएलन्हि नेहोरा श्रेष्ठ लोकनिसँ

विनय ई अछि लाज बचाऊ करैत छी विनती।

सभ क्यो झुका माथ अपन ओहि सभामे,

कृष्णा छोड़ल सभ आश सभ दिशासँ,

भक्त्त वत्सल अहाँसँ टा अछि ई आशा,

कोहुना राखू हमर ई लाज अछि प्रत्याशा।

आर्द्र-स्वरसँ छलि रहलि पुकारि द्रौपदी,

गोहाड़ि खसलि सभा-बिच, मूर्च्छित ।

लागल खीचय द्रौपदीक वस्त्र दुःशासन,

सभासद देखल चमत्कार ई प्रतिपल,

यावत रहल खिंचैत वस्त्रकेँ दुःशासन,

बढ़ैत रहल वस्त्र द्रौपदीक तावत तखन।

(गजेन्द्र ठाकुर, त्वज्चाहज्च- गीत प्रबन्ध, २००९)

कृष्णक भूमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे 'एहि चीर-हरणमे आइ/ कृष्णक भूमिका/ दुष्सासनक आगू/ ठेहुनियाँ दऽ दैत अछि'। आ से हुनकर सम्बन्धक द्रौपदी नाङट भऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत बैताल कहिया हेता, विक्रमादित्य कहिया हेता, से जिज्ञासा छन्हि।'सोवियत रूस सँ' कविता अछि एकटा नैरेटिवक जे अशोकक पीढ़ीकेँ परसल गेल रहै, जतऽ सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक खिधांश कएल जाइत रहै, आ जे से करैत रहथि ओ अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ैले अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। ऐ कवितामे अशोक सेहो सएह केने छथि। सालमे चरि बेर भोट दैत लोक आ भोट दऽ फोंफ कटैत लोक हुनका पसिन्न नै छन्हि, मुदा ऐ बेर-बेर होइत भोटक लेल जे सामाजिक समीकरणक निर्माण होइत अछि से अशोक देखबासँ चूकि गेला। ओइ समीकरणक परिणामस्वरूप जे सामाजिक परिवर्तनक उत्प्रेरक तत्वक तरंग उठैए से अशोक चीन्हि नै सकला। 'गीत जे नै लिखल गेल' आ 'की सुनाउ अहाँकेँ?' कवि कर्मक वेदनापर आधारित अछि। 'लोक किछु नहि करैए' मे मनुक्खक अकर्मण्यता आ 'तोरा गछने रही' मे मनुक्खक स्वार्थ विषय बनल अछि। 'संचिकास्त' कार्यालय शब्दावलीक आधारपर रचित अछि। 'शिलालेख' क बिम्ब सुन्दर अछि। कवि आततायीकेँ कहै छथि जे ओकर अत्याचारकेँ शिलालेखपर खचित कऽ सुरक्षिता गरबा दी की? आ ओ तँ भगवान छथि, आ से ओ हुनका मृत्यु स्वीकार करबा लेल कहै छथि, मुदा व्यंग्य सेहो करै छथि जे हुनकर पुनर्जन्म अवश्य हेतन्हि । तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक 'अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ

आयल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। इतिहासक अन्तक घोषणा कयनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कयने छलाह- बादमे ऐसँ पलटि गेलाह। कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ा (द्वन्द्व) सँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ऐ मतसँ आपस भऽ गेला आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयता सभक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे 'शिलालेख' महत्वपूर्ण अछि।'फेर कोनो विजुरी चमकल' मे कवि हृदय आ प्रकृतिक बीचक सम्बन्ध जँ देखऽ चाही तँ देखि सकै छी, जेना 'गोबर सँ नीपल अंगना मे बरसल'। 'अहाँ कैं के चाही?' शब्द आकि अर्थ, शब्द माने भुस्सा बा खखड़ी आ अर्थ माने दाना, जे अहाँकैं चाही कवि देता। 'चुप्पी नहि सोहाइये' मे कवि उलहन दइ छथिन, पेट लेल चुप्पी अङेजल मुदा तैयो पेट कहाँ भरैए? गाम लगक पैटघाट मोन पड़ै छन्हि, आ जखन हाकिम दबाड़ै छन्हि तँ अगिला कविता 'पाँती आइ जरूर लिखबै' मे गाम फेर मोन पड़ै छन्हि, मोन होइ छन्हि सभ छोड़ि-छाड़ि गाम घुरि जाथि। 'असगर' मे समय के दर्पण मे नोर देखबाक चर्चा अछि, बिछुड़ि गेलापर भेटल एकान्तीक हाक्रोश अछि। 'रचना सँ पहिने' मे कवि कैं सभटा पाँती अनचिन्हार लागि रहल छन्हि, छगुन्ता होइ छन्हि केना एतेक जीवन जीबि गेला। 'शून्य' अछि नै मिलबाक कविता, ई समानान्तर चलबाक कवितो नै अछि।'मोनक घण्टी' मे मोनमे एलापर चानन सन शीतल हेबाक आ मोनसँ गेलापर सहसह करैत साँपक आगमन हेबाक चर्चा अछि। चानन आ साँपक बिम्ब संस्कृत सुभाषितानिसँ मैथिलीमे अनलनि अछि कवि, मुदा कने भिन्न रूपमे। चानन गाछक जड़ि परजीवी होइत अछि, एकर जड़ि पानि आ खनिज दोसर गाछक जड़िकैं फाड़ि कऽ ओतऽ सँ ग्रहण करैत अछि। वर आ पीपड़क गाछ परजीवी

नै होइत अछि मुदा जखन ओ छोट अवस्थाक रहैत अछि ओकरा दोसर गाछक आवश्यकता पड़ै छै, सहारा लऽ ठाढ़ हेबा लेल, सोंगर सन। शनै:शनै: वर आ पीपड़क जड़ि सहारा देनहार सोंगर बनल गाछ सभकेँ तेना कऽ गछाड़ि लैत अछि जे ओ सभ बिन पानि आ सूर्यप्रकाशक पिचड़ा भऽ जाइत अछि। आ आब की अहाँ 'शीतल चानन गाछमे लपेटल रहबो उपरान्त साँप विषहीन नै होइत अछि ' केर बिम्ब देलासँ पहिने मोनकेँ ओझरायल पबै छी? मुदा कवि सतर्क छथि, ओ चानन सन शीतल हेबा धरि सीमित राखलन्हि अपनाकेँ। हम अनेरे जेक्स डेरीडाक विखण्डनात्मक पद्धतिक प्रयोग समीक्षामे तँ नै कऽ रहल छी? 'दबकल कुकूर' द्वारा हिलाओल जा रहल नाङरिक बिम्ब सङ संस्कृतक सुभाषितानि [काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं ॥] जइमे विद्यार्थीक लक्षणमे एकटा लक्षणमे 'श्वान निद्रा'क चर्चा अछि, माने कनियो आहट भेलापर ओ उठि जाइए। मुदा हमर गाम लग बनल फोर-लेनपर मनुक्ख तँ हजारोक संख्यामे एक्सीडेण्टमे मरल अछि मुदा कुकुड़ ओतबे संख्यामे मरल अछि सुतलमे, सड़कपर सुतल, लोक कहै छै जे कुकुड़क नीन बड्ड मोट होइ छै! तँ श्वान निद्रा कतऽ गेलै? की ओकर स्थल हम सभ छीनि लेलिऐ, की गाड़ीक गति तते तेज छै जे ओकर आहटि कुकुड़क साकांक्ष हेबासँ बेसी तेज छै से ओ नै सुनि पबैए, आ की संस्कृतक सुभाषितानि मनुक्खक पर्यावरणमे हस्तक्षेपक कारण फेल भऽ गेलै? जेक्स डेरीडाक संग पर्यावरण विमर्शमे हम अनेरे ओझरा गेलौं, एतऽ तँ कवि दबकल कुकूरक नाङरि हिलेबाक बिम्ब मात्र प्रयोग केने छथि। 'बिन फ्रेमक तस्वीर' फेर हुनकर असगर हेबाक चर्च करैत अछि। 'हमर कोनो नाम दऽ दे' मे ओ ओकर विराट रूपक आगाँ अपनाकेँ अस्तित्वहीन हेबाक अनुभव करै छथि। 'उदास भोरक एक गीत' अछि टीसक गीत, टीस हृदयसँ शरीर धरिक। 'कहिया धरि' मे कवि मेला ताकि रहल छथि हेरेबा लेल, आशाक माटि लगबैत रहैत छथि रंगीन सपनाक बर्तनमे। मुदा से

कहिया धरि? 'एक विन्दु: तीन बिम्ब' मे एक बिम्ब अछि कोनो इच्छाक पूर्ति, दोसर अछि सोनिताएल आँखि आ तेसर बिम्ब अछि बिनु बचबाक प्रयास करैत खसैत जायब। 'प्रेमक तीन आखर'मे एक अछि- जे ओकर आँखिक भाषा पढ़ि लिखल शब्द, कतबो झटकारि कऽ लिखै छथि मोतीये सन पाँति बहराइत छन्हि, दोसर- ओकर प्रतिबिम्ब देखै छथि अपन मोनक अइनामे, आ से तेहेन प्रतिबिम्ब देखै छथि जे घोंटि लेबाक, पीसि कऽ चिबा कऽ लहूलुहान हेबाक मोन करै छन्हि। तेसरमे लग एलासँ डरो होइ छन्हि।आ यएह छी प्रेमक ढाइ आखरसँ आगाँक तीन आखर। 'एक राति' मे रातिक शीतलता, नीक-नीक अनुभूति, मुदा दिनक रौद? दिन--- नहि नहि। 'साँझ' सभ दिन आबि जाइए निर्लज्ज बनि, कवि ओकरा भागि जाइले कहै छथि नै तँ बड़ा देता इजोत। 'नव सीन' अछि नववर्षक आगमनक गीत, विलेनसँ हीरो बनबाक प्रयासमे नै भऽ जाथि एक्सट्रा, फेर वएह शंका आ निराशा। 'सीप महक मोती' मे आदर्शक जुलुसमे गाँधीक सहिष्णुता आ असहयोग (आन्दोलन) क चर्चा अछि । जितलापर नै वरन् हारलापर ठठा कऽ हँसि सकै छी! टघरल नोर जरिये कऽ बनि सकत मोती। आ तकर बाद अछि 'पाँचटा अनेरुआ कविता' जइमे पहिल अनेरुआ कविता अछि कृष्णक सभ साल होइत जन्मपर (कृष्णाष्टमी), मुदा ऐ बेर बाँसुरी बिसरि वायलिन लऽ कऽ आयल छथि कृष्ण। माने कवि वायलिनकेँ विदेशी वाद्य मानै छथि, हिन्दुस्तानी संगीतक हिसाबे ओ ई सही छै मुदा कर्नाटक संगीतमे ई विदेशी वायलिन आइसँ दू सय साल पहिने सम्मिलित कऽ लेल गेल छल। दोसर अनेरुआ कविता अछि डांस फ्लोरक मुदा ओत्तौ पएर पिछड़ि गेलन्हि। तेसर अनेरुआ कविता अछि रिक्शाबलाक, मुदा जखन अगिला पहिया झटकासँ टेढ़ भेलै तखने ओ संसार बुझि पेलक। चारिम अनेरुआ कविता अछि जीबा लेल जोड़ल जिनगी भरिक सम्बन्ध, मुदा! पाँचम अनेरुआ कविता अछि विनाशक करिया जीहक। चक्रव्यूहक अन्तिम कविता अछि 'दू बून्द नोर' तूफान, बिहाड़ि मुदा हृदयक बिहाड़िसँ पैघ नहि। साँवरिया नहि

मृत्युक प्रतीक्षा। आ हम मरि जाइत छी! माटिक, पतलोइक टूटल घर दहाइत, माटिक शरीरक संग।

दोसर चरण: अशोक चक्रव्यूहक बाद (सामान्य पाठ)

'फेर सँ' मे छोट बेटाक दुखीत हेबापर कारी मेघक घटाटोप आ कविता लिखबाक सूर चढ़ब देखबैए जे कविक कविताक वातावरण दुखी भेलेपर बनै छन्हि। 'दाँत' मे सासुरमे कनियाँकेँ मुँह नै खोलबाक जे सलाह देल जाइ छै तकर चर्चा अछि। 'आब..' मे माटि, काठ, बाँसक प्रयोग कम भेने आ सिमेण्ट, बालु, गिट्टी, लोहा, संगमरमरक प्रयोग बढ़ने लोकोक्तिमे अबैत परिवर्तन कवि देखि रहल छथि। 'ब्रह्मोत्तर' मे विकास लेल गाछ, घर, खेत आदिक अधिग्रहणक दंश, पहिने खेतिहरसँ खेत लऽ कऽ ब्रह्मोत्तर बाँटल जाइ छल, आइ लोकसँ जमीन लऽ कऽ नव-ब्राह्मणकेँ बाँटल जा रहल अछि। मुदा विश्वग्रामकेँ नन्दीग्राम चुनौती देलक अछि। 'मोछ' मे अस्त्रक महत्व बुझबैत ज्येष्ठ मोंछकेँ पैघत्वमे बाधक तत्त्व चिन्हित केने छथि, बा तेना कऽ काज करू, कमाउ जे मोंछमे नै लागय, से उपदेश दइ छथि। 'मुक्ति समारोह' मे शान्ति प्रतीक परबाकेँ उड़ाओल जायत, एकसँ दोसर राजेताक हाथमे जाइत ओ मुक्तिक आशमे अछि त्रस्त, मेरा भारत महान। 'आब किछु करू आचार्य!' मे आचार्यक मात्र चिन्तित होयब मुदा शिष्यकेँ नै अरघैत छन्हि। 'जखन पियासे मरि जायत' मे जिनकर चुप्पी कविकेँ नै सोहाइत छलन्हि से तँ आब हुनके चुप्प करेबापर लागल छथि।'एहि भ्रम मे नहि रहऽ' मे राजनीति मिसरकेँ चेतायल गेल अछि। 'सन्दर्भ:चुनाव वर्षक' क 'चुनाव'मे जनतंत्रक द्रौपदी छथि तँ 'भोट' मे भोट लेल होइत छल-प्रपञ्च अछि। 'राजनीति आब महकि रहलैए' मे राजनीतिक विद्रूप रूप देखार होइत अछि। 'कहलनि तूफान अली' मे नकली हिन्दू आ मुसलमान गढ़ल जेबाक चर्चा अछि। 'बुधियार' मे वर आ पीपड़ सन घरे-घर दरारि तकैत कक्का पात्र

छथि। 'मनुक्ख धर्रोहि थिक कविता' मे कवि कविता की अछि तँ लिखिते छथि सङे ई की नै अछि सेहो लिखै छथि 'शिश्नपूजी लोकक बेलपात नहि थिक कविता'। 'विष' मे कवि ताकि रहल छथि विषधर। 'खायब आ नहायब' मे चर्चित अछि जे पहिने पुरुखक खायब आ स्त्रीक नहायब कम्मे लोक देखै छला मुदा आब? 'जिन्न'मे अपने जनमाओल जिन्न बकार बन्न कऽ रहल अछि। 'की भेल' मे मुरुत भेल मनुक्खक चर्चा अछि। 'आठम अनुसूची मे मैथिली'मे मनोरथ पूर्ण भेलापर कविकेँ वैष्णव भऽ जाथि, पचीसी खेलाथि बा गंगा नहा आबथि से फुरा नै रहल छन्हि जेना आब किछु करबा लेल बाँकी नै अछि। साहित्य अकादेमीमे हुअय बा अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश, ई मूलधाराक कट्टरताकेँ आर बढ़ेलक अछि, सशक्त केलक अछि। मूलधाराक किछु हार्डबाउण्ड पोथीक लाइब्रेरी द्वारा खरीद आ बिनु परिणामक मूलधारा द्वारा कएल जा रहल सेमीनारक अतिरिक्त मैथिलीकेँ किछु नै भेटल छै, हँ समानान्तर धाराकेँ ऐ सभसँ निपटबाक लेल उनटे आब बेशी मेहनति करय पड़ि रहल छै। 'ऋतु बदलि रहल अछि' मे वायुमण्डलक ताप बढ़बाक चर्चा अछि, मुदा बहुत प्रयासो सँ बदलैत ऋतु, बढ़ैत ताप आ उड़ैत बगुलाकेँ कवि देखि नै पाबि रहल छथि।'चलि गेला महाप्रकाश' मे सुकान्त सोम द्वारा देल महाप्रकाशक मृत्युक सूचना, आ कविकेँ जड़कालामे काज एतन्हि मात्र हौसला।

ऊपरमे अशोकक कविताक सामान्य पाठ छल।

कवि अशोकक समीक्षा: प्राच्य आ पाश्चात्य सिद्धांत सभक आलोकमे समीक्षा: (सिद्धान्त लेल देखू हमर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्र, विदेह पोथी www.videha.co.in पर उपलब्ध)

मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवाद आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय

सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

कवि अशोकक चक्रव्यूह आ चक्रव्यहक बादक कवितामे चक्रव्यूहक एक्कोटा कविता अहाँकेँ निराश नै करत, मुदा बादक कविता सभ अहाँकेँ झुझुआन लागत (अपवाद अछि 'जखन पियासे मरि जायत')।

संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे 'चक्रव्यूह' आ 'हम किछु पूछब मे' एकटा सार्वभौम महाभारत कथापर आधारित अछि, मात्र स्थान, काल आ पात्र बदलि गेल अछि।

चीर-हरणक वर्णन अछि। कृष्णक भूमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे 'एहि चीर-हरणमे आइ/ कृष्णक भूमिका/ दुष्सासनक आगू/ ठेहुनियाँ दऽ दैत अछि'। आ से हुनकर सम्बन्धक द्रौपदी नाङट भऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत बैताल कहिया हेता, विक्रमादित्य कहिया हेता, से जिज्ञासा छन्हि।

आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर **ऐतिहासिक विश्लेषणपर** आउ। 'सोवियत रूस सँ' कविता अछि एकटा नैरेटिवक जइमे नुकायल छल एकटा सोवियत निरंकुशवाद, जे आइ ध्वस्त भऽ गेल अछि।

'गीत जे नै लिखल गेल' , 'की सुनाउ अहाँकेँ?', 'लोक किछु नहि करैए' आ 'तोरा गछने रही' क **मार्क्सवादी दृटिकोणसँ देखलापर** लागत जे कविक काजकेँ काव्यसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। जँ ई अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ

जाइत (जकर भरमार मैथिलीक सुखाएल मुख्यधाराक मिथिला ऐश्वर्य गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि।

'संचिकास्त', 'अहाँ कैं के चाही?', 'चुप्पी नहि सोहाइये', 'पाँती आइ जरूर लिखबै' कैं आब कने **विखण्डनवादी दृष्टिकोणसँ देखी**। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। कविक कथन स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक हेबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। गामसँ वंचित वर्ग पलायन कऽ सामाजिक लांछनकैं फेंकि दैत अछि मुदा सबल वर्गकैं गामक रुतबा मोन पड़ै छै जे संचिकास्तमे देखाइ पड़ैत अछि। 'पाँती आइ जरूर लिखबै' मे सेहो हाकिमक लाल-लाल आँखि देखि कऽ गाम घुरबाक मोन होइ छन्हि। 'अहाँ कैं के चाही?' मे आदर्श आ नैतिकताक अन्तक घोषणा अछि, शब्द जे चाही से भेटत, साँच आ झूठ- शब्द आ अर्थ ढेरी रास छै, मुदा आदर्श आ नैतिकता आउट ऑफ स्टॉक छै, एक दस्तखतमे सभ किछु बिकाउ छै मुदा तखनो आदर्श आ नैतिकता नै। से कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक हेबापर ई सभ प्रश्नचिन्ह लगबैत अछि। ।

'शिलालेख', शिलालेखमे मुदा उलटवासी अछि, लोक शिलालेखमे अपन कीर्ति लिखबै छथि मुदा कवि ओकरे शिलालेखमे ओकरे खूनक पिपासा लिखबऽ चाहै छथि! आब फेर कने कविताक **ऐतिहासिकतापर** जाउ। **जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भविष्यकालमे गेलापर** हम देखै छी जे ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जायत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतऽ खतम भऽ जायत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। कने आगाँ बढ़ब तँ लागत जे ई तँ

भगवानक विषयमे अछि, कवि हुनका भाभट समेटबाले कहै छथि, पूछै छथि जे की ओ हुनकर मृत्युक घोषणा कऽ देथि? नीत्सेक कथन जे भगवानक मृत्यु भऽ गेल छन्हि तकर अर्थ सेहो सएह रहै, भगवान एकटा आइडिया, एकटा सोच अछि जे पश्चिममे एनलाइटेनमेण्ट (ज्ञानोदय) क बादक वैज्ञानिक सोचक बाद ओइ आइडियाकेँ खतम केलक। भारतमे तँ पूर्व मीमांसा आ सांख्य पहिनहियेसँ भगवानक आइडियाकेँ नै मानैत अछि (मुदा दुनू आस्तिक दर्शन अछि माने वेद केँ मानैत अछि, मुदा भगवानकेँ नै। से अशोक नै चाहियो कऽ मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्पराक मूलधारासँ बहुत ठाम भिन्न छथि आ मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ लग। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल। विश्वामित्र गाथिन रहथि, गाथिनक पुत्र, गायत्रीक द्रष्टा। प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ

अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि। वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि। अशोकक 'शिलालेख ' मे अशोक एक डेग आगाँ बढ़ल छथि, हुनका सेहो बूझल छन्हि जे भगवानक मृत्योपरान्त पुनर्जन्म हेतन्हि। 'दू बून्द नोर' मे सेहो साँवरिया नहि अछि मृत्युक प्रतीक्षा, 'आऽ हम मरि जाइत छी!' जादू वास्तविकतवाद फेर अबैए, ओ अपनाकेँ बहैत देखि रहल छथि।

'असगर'क लय अद्भुत अछि। 'फेर कोनो विजुरी चमकल' , 'मोनक घण्टी', 'हमर कोनो नाम दऽ दे' आ 'उदास भोरक एक गीत' क **ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू। अशोक** अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि

सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक। मुदा अशोक ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि। ऐ प्रतीक सभसँ भरल कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि। **रूपवादी दृष्टिकोणसँ एकर पाठ करू।** भाषाक अनभुआर पक्षक कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। **स्फोट सिद्धांतक आधारपर** पाठ करू। **शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण** भेल अछि।

'एक राति', 'साँझ', 'नव सीन', 'सीप महक मोती', 'पाँचटा अनेरुआ कविता', 'कहिया धरि', 'रचना सँ पहिने', , 'दबकल कुकूर', 'बिन फ्रेमक तस्वीर', 'एक विन्दु: तीन बिम्ब' आ 'प्रेमक तीन आखर'केँ **अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ** देखी तँ अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि। **औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू,** वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि।

'शून्य' कविताक पाठ **विखण्डनवादी पद्धतिसँ करू। गणित ओकरा शून्य बनबै छै, मुदा थकनी जे भेल की उत्तर देब?** ई तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत।

दोसर चरण: अशोक चक्रव्यूहक बाद

दोसर चरणक कविता सभ **समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ** मांगैत अछि। 'फेर सँ', 'आब..', 'ब्रह्मोत्तर', 'मोछ', 'मुक्ति समारोह', 'आब किछु करू आचार्य!', 'एहि भ्रम मे नहि रहऽ', 'सन्दर्भ:चुनाव वर्षक',

'भोट', 'राजनीति आब महकि रहलैए', 'कहलनि तूफान अली', 'बुधियार', 'मनुक्ख धर्रोहि थिक कविता', 'विष', 'जिन्न', 'की भेल', 'ऋतु बदलि रहल अछि' कोनो ने कोनो समस्यापर आधारित अछि।

'जखन पियासे मरि जायत' चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि सोहाइये' केर सेक्वेल अछि। 'ऋतु बदलि रहल अछि' पर्यावरण तँ 'भोट' राजनीतिपर टिप्पणी अछि। मुदा की ऐ विषयवस्तुपर गद्यमे बहुत बेशी हम सभ नै पढ़ने छी? आ तैँ ई कविता सभ तँ सामान्य नै लागि रहल अछि?

'आठम अनुसूची मे मैथिली' फैजक पाकिस्तान निर्माणक बादक हाक्रोश 'ई ओ भोर तँ नै जकर सपना देखाओल गेल' मात्र लक्षित अर्थमे अछि, शब्दार्थ तँ व्यंग्यात्मक अछि।

'फेर सँ', आ 'चलि गेला महाप्रकाश' व्यक्तिगत मनविज्ञान आधारित अछि।

'दाँत' आ 'खायब आ नहायब' **नारीवादी दृष्टिकोणसँ पाठ मंगैत अछि। समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ करू।** कविता प्रथाक विरोधक कविता अछि। नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त हुअए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। आ तैँ जँ ऐ विषयपर दुनू कविता कमजोर अछि।

अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ अशोकक कविताक पाठ सेहो अहाँ कऽ सकै छी। बातक अप्रस्तुत उपमा, रूपक आ सादृश्य-विरोध कबीर सिखा गेल छथि। **रस सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ सेहो सम्भव।** विभाव सँ अनुभाव माने परिणाम बहार करै छथि कवि अशोक। से कवि ठाम-ठाम खास कऽ 'चक्रवूहमे प्रयुक्त केने छथि। 'चक्रव्यूहक' बाद कवि अशोक एत्तौ निराश करै छथि।

जे अशोक भगवानक मृत्युक बाद पुनर्जन्म धरि कविताकेँ आगाँ बढ़ेने रहथि से कवि अशोक चक्रव्यूहक बाद ठमकि गेला। मूलधाराक छद्म समालोचना कवि अशोककेँ मारि तँ नै देलक? मुदा कवि अशोकक पुनर्जन्म हएत, शीघ्र। आ चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि सोहाइये' केर सेक्वेल 'जखन पियासे मरि जायत' ओइ पुनर्जन्मक बीज रोपण कऽ देने अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.गजेन्द्र ठाकुर- कथाकार अशोक

गजेन्द्र ठाकुर

कथाकार अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दवाब

पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबश्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दइ छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथाकार अशोक

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

स्व. डॉ ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' केँ समर्पित त्रिकोणमे अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक ५-५ टा कथा छन्हि।

अशोकक ५ टा कथाक नाम छन्हि- हड्डी, हेयरपिन, अन्तिम शह, एकटा मुस्कुराइत आँखि आ खौंझ।

हड्डी: जागेशर, पत्नी सीमा, बेटी गुड़िया आ बेटा पप्पू। जागेशरकेँ ऑफिसमे देरी भऽ जाइ छै, डेरा ऑफिससँ दूर छै, लगमे महग भेटै छै। एकटा आत्महत्या भेलैहेँ बगलमे प्रायः दहेज लेल देल प्रतारणा, ओकील साहेबक पुतोहु नै सहि सकलि। ऐ मोहल्लामे सभकेँ डर लगै छै। जागेशरकेँ लागै छै जेना कण्ठमे हड्डी फँसि गेलैहेँ आ तेँ कथाक नाम हड्डी। नामकरणसँ लऽ कऽ सम्पूर्ण कथा सामान्य कोटिक अछि।

हेयरपिन: चन्दर आ उर्मिला। पहिल बेर बियाहक बाद दुनू दूर भेल अछि। उर्मिला पाँच दिन पहिले गाम गेल छथि। चन्दर पत्रिका उठबैए, मौगी सबहक फोटो जे पहिन्ने ओकरा पसिन्न नै पड़ै, आइ ओकरा आकृष्ट कऽ रहल छै। दूधबाली आबै छै, पहिने ओ खाली दूधे देखै छल मुदा आइ दूधबालीकेँ सेहो देखैए, पहिने किए नै ओकरा देखलक, दोसर कोठलीमे दूधबाली दूध राखैले जाइए, चन्दर दरबज्जा बन्द कऽ लै छै। दूधबालीकेँ ओकरासँ डर होइ छै मुदा ओ दू सय टाका खोंसि दै छै, दूधबाली सभ बिसरि जाइए आ घर छड़ा जेतै, से सोचैए, ओकरा गाम जेबाक छै, किछु दिन नै एतै। चन्दर बिहाड़िमे उधयाय लगैत अछि, बरखामे भीजऽ लगैत अछि- कथाकार ई दुनू वाक्य संभोग लेल प्रयुक्त केने छथि। फेर कथाकार कहै छथि जे आइ तातिल छिऐ, से आइ काजपर नै जायत, माने बुझि जाउ जे कथा आब उलटवासी दिस जायत। चिट्ठी सभ पढ़ैए चन्दर, ओइमे उर्मिलाकेँ देल रामानन्दक दू मास पुरना चिट्ठी पढ़ि चन्दर क्रोधमे अबैत अछि, ई प्रेमी अछि उर्मिलाक? तँ ओकर प्रेम फूसि। भोरमे उर्मिला रामानन्द संग आयलि। चन्दरकेँ तामस उठै छै, मुदा उर्मिला

सिनेमा स्टाइलमे कहैए जे ओ ओकर पिसियौत छिऐ, बियाहक दू मास पहिने कलकत्तामे ओकरा नोकरी भेटि गेल रहै, तेँ बियाहक काजमे नै आयल आ तेँ भेँट नै भेलै। चन्दरक शंका समाप्त, मुदा आब उर्मिलाक बेर एलै, ओकरा दोसर कोठलीमे हेयरपिन भेटलै, ओ हेयरपिन नै लगबैत अछि, तँ ई ककर छिऐ? ओ चन्दरसँ पुछैए। यएह हेयरपिन कथाक शीर्षक अछि, उर्मिलाक हाथमे हेयरपिन चिचिया रहल अछि, कथा समाप्त मुदा हम माने पाठक ठकायल सन अनुभव करै छी। दू सयमे जेना दूधबालीक रेट लागल तइपर ध्यान चलि जाइए, अरघनाइ मोश्किल। मुदा कथाकार चाहै छथि जे स्त्री-पुरुष चरित्रपर, पुरुख केन्द्रित चरित्र दिश पाठकक ध्यान खीची, हिप्पोक्रेसीपर खीची, मुदा से भऽ पाबि असम्भव भऽ गेल छन्हि।

अन्तिम शह: बिशेशर, ओकर स्त्री, बेटा कुशेशर आ पुतोहु फुलेशरी। बेटा कुशेशर रमरचना सङे पटना चलि गेलै रिक्शा चलबै छै। पन्द्रह साल पहिने बिशेशर फूल बाबू सँ दू सय टाका लेने रहय बेटी धनमंतीक बियाह लेल। बेटा कुशेशर छोटे रहै तखन, सुकरातीमे धरमपुरक पहलमानकेँ माटि चढ़ा देने रहै, गिरहथ पीठ ठोकने रहथिन्ह, खूब सर्रो खेलाइए, महीसपर राखि लेने रहथिन्ह, मुदा ओकरा बान्हल-छेकल नीक नै लगै। आ कुशेशर पटनासँ आबि गेलै, किरायाक रिक्शा ओ आब नै चलबै छै, अपन रिक्शा छै, ओकर यूनियन छै। फूलबाबू शतरंज खेला रहल छथि, सूद मूरक दूनासँ बेशी भेटि गेल छन्हि, मुदा सूद जोड़िये रहल छथि। कागज वापस नै करताह, मुदा करऽ पड़लन्हि, जमाना बदलि गेल छै, प्रेमचन्दक हिन्दी कथा 'सवा सेर गेहूँ' सँ बहुत आगाँ। ओम्हर शतरंजोमे मिसरजी 'अन्तिम शह' दऽ कऽ फूल बाबूकेँ हरा देलखिन्ह। आब फुलेशरकेँ हवेली-महर नै जाय पड़तै।

एकटा मुस्कुराइत आंखि: प्रोटैगोनिस्टक एकटा ट्यूशन पढ़ेनिहार मास्टर साहेबक स्मृति, जीवन तेना जीबू जेना अभिनय कऽ रहल छी, से

प्रोटैगोनिस्टकेँ लोकक मृत्युसँ बेशी जीवित लोकक दूर गेनाइ असहज करै छन्हि, मुदा अभिनयक बलेँ तकरा तोपि दइ छथि। मास्टर साहेबक फेरसँ बसुली ताकब आ झारि-पोछि अपन शिष्य लेल बजायब, बाँसुरीक उदास तान सुनि दुखीतमे दर्द बिसरि प्रोटैगोनिस्टक सूतब। आ आरो ढेर रास नोस्टालजिक गप प्रोटैगोनिस्टकेँ मोन पड़ै छन्हि।

खौंझ: घूर-धुआँ, रामनारायणक अठन्नी फेकि पानक ऑर्डर देब, रविशेखरक बैग लेने गामसँ आयब, बोर्ड ऑफिसक कोनो काज छै। घरमे कनियाँ सुधीरासँ किछु भेल छै से रामनारायण रविशेखर सङे डेरा दिस बिदा तँ होइए, मुदा लागै छै जेना पएरमे उक्खड़ि बान्हल होइ। फेर गामक नाटकक दुर्गतिक चर्चा, बाइली आमदनीकेँ खराप बुझबाक चर्चा, दूधक अभावमे नेबो चाह। फेर कथाकार कथाकेँ सम्हारऽ चाहलनि, एक्केटा मशहरी छन्हि, चौधरीजी सँ उधारी लऽ अनता, मुदा सुधीरा जोगा कऽ पचास टाका रखने छै, मशहरी लेल देतन्हि। आ सुखान्त, आ तखने बिजलीयो आबि गेलै, रविशेखरक कोठलीक पंखाक अबाज अबै छन्हि, आब बिन मशहरीयो कऽ ओकरा मच्छड़ नै लगतै।

काँच कथाक ऐ संग्रहमे '**एकटा मुस्कुराइत आंखि**' भविष्यक प्रति कने आश्वस्त करैत बुझाइत अछि।

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

स्व. सुशील झा केँ समर्पित *ओहि रातिक भोर* मे अशोकक १५ टा कथा छन्हि। ऐ पोथीक 'प्रसंगवश' लिखने छथि कुलानन्द मिश्र जे कथापाठमे बाधा उत्पन्न करैए, जेना कुला बाबू लिखै छथि जे "असामर्थ्य दूर होइत गेल--- अशोक जीक ७७क कथा 'बौका चुप छल' आ हुनक ८९ क कथा 'सरिसबक साग' केँ एक संग पढ़ि बूझल जा सकैछ।" मुदा से केलापर 'बौका चुप छल' उनटे 'सरिसबक साग' सँ बीस पड़ैत अछि, स्त्री-पुरुषक (जे दुनू ठाम पति-

पत्नी छथि) मनोविज्ञानमे 'बौका चुप छल' केर पति आ पत्नी दुनू अपन विराट रूप देखेने छथि, मुदा 'सरिसबक साग' केर पति-पत्नी चालू हिन्दी सीरियल सन व्यवहार केने छथि। ऐ संग्रहक कथा सभ एना अछि:

विरामसँ पहिने: समीर परीक्षा छोड़ि देलक, पिता सन्न छथिन। (परीक्षा) केन्द्रक घण्टा बाजल, परीक्षा शुरू हेबाक समय भेलै, ओ परीक्षा छोड़ने अछि, ओकरा बोखार भऽ गेलै। प्लॉट ठीक छल मुदा कथाकार अदहा कथा बितला धरि मुख्य मुद्दा पर नै आबि सकला, अन्तिम पैरामे कथा सम्हारबाक असफल प्रयास केलन्हि।

बौका चुप छल: डाकदर साहेबक कनियाँ गाम गेल छन्हि से इजोरिया गड़ि रहल छन्हि, विवरण कने नमड़ि गेल अछि, मुख्य प्लॉट शुरू होइए बौकाक साँप कटबासँ, डाक्टर साहेब ओत्तऽ बिदा होइ छथि। मुख्य कथा ओत्तऽ छै, बौका सभटा बुझियो कऽ चुप रहैत अछि, माटि काटऽमे पक्का ओस्ताद छल, मुदा बेमारी धऽ लेलकै, स्त्री रधिया देरी कऽ अबै, सेण्ट लगेने, मुदा बौका किछु नै पूछै जे के कतऽ सेण्ट लगेलक। रधिया कहै जे बिगड़ल छी तँ मारू मुदा बौका ओकर केश सोझरा दइ। ओकर दियादनी सेहो रधिया दिया बाजै मुदा बौका किछु नै बाजै। आ मुइल तँ बेमारी सँ नै, साँप कटलासँ। फेर रधियाक हाक्रोश, एतेक सुन्दर मनोविश्लेषणक बाद कथाकार द्वारा, डाक्टरकेँ रधिया कऽ देखि कऽ दोसर तकिया मोन पड़ि एलै, सँ कथाक समाप्ति करबाक आवश्यकता नै छलन्हि। कथाक आरम्भ आ अन्त दुनू ऐ कथाक कमजोरी अछि, आ एतेक सुन्दर कथाक सत्यानाश भऽ गेल अछि। मूलधाराक छद्म समीक्षाक परिणामक ई ज्वलंत उदाहरण अछि।

एकटा दोसर ब्रह्मा: मृत्युक बाद ब्रह्मभोज। छीतनक पाइ कियो ठकि लेलकै, मुदा लोक सभ कहै छै जे भोजक डरे ओ फूसि बजैए, से छीतन जमीनक एवजमे पाइ उठाओत आ भोज करत।

जहलमे टाङल मोन: मुख्य पात्र छथि तमसाह असित ओकर संगी शान्त स्वभावक किशोर आ असितक बहिन मीना। असित जेलमे छै आब एमरजेंसीक बादे छुटतै, असितक पिताक चिट्ठी। मीनाक बियाह असितक परोच्छेमे करऽ पड़ि रहल छै। फेर बैकफ्लैश, मीना आ किशोर, मीना चंचल, टिकुला तोड़ैबाली। मीना एक दिन भैया कहनाइ शुरू केलकै, किशोरकेँ नै नीक लगलै। बियाकक किछुए दिन छै। कथा समाप्त।

एकटा चौक माने चण्डीनाथ: एकटा चौकक विवरण। फेर ओइ चौकपर आबाजाही करैबला चण्डीनाथक विवरण। चण्डीनाथक माय सपता-विपताक कथा कहि, चूल्हा-चेकी बना गूड़ा-खुद्दीक इन्तजाम कऽ लइ छथिन, आब चण्डीनाथक कनियों बाहर निकलऽ लागल छथिन, हँ बाल-बच्चा नै छन्हि। इमरजेंसीमे एक बेर टिकट चेकिङमे जेल गेला, अगत्ती छौड़ा सभ उड़ा देलकन्हि जे नसबन्दी कऽ देलकन्हि, कनियो पुछि देलकन्हि तँ ओकरा मारबो केलखिन्ह। लोकक मुँह बन्द करबा लेल बच्चा आवश्यक छन्हि, मुदा से अखन धरि सम्भव नै भेल छन्हि, आब मुखियामे ठाढ़ हेता। कथा समाप्त।

ओ मनुक्ख भऽ गेल: *जिनका अहाँ आइ कथाकार अशोक कहै छियन्हि तकर बीजारोपण ऐ कथामे भेटत।* नॉर्मल कमाइ-खटाइबला मनुक्ख बनबाक कथा, जे जीवन खतम हेबाक कथा अछि, हमर संग छोड़बाक कथा अछि, हम बहुत प्रयास केलौं जे तूँ मनुक्ख बनबासँ बचि जाह मुदा पूर्णता तोरा नीक लगै छह, किछु रिक्तता हम रखने रही जइसँ तोहर लेखन आ चिन्तनमे प्रवाह रहतह। नीलू तोहर जीवनमे आबि कऽ दोसराक भऽ गेल कारण ओकरा मनुक्खक भूख छलै आ ओइ समयमे तूँ ओकरा मनुखाह तृप्ति नै दऽ सकलह, कारण तोरामे किछु रिक्त छलह आ तेँ तोहर मानस-प्रेयसी मीनूक जन्म भेलै, मुदा हमरा बुझल अछि जे दुनूमे कोनो अन्तर नै छै। मीनू जीवन छलि ओ कहियो किछु आर नै भऽ सकैत छलि। छात्रावास घटना, कोनो जूनियर

विद्यार्थीसँ लगाव, छोट भाइ सन, तोरा छोट भाइ नै रहौ तँ। मुदा लोकक नाजायज सम्बन्धक आरोप पर तोहर ओ बलात् हँसी, अस्वस्थ मस्तिष्कक उपज, से तूँ सोचलेँ मुदा आरोपकेँ फूसि कहियो नै कहि सकलेँ। हमरा बूझल अछि जे ओ हँसी तोरा लेल कोनो शब्द गढ़ैत छल मुदा अनका लेल एक्के टा अर्थ रखैत छलै, आ ओही अर्थक मूल्यपर तोहर अधिकार बन्हकी रहि गेल ओइठाम, तोरा दुनूक बीच चुप्पीक देबाल ठाढ़ भऽ गेल रहय। बाजा-भुक्की बन्द भेनाइ चिन्तनकेँ गति दैत छै। आइ तोरा लग स्त्री, घर, रुपैया सभ किछु छौ मुदा तूँ कमजोर भऽ गेल छेँ। नीलू आब मरि गेल अछि कहनिहार तूँ सेहो आब मरि गेल छेँ आ से हमहीं टा देखि रहल छियौ, कारण हम नै मरल छी।

तेसर प्रश्न: अति सामान्य कोटिक कथा। रामप्रवेश चौधरी रिटायर कऽ गाम एला, बेटा कृष्णकान्त बेरोजगार, भागि कऽ कलकत्ता गेल, खूब कमेलक। बहिनक बियाह गनि कऽ केलक, रामप्रवेश डाकपर जमीन कीनऽ लगला, हलाल कएल माउस खाय लगला। मुदा पाइ तँ पठबन्हि कृष्णकान्त मुदा गाम नै अबैत रहन्हि,, बहीनक बियाहोमे नै एलन्हि। आ जहिया एलन्हि तँ पाछू सी.बी.आइ.क एरेस्ट वारण्ट संगे एलन्हि, नकली दवाइ बनबैत छला।

डेरबुक: एकटा आर मेडियोकर कथा। सुभाष, आमक कलम, सुभाष आ मंजूमे आमक टिकुलाले झगड़ा होइ छै। मंजूक बियाह ओही साल हेतै। फेर सुभाष अनचोक्के ओकरा भरि पाँज लऽ कऽ गाछक पाछाँ जाइए आकि तेजुआ आ शंकर आबि जाइ छै, लाठी बजरै छै। पंचैती। गामसँ निकालबाक आदेश, सुभाष पड़ा जाइए। दस बरखक बाद आइ घुरल अछि, माय मरि गेलै, भातिज छै। भैया कहै छै जे मंजू बादमे सुभाषक पक्षमे बाजलि, ओ सुभाषसँ बियाह करत, लोक सुभाषकेँ ताकैले गेलै, सुभाष नै भेटलै। मंजूक बियाह टूटि गेलै। आ आब अहाँ बुझिये गेल हेबै जे भौजी मंजूए हेतै, आ सएह छै।

नचनियाँ: आब कन-मने अशोक अपन रङमे आबि रहल छथि।

नैनीताल, रजनी शर्मा, जे अछि प्रोटैगोनिस्ट आनन्दक सीतामढ़ीमे कॉलेजक सङी, मुदा आब एकटा नपुंसक दोबर उमेर बलासँ बियाहलि, कारण दहेज। ओकरासँ आनन्दक नैनीताल होटलमे भेंट। आ ओतऽ छल पूर्णियाँक बेरा सोहन मण्डल, दुखी दासक बिदापत मण्डलीक, दुखी दासक मृत्यु, बिदापत नाचक मृत्यु आ सोहन आबि गेल नैनीताल। मेडियोकर कथा होइत होइत बचि गेल ई। अन्तिम आठ पाँतीमे कथाकार कथा सम्हारबाक प्रयास केलन्हि, आ सम्हारियो लेलन्हि। सोहन आ रजनी बियाह कऽ लेलक, सोहन नृत्य सिखैए, प्रोटैगोनिस्टसँ पटनामे भेँट करय एलन्हि दुनू गोटे।

मिर्जा साहब: संग्रहक दसम कथा अछि ई। कथा नै सम्हरलनि। सुशीलक कथा सभ मोन पड़ि गेल, अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (विदेह पेटारमे उपलब्ध) मे संकलित 'मस्जिद' आ आन कथा, उत्कृष्ट, खोंइचा छोड़ाओल, कोनो हड़बरी नै। मुदा मिर्जा साहेब मेडियोकर, नीक प्लॉटक अछैत। मिर्जा साहेबक बेगम नावाब परिवारक, माय मरि गेलखिन्ह, पिता पोसलखिन्ह। मामा मामी सभ पाकिस्तानमे, ओतुक्का चर्चा करैत रहैत छली। से मिर्जा साहेबकेँ नै नीक लागनि, फेर पिताक मृत्युक बाद बेगमक नैहरि बुझू पाकिस्तान भऽ गेलन्हि। बियाह पुरैले बेटा सलीमक संग गेली पाकिस्तान। तही बीच बझलै भारत-पाकिस्तानक युद्ध जइमे बहीनक पतिक मृत्यु भऽ गेलन्हि, से तमसा कऽ चिट्ठी लिखलन्हि भारतक विरुद्ध मिर्जा साहेबकेँ। चिट्ठी पत्री फेर शुरु भेल जखन सलीम ओतऽ डॉक्टर बनि गेल, आ जखन सलीम संगे बेगम घुरली तँ मिर्जा साहेबक बम्बै दंगामे मृत्यु भऽ गेलन्हि। प्लॉटे-प्लॉट, कथाक प्रारम्भ आशा जगेने छल, फ्रायडक पद्धतिसँ स्वप्नक विश्लेषण करऽ लागल छलौं। मुदा से धएले रहि गेल।

सरोकार: स्वांग धरैबला संगी सुरेश, बादमे ओकरा पत्नी संग चन्द्रनाथ आ ओकर साथी सब द्वारा सामूहिक बलात्कारक बाद न्याय नै भेटब

आ बलात्कारी नेता जे छल एम.पी. एलेक्शनक उम्मेदवार चन्द्रनाथ, तकर हत्या सुरेश द्वारा। अमिताभ बच्चनक आखिरी रास्ताक पीअर कपीश रूप। सभ किछु मेडियोकर, मुदा अन्तिम आठ पाँतीमे कथाकार कथाकेँ कने सम्हारने छथि। सुरेशक बेटा परेश आब प्रोटैगोनिस्टक संग रहै छन्हि, ओहने नटकिया, स्वांग निकालैमे ओस्ताज, मुदा चन्द्रनाथ ओकरा नै जानि केना बेशी मोन छै, ओकर नेता बला स्टाइलक खूब नीक जकाँ स्वांग धरैए।

जहिया सुरुज नहि उगलै: जोगियाक कथा, जोगियाक चारूकातक समाजक कथा। बौआसीनक कथा। जोगियाक बाप मरि गेलै, माय दोसर टोलमे सम्बन्ध कऽ लेने छै, आंगनमे मौसा मौसी रहै छै आ ओ रहैए गिरहत लग, जतऽ बौआसीनकेँ बाँझ हेबाक कलंक दऽ मारि देल जाइ छै, छोटका गिरहत दोसर बिआह करत। ओ जोगियाकेँ गोहार केनै रहै मुक्ति दिआबय लेल। जगियाक मायकेँ मुक्ति भेटलै मुदा बौआसीनकेँ नै। छोटका गिरहत बौआसीनकेँ डाक्टर लग नै लऽ जाइ छै, ओकरा बच्चा नै होइ छै तँ मानि लेल गेल जे बौआसीनेमे गरबड़ी हेतै, बा कोनो आर कारण। कथामे दू समाजक बात व्यवहार आयल अछि, दहेज आयल अछि, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, रामविलास साहु, रामानन्द मण्डल, संतोष कुमार राय 'बटोही', कपिलेश्वर राउत, सन्दीप कुमार साफी, उमेश पासवान, उमेश मण्डल, किशन कारीगर, राम चन्द्र राय,लालदेव महतो, आ नन्द विलास रायक विशाल आकाश देखलाक बाद ई सभ झुझुआन लागि रहल अछि।

सरिसवक साग: एकटा आर मेडियोकर कथा। प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ जखन आयल रहथिन्ह तँ डेरायल रहै छलखिन्ह। मुदा आब से नै छै। तरकारीबला अपन दुखनामा सुना कऽ महग बेचैए, ठकैए प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ केँ।

प्रोटैगोनिस्ट ईर्ष्यालु होइ छथि, कनियाँक तरकारीबलासँ हँसि कऽ गप करब हुनका पसिन्न नै मुदा कनियाँ कहै छथिन्ह जे हँसि कऽ गप्प केलासँ जोखो ठीक दै छन्हि आ सस्त सेहो!

धरती गोल छै: मास्कोमे ट्रेनिङ, मनोज, सुधाकान्त आ तपन। गप सरक्का। पी कऽ पार्कमे सूति रहै जाइए। कथाकार अशोकक खाहिश रहै छन्हि जे अन्त कने चौकाबै बला होइ, से एकटा बूढ़ स्त्रीकेँ आनै छथि, ओ रूसी बाजैए आ तपनक माथपर हाथ राखैए, तपनकेँ माय सन लगै छै, स्नेहिल, जेना ओ भेस बदलि कऽ आबि गेल होइ। मुदा अन्त कोनो खास नै लागि रहल अछि।

ओहि रातिक भोर: टाइटल कथा। दू सङी, हीरा ब्राह्मणक पानक दोकान, पुलकित अमातक चाहक दोकान, मुखिया एलेक्शनमे सुबोध मिसर ब्राह्मण आ रैमाक सत्तन मण्डल ठाढ़ रहै, जे पुलकितक जातिक रहै!! भऽ सकैए रैमामे मण्डल टाइटिल अमातक होइत हेतै। दुनू सङीमे एलेक्शनेमे झगड़ा भेलै, सभटा पाइ कौड़ी केस मोकदमामे जखन खतम भऽ गेलै तखन बुइध एलै। फेर अन्तकेँ रोमांचक बनेबाक फेरमे राति एगारह बजे छाहक रूपमे पुलकित केँ आनै छथि कथाकार, हीरा कहै छै जे मारमे तँ फेर मारि ले, मुदा फेर दुनू गरा मिलि लइए।

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

'सगर राति दीप जरय'क सभ सहभागी कें जे कथा सुनलनि आ विचार केलनि' केँ समर्पित मातबरमे अशोकक १८ टा कथा छन्हि। 'एकसँ एकैस' सँ ई प्रारम्भ होइत अछि जकर लेखक छथि गप-सरक्कानुमा मूलधाराक आलोचना लेखक मोहन भारद्वाज। अशोकक समाज अध्ययन हुनका अचम्भित करै छन्हि, मूलाधाराक लोककेँ हेबाको चाही, दुनू (अगड़ा-पिछड़ा) समाजक अध्ययन! अशोक दुनू पक्ष राखै छथि, मुदा बैलेंस निबन्धमे

बनाओल जाइ छी, कथाकारकेँ अपनापर ई दवाब लेब अनुचित। फेर ओ अशोकक कथाकेँ मैथिल बनावटिसँ भूषित करैत छथि, आ मैथिल बुनावटिक दू टा लक्षण ओ घोषित करैत छथि- पहिल खिसक्कड़ बनि कऽ आ दोसर यथार्थ वर्णनक विस्तारमे जा कऽ! दोसर लक्षणकेँ ओ मैथिली (मैथिल नै मैथिली) कथा बनबाक शर्त अगिले पैराग्राफमे घोषित करैत छथि। तखन तँ दुनियाँमे किछु गएर मैथिल भेबे नै कएल। ऐ तरहक गप्प सरक्काबला समालोचनाकेँ हमरा गाममे बकथोथी कहल जाइ छै आ नीक नै मानल जाइ छै। फेर ओ अशोककेँ विकासमे विश्वास करैबला आ यथार्थवादी (तकर विस्तार करैत ओ जातीय आ धार्मिक मानसिकताकेँ सेहो यथार्थवादी मानसिकता कहैत छथि!) कहै छथि। ऐ तरहक विचारकेँ आइ काल्हि पाश्चात्य जगतमे 'वोक' कहल जाइ छै आ ओत्तौ तकरा नीक नै मानल जाइ छै। समानान्तर धाराक कथाकार लोकनिक 'सगर राति दीप जरय' मे आगमन पूर्व अही तरहक समालोचनाक जमाना रहै, आ कथापर अही तरहसँ विचार 'सगर राति दीप जरय' मे होइत रहै।

आब आउ मातबरक कथा सभपर विचार करी।

मातबर: 'ओहि रातिक भोर' कथा संग्रहक टाइटल कथा संग्रहक अन्तिम कथा छल। मातबर अछि पहिल कथा 'मातबर' कथा संग्रहक। महराज जी छथि नेटवर्किङ चीफ, आइ काल्हि ऐ तरहक लोक रहै छै जे सिंगल विण्डो सर्विस दइ छै। पाइ कौड़ी बला पोस्टिङ लेल महराज जीसँ बात करत 'ओ', साहेब हरामी छै तेहेन तेहेन काज दइ छै जे एक्को भूरबला पाइक आमदनी नै होइ छै, कने महराज जी ओकरो रगड़तै। सभक मजमा महराज जी ऐठाम लागै छै, पीबि-पाबि कऽ गप-सरक्का करै जाइए, दारू सङे दू-तीन टा चखनाक विवरण कथाकार दइ छथि, उसनल अण्डा आदि। 'ओ' जइ असल काजले गेल रहय तकर की भेलै? घर घुरती कालमे मारि खाइसँ बचि

जाइए, प्रायः चोर सभ चीन्हि गेलै। घरमे बेटा आ पत्नी सेहो तमसायल छै। खिस्सा खतम। अति सामान्य कोटिक कथा।

दसखत: एकटा आइ.ए.एस. अफसरक कथा, आंगुरक विवरणसँ प्रारम्भ भऽ औंठाक विवरण धरि। भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता आ लालफीताशाही सभटा रिपोर्ताज सन वर्णित अछि। अन्तमे औंठा काज केनाइ बन्द भऽ जाइ छन्हि, अमेरिका इलाजले जेता, मुदा बिनु दसखते पासपोर्ट केना बनतन्हि, आ ओहीसँ कथाक शर्षक आयल अछि।

कोठा: मंत्रीजीक कथा, रिपोर्ताज। दसखतक आइ.ए.एस. केर रिपोर्ताज सन कथाकेँ आगाँ लऽ जाइ छथि कथाकार। उत्कृष्ट कथा।

सहज-असहज: कथाकार अशोक आब रङमे आबि रहल छथि। कामेशर हाकिम बनि गेल, नग्र आबि गेल, गोटी खा कऽ सुतैए, खाइमे परहेज छै, सफलताक मूल्य चुकबऽ पड़ै छै। राधेश्यामक पढ़ाइ छुटि गेलै मुदा ओ कामेशरक बच्चा सभ लेल कॉमिक्सक सुपरमैन अछि।

जिनिस: पति-पत्नीक घर गृहस्थी, टोना-मानी। सङे ऑफिसक झमेल इटैलिक्समे कथाक बीच-बीचमे, तीन बेर। बाइली आमदनीक हिस्सक, पत्नीकेँ उलहन आ पत्नीक उतारा।

हिस्सक: पाइक उद्योग, पाइ कमेबाक हिस्सक। नीक विश्लेषण। एकरा हास्य-व्यंग्य कथाक श्रेणीमे राखि सकै छी। चेखवक कथा सन किछु किछु अनुभव हएत। प्रोटैगोनिस्टकेँ हाकिम कहै छन्हि जे अहाँ गपशप मारि सकै छी, पाइक उद्योग सम्हारबाक टैलेण्ट अहाँमे नै अछि।

भोज: श्राद्धक भोज उपनयनक एक साल बाद धरि नै खा सकै छी। भोजक मैथिल विमर्श, प्रोटैगोनिस्ट ब्राह्मण बालकक नजरिसँ, बालकथा श्रेणीक

उत्कृष्ट कथा।

खुशीक प्रश्न: ईहो बाल मनोविज्ञान आधारित प्रोटैगोनिस्ट बालकक नजरिसँ अपन परिवारक कथा अछि। बालकथा श्रेणीक उत्कृष्ट कथा।

तानपूरा:शास्त्रीय संगीतकेँ भीमसेन जोशी जे ग्लैमर देलन्हि तकर साक्षी अछि हुनकर मर्सीडीज कार आ पछाति भेटल भारत रत्न सम्मान। भारत रत्न सम्मान ग्रहण करैत काल हुनकर ई वक्तव्य जे ओ ई सम्मान संगीतक गुरु लोकनिक प्रतिनिधिक रूपमे लऽ रहल छथि, गरिमापूर्ण छल। वएह संगीत रक्षक लोकनि जे वेस्टर्न क्लैसिकलक सोझाँ दूटा भारतीय क्लैसिकल, हिन्दुस्तानी आ कर्नाटक शैली केँ अपन पेट काटि कऽ जीवित राखलन्हि। अही तरहक जीविकाक मरि जेबाक कथा अछि तानपूरा। शरदिन्दु चौधरी ऑफसेट मशीन एलाक बाद ब्लॉक प्रिण्टिंग क्षेत्रक हालतिपर अपना शैलीमे संस्मरण लिखने छथि तँ जगदानन्द झा 'मनु' धातुक बासन एलाक बाद माटिक बासन बनेनिहारक स्थितिपर 'माटिक बासन' बालकथा लिखने छथि।

'**हरसिंहदेवी**' पञ्जी प्रथाक दुष्परिणामपर कथा अछि मुदा विषय वस्तु मात्र नीक अछि, कथा साधारण अछि, निबन्धात्मक।

'**सीवन रजकक हितचिन्तक**' मे जाति आयल अछि, राजनीति आयल अछि, सीवन रजकक बैंकक नोकरी अयल अछि। अन्तमे आयल '..बाड़ी-झाड़ीसँ उखाड़ि कऽ गमलामे रोपि देलथिन..' सेहो कथाकेँ सम्हारि नै सकल।

'महतो' सेहो जातिक कथा थिक, सर्वसाधारण नोकरिहारा कर्मचारी, मालीक पदपर कार्यरत महतोक कथा थिक। कूट शब्दावली, घूसक पर्सेण्टेजक, महतोक ऑफिसक अलाबे अफसर सभक घरोपर काज

करब, ऑफिसक गप्प सरक्का, राजनीति, खिस्सा खतम। अशोकसँ रजक आ महतोक नामपर लिखल कथासँ बेशी आशा छल मुदा ई भाँज पुरायब सन लागि रहल अछि।

'सनेश'मे एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर पासवानजी बच्चाक ट्यूशन छोड़ि देलापर पासवानजी द्वारा दिवाकर रविदासकेँ खूब गाड़ि पढ़ल जेबाक चर्चा अछि। किछु निबन्धात्मक दलित विमर्श आयल अछि। फेर अन्तमे कथाकेँ टर्न देबा लेल प्रोटैगोनिस्टक स्टीलक औंठी दिवाकर रविदास द्वारा मांगब आ ओही नापक सोनाक ओंठी आपस देब वर्णित अछि, ऐसँ मात्र कने नाटकीयता आयल अछि, ओ. हेनरीक कथा 'द गिफ्ट ऑफ द मैगी' केर पीअर छाह सन अछि ई कथा।

'राग-विराग' मे पाइबला आ बुधियार लोक सभ द्वारा हुहकारी आ बोलारो दऽ कऽ केना सोझ लोककेँ ठकल जाइ छै ओइपर ई कथा अछि, आ सामान्यसँ ऊपर श्रेणीक अछि।

'आबेस' एकटा मेडियोकर कथा अछि, मायक आबेस वर्णित अछि मुदा किशोर मनोविज्ञानकेँ कथामे दबा देल गेल, आ कथा एकपक्षीय भऽ गेल अछि।

'बूढ़ा जीवैत रहलाह' कथा ओ कथा अछि जे अशोकक वैशिष्ट्य छन्हि जइपर हुनकर एक्सपर्टाइज छन्हि। मुदा मूलधाराक भोथ समालोचनाक दोष अछि जे ओ हिनका तकर भान नै हुअय देलकन्हि, मुदा ओ एकरा चिन्हलन्हि आ अन्तिम कथा संग्रहमे ऐ तरहक आर कथा लिखलन्हि। बूढ़केँ कोनो बियाह-तियाह नै करबाक छन्हि, से ओ अठारह बरखक सँ बेशी बयसक स्त्रीसँ बियाह नै करता, अठारह बर्खक कथा एबो केलन्हि, तँ दोसर कमी निकालि देलन्हि, मुदा घटक सभ लेल जे शर्बत घोरैक परम्परा छै तइसँ बेशी

आवभगत ओ करै छथि। स्त्री आ तीन-तीन टा बेटाक मरलोपर ओ हँसै छथि, कारण ओ जीबऽ चाहै छथि। मुदा कुहरैतो हेता, असगरम, आ कुहरला शिष्य सत्तन लग।

'प्रतिलोम' सेहो एकटा मेडियोकर कथा अछि, जइमे गामक पिहकारी, श्राद्ध-बाध, जाति-विमर्श सभटा एक्के कथामे मिज्झर भऽ गेल अछि, निश्चिन्तीसँ फरिछेबाक अवश्यकता छल।

'राँड़' सामान्यसँ ऊपरक कथा अछि, 'बूढ़ा जीवैत रहलाह' कथा सन। ऐ कथामे तीनटा फ्लैश प्वाइंट अछि, पहिल मामीक मनीषसँ पूछब जे सिराजुद्दीन सत्ते खराप छै आ जँ ओ नीक लोक छै तँ मनीष पिताजीकेँ से किए नै बुझा सकल? दोसर फ्लैश प्वाइंट छै मामीक पूछब जे काज कऽ कय पाइ कमेनाइ खराप छिऐ? आ तेसर पतिक मृत्युक बादो मामीक नीक पहिरबा-ओढ़बाक मनीष द्वारा प्रशंसा। मनीष मामीकेँ ऐ रूपमे देखि चौंकल, ई लिखलासँ कथा शिल्प रूपमे कमजोर भेल, मामीक एतेक दृढ़ चरित्र देखेलाक बाद जँ मनीष हुनका उजरा नूआमे देखितैन्ह तखन ओकरा चौंकेबाक चाही छल, एत्तऽ नाटकीयताक जरूरति छलै, से कथाकार चूकि गेला। दूटा फ्लैश प्वाइण्टक बाद ई तेसर फ्लैश प्वाइण्ट कने झुझुआन लागल। ई मामीक कथा छल, प्रारम्भ सेहो ठीक अछि मुदा बैकफ्लैशक पूर्व आ प्रारम्भक बीच कोनो क्रम बा डैश-क्रॉश देल जा सकै छल, आ दोसर शिल्पगत विधिक प्रयोगसँ गामक दोसर विधवाक विवरण देल जाइत तँ ई उत्कृष्ट कथाक श्रेणीमे आबि जाइत।

डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

दीदा (स्व. गीता देवी) कैँ समर्पित डैडीगाममे अशोकक १५ टा कथा छन्हि।

'लाथ' अछि लहकदार कुरताक कथा, अति सामान्य कोटिक ई कथा अछि। दैनन्दिनी श्रेणीक।

'छल' कथाकार अशोकक सर्वश्रेष्ठ कथा अछि, ई अति उच्च कोटिक कथा अछि जकर सामान्य कोटिक अंग्रेजी अनुवाद विद्यानन्द झा केने छथि [The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor, Harper Collins, 2022) मे संगृहीत], मुदा कथे ततेे सशक्त छै जे तहू अनुवादमे जान आबि गेल छै। मनोविज्ञान, अहाँ जकर अभिनय करब, तकर आत्मा अहाँमे पैसि जायत, उगनाक बिछोहमे विद्यापतिक अभिनय करू, अहाँकेँ बिन ग्लिसरीन लगेने नोर चुअय लागत। भोली झा, चुस्त-चलाक, मुदा एहने आत्मा ओकरामे पैसि गेलै।

'स्वाधीन' कथा मैरिटल रेप आधारित कथा अछि, मुदा कथाकार समाजशास्त्रक समस्याक टॉपिकपर लिखबामे व्यस्त भऽ गेला, तेँ कथा सामान्य अछि।

'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि' सेहो समसामयिक समस्याक आधारपर रचित अछि, मुदा ने सएह आबि सकल आ ने कथे सोझरायल।

'डैडीगाम' टाइटल कथा अछि, 'ओहि रातिक भोर' आ 'मातबर' सन अशोक अप्पन सभसँ दुलारू कथाकेँ टाइटल कथा बनबै छथि, सोंगर पर सोंगर लगबै छथि मुदा तीनू टाइटल कथा सामान्ये कोटिक अछि। डैडीगाम मे विकास आ झंझमंझ आदिक सामान्य कथाक्रम अछि।

'राग' सेहो हिन्दू-मुस्लिम दोस्तक सामान्य कथा अछि, मासुपर गपशप।

'लेमन आइसक्रीम' उच्चकोटिक कथा अछि, कथाकार अशोकक कथा। प्रोटैगोनिस्टक कथा, माय नीक बनबनि तँ कहथिन, होटल सन बनल अछि। मुदा पत्नी मीरा कैं होटल पसिन्न नै। गुजरि गेली। बेटा-बेटी जावत संग रहन्हि प्रोटैगोनिस्टकैं कनियों खेनाइ बनेनाइ नीक नै लागनि। बेटा गाम गेलन्हि, सभ देखैले स्नेहसँ जुमि गेल, हुनकर मायक प्रशंसा, हुनकर प्रशंसा। आ फेर..

'उमकी' उत्कृष्ट कथा होइत होइत बचि गेल। सेक्सिस्ट आचरणपर बहुत रास तथ्य आयल, अन्त सेहो नीक। 'अहाँक संगी तऽ ओहिना हर घड़ी नचबैते रहै छथि। फूटसँ नाच की देखेबनि।' केर संग किछु सस्पेंस। मुदा किछु मिसिंग अछि..

'मनसूबा' मे टुटैत परिवार आ भावनाक खिस्सा कहल गेल अछि। कृत्रिम जिनगीमे भावनाक, सामाजिक संस्थाक कोनो स्थान नै, कथाकार विषयक प्रति क्रूर भऽ गेल छथि आ तैं कथा सामान्य कोटिक भऽ गेल अछि।

'अभयक बेटा कैं दूटा दाँत भेलनि' उत्कृष्ट कोटिक कथा अछि, गाम रहबा जोग नै रहलै, मुदा..

'खुशीक नाम जीवन' मे कन्हैया बाबूक बेटा बियाह लेल तैयार भऽ गेलनि, ओ खुश छथि, मैथिल ब्राह्मण लड़का आ केरलक नायर लड़की। केरलक कनियाँ अपने सभ सन छै, सँ समाप्त। सामान्य कोटिक कथा।

'टीस' केस फाइलसँ लेल कथासन, केसो बहुत सामान्य, पति द्वारा पत्नीक हस्ताक्षर कऽ गबन करब, पत्नीक सकारब, जेल। कथो तैं सामान्य कोटिक।

'छुट्टीक एक दिन' कथा अछि मैथिली लेखन आ पाठन समस्यापर, किछु एम्हर-ओम्हरक गप, अन्तर्जातीय प्रेम विवाह, आ अन्तमे कहबी जे झगड़ाउ लोककैं ओल कबकब लगै छै, अभिनवकैं नै लगतै। सामान्य कोटिक

निबन्धात्मक कथा।

'गामक कातक हाइवे' चकरका सड़क सभक कथा अछि। उमेश पासवान लिखै छथि 'मौतक चौराहा बनल अछि एन.एच. भुतहा मोड़' (भुतहा मोड़, वर्णित रस, २०१२, साहित्य अकादेमी मैथिली युवा पुरस्कारसँ पुरस्कृत पोथी)। एन.एच. मे ठामे-ठाम चौराहा सभक नाम आब भुतहा मोड़ छै, कारण ओतऽ डिजाइनक, फ्लाइओवरक कमीक कारण होइत दुर्घटना। आ हमहूँ लिखने रहौं ऐ विषय पर एकटा कविता:

आ तखन जे देखबा जोग रहितैक शान अपन गामक !

आ देखबा जोग रहितैक शान एहि छह लेन बला सड़कक सेहो !

हमरो सभक अंगपर रहितए जे वस्त्र

ओहने वस्त्र

जेहन ओहि लाल कारमे बैसल बच्चाक रहए !

माए!
हमरा तँ लगैत रहैए जे

अपन गामक ई सड़क

ओहि लाल परदेशीक ओहि लाल कारसँ बेशी अछि लग

दुनू टा लगैए बिदेशी सन

(गजेन्द्र ठाकुर, बड़का सड़क छह लेन बला, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, २००९)

गोला मरि गेल, पिचड़ा भऽ गेल, गामकेँ गीड़ऽ चाहैए ई एन.एच.। सौंसे गामक कुकुड़ मरल जा रहल अछि। कथा उच्च कोटिक रिपोर्ताज अछि।

'एना भऽ कऽ कियो' बोरोलीन, बोरोप्लस, श्वेत श्याम टी.भी., रिपोर्ताज नोस्टालजिक, मुदा फेर चौधरी साहेबक वर्णन शुरू, निरुद्देश्य बढ़ैत कथा, सुन्दर लगबाक धुनि, महिला सभक बड़ाइ, फेर एकटा जूनियरक तमसायब आ आँखि खुजब चौधरीजीक। निरुद्देश्य कथा समाप्त, सामान्य कोटिक हास्यक अन्त।

कथाकार अशोक कम कथा लिखने छथि आ तेँ उच्च कोटिक कथा सेहो कम्मे छन्हि। कथाकार अशोकक विशेषता अछि जे ओ आधुनिक सामाजिक समस्याक प्रति सचेत छथि, विषयमे विविधता अनै छथि, मनोविज्ञान केँ भावनाकेँ नीक चीर-फाड़ करै छथि। मुदा विषयकेँ फरिछेबाक कला बेसी काल मारि खाइत छन्हि बेसी काल हुनकर पंचलाइन-एण्डिंगक इच्छाक कारण, कारण ओ पंचलाइन कखनो काल बहुत सामान्य, आ पुनरुक्ति युक्त लगैत अछि। कथाकार सुशीलक माँजल फरिछेबाक कला आ कथा लिखबाक कला, नव आधुनिक कथा लिखबाक कला बेर-बेर मोन पड़ैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.गजेन्द्र ठाकुर- कथेतर गद्यक लेखक अशोक

गजेन्द्र ठाकुर

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दवाब पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय

कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबश्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दइ छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

अशोकक कथेतर गद्यमे छन्हि मैथिल आँखि (२००७), संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७), कथाक उपन्यासःउपन्यासक कथा (२०१२), आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३), बात-विचार (आलोचना) (२०१५), नीक दिनक

बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह)(२०१८), राजमोहन झा (विनिबन्ध, २०१९) आ कथा-पाठ (२०२२)। संगमे किछु विदेह आ अन्यत्र छिड़िआयल समालोचना आ आन कथेतर गद्य सेहो छन्हि जेना 'बनैत कम बिगड़ैत बेसी' (सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' पर), सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत, रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत, केदार नाथ चौधरीक उपन्यास, शरदिन्दुजी आदि।

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) मे अशोक साक्षात्कार लेने छथि राजमोहन झा, धूमकेतु, कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजसँ। एक्को गोटेसँ ओ असहज प्रश्न नै पूछि सकला, राजमोहन झा द्वारा सुभाष चन्द्र यादवक राजकमल चौधरी मोनोग्राफ प्रसंगमे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल कएल कम्प्रोमाइज हुअय *(देखू हमर पोथी नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, गजेन्द्र ठाकुर, २०२२ विदेह आर्काइवमे उपलब्ध)*, धूमकेतुक लाल झण्डाक सोंगर लऽ साहित्य रचब हुअय बा मोहन भारद्वाजक मैथिल ब्राह्मणक संस्कार गीतकेँ मिथिलाक संस्कार गीत कहब *(देखू हुनकर सम्पादित मैथिली अकादेमीसँ प्रकाशित पोथी। बादमे जा कऽ उमेश मण्डलक सभ जातिक संस्कार गीत उमेश मण्डल द्वारा संकलित भेल आ विदेहमे ई-प्रकाशित भेल, जे असली मिथिला संस्कार गीत अछि।)* आदि आदि। हँ 'छुट्टीक एक दिन' (डैडीगाम, २०१७) कथामे ओ अपना मोनक सभ सवाल जे ओ नै पुछि सकला, से उठा लेने छथि। प्रभास कुमार चौधरीसँ साक्षात्कार हुनकर मृत्युक कारण नै भऽ सकल आ तकर एवजमे ओ सन्धान अंक-३ प्रभास विशेष निकाललनि।

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३) अछि एकटा नैरेटिवक विवरण जे अशोकक पीढ़ीकेँ परसल गेल रहै, जतऽ सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक खिधांश कएल जाइत रहै, आ जे से करैत रहथि ओ अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ैले अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी

कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै।यात्रा कथाक अतिरिक्त 'सोवियत रूस सँ' कवितामे सेहो अशोक सएह केने छथि (चक्रव्यूह, १९८६)।

मैथिल आँखि (२००७), कथाक उपन्यासःउपन्यासक कथा (२०१२) बात-विचार (आलोचना) (२०१५) आ कथा-पाठ (२०२२) हुनकर निबन्ध आ निबन्धात्मक आलोचनाक आलेख सभक संग्रह छियन्हि।

अशोकक आलोचना आ निबन्ध विधाक पक्ष आ विपक्षमे निम्न तथ्य सोझाँ अबैत अछि:

(१) हुनकर रचनामे मात्र मूल धाराक लेखकक अध्ययनक प्रमाण भेटैत अछि, समानान्तर धाराक गत १५ बर्खक अवदानसँ ओ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, बा डेराइत छथि जे ओकर चर्चा हुनका मूलधारासँ काटि देत। 'मैथिली कथाक विकास: बदलैत स्वर एवं प्रवृत्ति' मे ओ लिखैत छथि जे मैथिलीमे सभसँ बेशी कथा जीवकान्त लिखलन्हि आ तकर संख्या ओ दू सय गनबैत छथि, ऐ आलेखकेँ ओ नव तथ्यक आलोकमे सुधारबाक अखन धरि आवश्यकता नै अनुभव केलनि, जखन कि जगदीश प्रसाद मण्डल अखन धरि ८५० कथा लिखि चुकल छथि।

(२) हुनकर जीवित रचनाकारक समालोचनामे आह-बाह आ विवरण मात्र भेटत। जीवित रचनाकारक समालोचनामे जँ ओकर कमजोर पक्षकेँ नै देखाओल जाय तँ फेर ओ अपन रचनामे सुधार केना कऽ सकता, उदाहरणक रूपमे 'दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा- हसीना मंजिल'

देखल जा सकैए। मृत साहित्यकारक आलोचनामे ओ कने हिम्मत देखबैत छथि, जेना 'ललितक पृथ्वीपुत्र', मुदा ओत्तऽ ओ आर गड़बड़ कऽ दै छथि, ओ पुछै छथि- 'एतऽ ई स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे ललित खेतिहरक जीवन-संघर्षक उपन्यास रचैत काल कलपू आ बिजलीक प्रेम-प्रसंग के बीच मे किएक अनलनि? ब्राह्मण आ अछोपक बियाह-सम्बन्ध सन सामाजिक समस्या के उठायब किएक जरूरी लगलनि हुनका? ललित सन चेतना सम्पन्न लेखक अनेरे ढाही किए लेलनि?' अशोक आलेखक अन्तिम पाँतिमे तकर कारण बतबैत छथि- 'वस्तुतः ललितक मैथिल संस्कारक ई अवधारणा वर्णवादी वैचारिकताक देन थिक।' आ ऐ लेल ओ रामदेव झा संगे ललितक कोनो गपक सोंगर लेलनि, जकर आवश्यकता नै छल। प्रेम आ सेक्स एकटा शाश्वत विषय अछि आ अकाल हुअय आकि प्लेग ओ खतम नै भऽ सकैए, अशोककेँ ऐ लेल कोनो सोंगरक जरूरी नै छलन्हि। गैब्रियल गार्सिया मार्क्विसक 'लव इन द टाइम ऑफ कोलेरा' तकर प्रमाण अछि।

(३) **नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह)** मे हुनका अपन सभ गप रखबाक अवसर छलन्हि, होलीक जोगीरा सन मुदा ओतऽ सेहो ओ चूकि गेला।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.प्रदीप बिहारी-मातबर कथाकार

प्रदीप बिहारी

मातबर कथाकार

अशोक माने फेसबुकक कथाकार अशोक माने मैथिलीक कवि, कथाकार आ आलोचक, जिनक अद्यावधिक रचना कर्ममे मिथिलाक लोक आ सम्पूर्ण मिथिला जगजियार होइत देखाइत अछि। ई अपन मैथिल आंखिसं विश्व आ वैश्विक परिदृश्य कें देखैत छथि, गुनैत छथि आ तकरो अपन रचनाक विषय बनबैत छथि। आ से एहि तरहें बनबैत छथि से सोझे-सपाटे जं पढ़ि क' ससरि गेलहुं, तं बुझयबे ने करत। माने ई हिनक शिल्पक कलाकारी छनि जे अहांकें लागत जे बड़ सहज बात कहैत छथि, मुदा कहैत रहैत छथि ओतबे गंभीर गप।

बहुविधावादी छथि अशोक जी। आरंभमे कविता लिखलनि...लिखैत रहलाह...आ तकर बाद कथा दिस मुड़लाह। हमर कहबाक तात्पर्य ई नहि जे पहिने कथा नहि लिखथि, मुदा कविता प्राय: छोड़लनि आ कथा पर केन्द्रित

भेलाह। संगे संग अन्य विधा सेहो चलैत रहलनि। हम एत' कथाकार अशोक आ अशोकक कथा पर गप कर' चाहैत छी।

अशोकक लेखन आठम दशकसं आरंभ भेलनि अछि। आठम दशक कहबाक माने जे एहि समयसं पाठककें हिनक प्रकाशित रचना सभ पढ़बा लेल उपलब्ध होम' लगलनि। ई जहिया लेखन शुरू कयलनि ताहिसं पहिलुक दशक, माने सातम दशकमे मैथिली कथामे छठम दशकक कथाक विषय, स्वरूप आ भाव-भूमि सं आगांक बात नहि देखना जाइत अछि। सामाजिक चेतना आ प्रतिरोधक जे भुम्हुर छठम दशकमे पजरलैक, से सातम दशकमे पझयलैक नहि, मुदा धधरो नहि बनि पौलैक। तकर एकटा कारण हमरा इहो बुझाइत अछि जे एहि (सातम) दशकमे मैथिली कथामे नव कथाकारक आगमन आंगुरे पर गन' योग्य भेल। एकटा बैच चललै, मुदा नियमित कमे कथाकार रहलाह।

अशोक जी सातम दशकक धोन्हिकें फाड़ैत अपन कथा सभक संग अबैत छथि। व्यक्ति, समाज, संवेदना, सौमनस्यता, चेतना आ प्रतिरोधक सोझ-सोझ बाट बनबैत छथि। ई अपन बात सोझ-सोझ पाठककें कहैत छथि, जाहिमे हिनक भाषाक जादूगरी देखबा योग्य रहैत अछि। अपने लाथे पूरा समाजकें युग-सत्य देखबैत छथि। ई बात हिनका मैथिली कथामे एकटा फराक पहिचान आ स्थान दैत छनि।

लेखक समयक संग बदलैत व्यक्ति, समाज आ देशक भाव-स्वभावक संग चलैत अछि आ ओकरा अपना रचनाक विषय बनबैत अछि। जे समयक संग होइत परिवर्तन कें नहि देखैत अछि, ओ खाधि खुनि क' स्वयंकें गाड़ि दैत अछि। कथाकार अशोक एहि मामिलामे हरेक समयक संग चलैत देखाइत छथि। एकर बानगी हिनक 1986 ई मे छपल कथा "मिर्जा साहेब" (ओहि रातिक भोर) आ "छल" (डैडीगाम- 2017) मे देखल जा सकैत अछि।

"मिर्जा साहेब"क मिर्जा मुजफ्फर आलम जे भारत-पाकिस्तानक संबन्ध खराप भेला पर भारतमे रहैत छथि। एकटा बियाहमे भाग लेबा लेल पत्नी आ बेटा पाकिस्तानेमे घेरा जाइत छथि। बहुत प्रयासक बाद जखन ओ दुनू घुरैत छनि आ अपने पत्नी आ बेटाकें लेब' बम्बई जाइत छथि आ ओत्तहि तत्काल भेल दंगामे मारल जाइत छथि। मुखिया जीक संग पत्नी आ बेटा अबैत छनि, जिनक अयबाक तैयारीमे गाम प्रफुल्लित छल, भव्य आयोजनक व्यवस्था कयने छल, ताहि पर पानि पड़ि जाइत छैक। ओत्तहि कथा 'छल'मे भोली झा कोआपरेटिवक आम सभामे ब्रीफकेसक लोभें मुहम्मद असलम बनैत छथि। कोआपरेटिवक मीटिंग मे जाइत छथि। आ अंतमे एकटा बात लेल तामसे माहुर भ' जाइत छथि आ बाज' लगैत छथि- 'अरे, ई हाकिम तखनी सं हम्मर मजहब के की-कहां कहि रहल छथ। कहै छथ जे इसलाम बहुत कट्टर मजहब हय। तलबार के जोर पर चलै हय। मुसलमान सब गाय के मांस खाइ हय। हिंदु के काफिर कहै हय। हम तब्बे से हिनका समझा रहल छली। अरे भाइ, अइ मे हम्मर की कसूर हय। एतना दिन सं हम सब एक-दोसरा के संग रहल छी। तब्बो एक-दोसरा के नहि समझली? कौआ के पाछू दौड़ल जाइ छी। पर ई मानिते नहि छथ। की-कहां बकने जाइ छथ।'

साम्प्रदायिकताक दू टा स्थिति दुनू कथामे राखलनि अछि कथाकार। 1986 सं 2017 धरि अबैत-अबैत साम्प्रदायिक सद्भाव कतेक विकृत भ' गेल अछि, तकर बानगी। मिर्जा साहेबक पत्नी आ बच्चा पकिस्तान सं औथिन, तें गामक लोक स्वागतक भव्य ओरिआओन कयने रहैछ। ई प्रायः एहि दुआरें जे मिर्जा साहेबक मोजर हुनक समाजमे धर्मक कारणें नहि, मनुक्खक कारणे छलनि। मुदा, सामाजिक स्तर पर धार्मिक वैमनस्य एत' धरि पहुंचि गेल अछि जे मुहमद असलम के ठाह-पठाहिं ओकरा धर्मक खिधांस क' दैत अछि लोक। बहुतो असलम अपन समाजमे छथि जे कहैत रहैत अछि जे कौआक पाछू नहि दौड़ू। मुदा...। कथाकार दुनू समयक

चित्रण करैत वाजिब चिन्ता रखैत छथि। दोसर, एकटा आर बात! मिर्जा साहेबक संग मुखिया जी बम्मई (आजुक मुम्बई) जाइत छथिन। मुदा, आजुक स्थिति ई बनि गेल अछि जे कोनो मिर्जा साहेबक संग कोनो मुखियाजी कतहु जयबा लेल तैयार नहि भ' सकैत छथि। दुनूक बीच अविश्वसनीयताक खाधि एतेक गहींर क' देल गेल छैक जे रमजान आ रामनवमी मे एक-दोसराक भेंट-घांट सेहो बनौआ लगैत छैक। आजुक समयक ई सभसं पैघ त्रासदी भ' गेलैए जे एहि देशक मुसलमानकें कह' पड़ैत छैक जे हमर देश भारत अछि। आ एकरा लेल दुनू धर्मक लोक जिम्मेदार छथि जे तेसर, मदारीक होहकारा पर नाचि रहल छथि।

सद्भावक एहने एकटा कथा डैडीगाम संग्रहमे अछि- 'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि'। सुधीर आ रमेशक साइकिल सिखबाक बहन्ने कथाकार बड़ीटा बात करैत छथि। एहि कथाक अलाउद्दीन आ कैंची मिस्त्रीक चरित्र समाज लेल एकटा आदर्श स्थापित करैत अछि।

कथाकार अशोकक कथा रूपी तरकसमे रंग-विरंगक वाण छनि। हिनक एकटा कथा मोन पड़ैत अछि- भोज। एहि कथामे लगैत छैक जे कथाकार एकटा नेनाकें भोजक प्रति आकर्षणक वर्णन क' रहल छथि। भोजक खाद्य-पदार्थक अद्भुत वर्णन अछि। तकर कारण ई जे कथाकार स्वयं सेहो भोजन संदर्भमे विन्यासी छथि। भोजे नहि, आन-आन कथा सभमे सेहो भोजनक वर्णन मनोयोगपूर्वक करैत छथि। 'भोज' कथामे नेनाक मनोविज्ञानक चित्रन अद्भुत अछि। मुदा, पैघ बात ई जे एहि कथाक बहन्ने गामक आपसी सद्भावक गप कहि जाइत छथि कथाकार। भोज गामक लोककें एकठाम बान्हि क' रखबा लेल जरूरी छैक।

हिनक बहुत रास कथा अछि जे मानवीय संवेदनाक विभिन्न आयामकें सफलतापूर्वक छुबैत अछि। हिनक कथा-संसारके अवगाहन कयने पाठककें

बुझबामे औतनि जे ई कथाकार ओहू सभ विषयकें अपन कथामे आनलनि अछि जे मनुक्ख आ समाजक समृद्धिक कारक भ' सकैत अछि।

हिनक संग्रह 'डैडीगाम'क कथा सभमे एकटा केन्द्रिय बात ई देखबामे अबैत अछि जे फोरलेन/सिक्सलेनक बढ़ैत जालक अछैत गामकें कोना बचाओल जाय? मनुक्खकें बचबा लेल गामक बांचब जरूरी छैक।

मल्टीनेशनल कम्पनी सभक अधिकारी आ कर्मचारी सभ प्रोमोशन आ पदक जाहि वृत्तमे घूमि रहल अछि, जे ओकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवन धूमिल भेल जाइत छैक। ओकरा पाइ आ पद चाही। एहि विषय पर मैथिलीमे किछु नव-पुरान कथाकारक कथा अयलनि अछि, जाहिमे विभिन्न प्रकारक चिन्ता आ चिन्तन प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहने घुरमुरिया दैत लोक सभक लेल हालहिमे अशोक जीक एकटा दोसरे रंगक कथा अयलनि अछि- 'जिम्मेदारी'। एहिमे ओ 'वर्क लाइफ बैलेंस'क नीक उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि। परिस्थिति तं यैह छैक आ एहिना कि एहूसं बेसी व्यस्ततम भ' सकैत छैक। मुदा, एहन परिस्थितिमे जीवनक राग-अनुराग कोना बचा क' राखल जा सकैछ, से बात कथाकार अशोक अपन एहि कथामे कहैत छथि।

अशोक भाइसं मासमे एकदिन अबस्से भेंट होइत अछि। ओ दिन होइछ 'उपमान'क मासिक गोष्ठीक। ओ मैथिलक प्राय: सभ महत्वपूर्ण विधामे लिखलनि अछि। एकटा विधा छुटल छनि। एकबेरक गोष्ठीक समापनक बाद वियोगी (तारानन्द वियोगी) आ हम कहलियनि जे भाइ, उपन्यास छुटल अछि। लिखियौ ने। ओ साफे नकारि गेलाह। नहि, उपन्यास नहि लिखायत। एकबेर सोचने रही, मुदा नहि । एहि लेल कहियो मूडे ने बनल। जे, से। ई गप हमरा दुनूक मुंहसं प्राय: एहू दुआरें बहरायल जे ओहि गोष्ठीमे वियोगी अपन उपन्यास अंश पढ़ने रहथि। एहि

गपक बाद हम दुनू गोटे हुनका संग कौफी पीब' पटना गांधी मैदानक मैकडोनाल्ड मे गेलहुं। कौफीक संग गपसपक बला फोटो हम फेसबुक पर तखनहि द' देलियैक। उनतीस मई 2022क गप थिक। फेसबुकक टाइटिल देने रहियै - कौफीक संग कथा-वार्ता करैत मैथिलीक तीन टा कथाकार। एहि पोस्टक बहुत रास प्रतिक्रिया आयल। मुदा मुख्य प्रतिक्रिया आदरणीया उषाकिरण खानक आयल छल। ओ लिखने छलीह -'तीनू मिलि क' एक टा दीर्घ कथाक सूत्रपात तने करता? बड़ नीक प्रयोग हेतनि- मधुबनी, सहरसा आ बेगूसरायक परिवेश मे। बगअप भाइ लोकनि।

एकर प्रतिक्रिया पर आदरणीय भीमनाथ झा तीनू गोटेकें उपन्यास लिखबा लेल आग्रह कयलनि। हमरा मादे कहलनि जे हाथ झारल छनि। लिखिए देताह। वियोगी जी आ अशोक जी गछथु। एहि पोस्ट पर बहुत संवाद भेल। वियोगी गछलनि। भीम भाइ अंतत: अशोक जी सं सेहो गछबाइए लेलनि। कथाकार अशोक अपन पोस्ट उषाकिरण खानक उतारामे लिखलनि- "प्रणाम। अहांक आदेश त' पहिनहि सं अछि। भीम भाइ सेहो कहि देलनि। वियोगी बहुतो दिन सं पाछू पड़ल छथि। लगैए आब एकटा उपन्यास लिखैए पड़त।"

हम सभ अशोक भाइक एहि घोषणाक स्वागत कयने रही। आ, आब हुनक उपन्यासक प्रतीक्षा क' रहल छी।

-संपर्क-6202140561

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०.आशीष अनचिन्हार- मैथिल दृष्टिदोष

आशीष अनचिन्हार

मैथिल दृष्टिदोष

"मैथिल आँखि" कांचीनाथ झा 'किरण' जीक देल एकटा नारा अछि जाहि अंतर्गत मिथिला-मैथिली-मैथिलकेँ अपन दृष्टिसँ देखबाक बात कहल गेल छै। मुदा ई "अपन दृष्टि" कोन रूपे आएत तकर मापदंड कतहुँ नै सोझराएल गेल छै।

"मैथिल" शब्द केर अर्थे संकुचित कऽ देल गेल छै। एकर अर्थ एखनो मात्र ब्राह्मण-कायस्थ होइत छै। कागजपर लिखबाक लेल सभ नीक-नीक आ उदात विचार लीखै छथि मुदा व्यावहारिक जीवनमे ओ उदात विचार नै आबि पाबै छनि। टैक्स पेयर केर पाइसँ चलए बला संस्था जेना अकादेमी सभकेँ सेहो अही मैथिल अर्थ बला बना देल गेल छै।

एहन परिस्थितिमे 2007 मे मैथिली अकादमी, पटनासँ अशोक जी केर

"मैथिल आँखि" नामक पोथी प्रकाशित होइत अछि। एहि पोथीमे 24 टा आलेख अछि जाहिमे किछु आलेखमे किरणजी पक्ष भेटि जाएत आ किछुमे ओ नै भेटत। नै भेटबाक एकै टा कारण जे आब ओ समयमे नै छै जे एकै दृष्टिसँ अहाँ प्रगति कऽ लऽ लेब। अपने आप मैथिल आँखिमे आनो दृष्टि सभ आबि जाइत छै आ मिथिला-मैथिली-मैथिलक विकास तहीसँ होइत छै। एहि पोथीक सभ आलेख कोनो-ने कोनो पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। बहुत लेखमे मैथिल आँखि वा दृष्टि स्पष्ट नै भऽ सकल अछि जेना पृष्ठ-21 पर आलेख अछि "विकास संदर्भ" जे कि संधान पत्रिका केर जुलाई 2000 केर अंकमे प्रकाशित भेल छल। ओहि आलेखक शुरूमे लेखक अपन किछु संगीक संगे कोनो बैंक अधिकारी संगे वार्तालाप करैत रहथि। बैंक अधिकारी कहब रहनि जे मैथिली साहित्य पचास बर्ख पाछू अछि। अधिकारी ईहो कहलखिन जे एखन सूचना-तकनीक-इंटरनेटक जमाना अछि जे मैथिलीमे नहि अछि। मुदा अशोक जी आ हुनका संग रहल आन लेखक जे संगे रहथि से ओहि अधिकारीकेँ गोलिया लेलाह। मुदा देखियौ, ने अशोकजी ओहि अधिकारीकेँ ओहि समयक इंटरनेटपर मैथिली सामग्री देखा सकलाह आ ने हुनका संगमे रहल आनो लेखक। बर्ख 2000 मे मैथिलीमे "भालसरिक गाछ" छल जकर संचालक गजेन्द्र ठाकुर छलाह आ एकर अलावे तीन टा आर साइट छल जे कि अमेरिकासँ संचलित छल जाहिमे अधिकांशत: अंग्रेजीमे मिथिला-मैथिली-मैथिलपर सामग्री रहैत छल। एहि सभहक विस्तृत विवरण हमर पोथी "मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास" मे भेटत।

एहि विवरणसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे जतबे दूर धरि ओहि अधिकारीक दृष्टि गेल छलनि ततबे दूर धरि अशोकजी एवं हुनका संगमे रहल आन लेखक केर छलनि। जखन कि लेखक लग अपन समकालमे घटैत हरेक घटनापर नजरि रहबाक चाही। हमरा हिसाबें ओ बैंक अधिकारी मात्र पाठक छल तँइ ओकरा लग कम सूचना भऽ सकैए मुदा लेखक लग तँ सूचना रहबाके चाही।

पृष्ठ-54 पर आलेख अछि "विकासक फल" जकर मुख्य मुद्दा छै पलायन।

मुदा मात्र मजदूरक पलायन। हमरा जनैत ई विशुद्ध मैथिल महासभा बला मैथिल दृष्टि छै। मजदूरक पलायन, पलायन भेलै आ बाबू साहेबक बेटा जे दिल्ली-बंबइ- अमेरिका-लंदनमे कमा कऽ राजमहल बना लैए से कमाइ भेलै। मजदूरक पलयान कम करबाक पहिल शर्त छै ब्रेन ड्रेन (पढ़ल-लिखल लोकक पलायन) रोकब। अन्यथा हमरा नजरिमे मजदूरक पलायन रोकब, मिथिलाक गरीबकेँ गरीब रहबाक लेल अभिशप्त कऽ देत। आ संभवतः मैथिल महासभा केर मैथिल दृष्टि इएह चाहै छै।

उपर जे हम दू उदाहरण देलहुँ तेहन आर किछु उदाहरण भेटल एहि पोथीमे मुदा पाठक सभसँ आग्रह जे ओ एहि पोथीकेँ कीनथि आ ओकरा पठथि। एकर अतिरिक्त एहि पोथीमे हमरा बहुत रास विशेषता सेहो भेटल मुदा हम नकारात्मक लोक मात्र दुइए टा विशेषता देब। पहिल एहि पोथीक सभ आलेख छोट अछि। आ ई सामान्य पाठक लेल नीक बात छै। दोसर, अहाँ सहमत होइ वा कि असहमत मुदा ओहि लेख सभमे लेखक केर अपन निष्कर्ष भेटत। मैथिलीमे तँ किछु एहनो धुरंधर लेखक सभ छथि जिनकर लेख दू-किछु बेर पढ़लाक बादो नै बुझाइ छै जे आखिर एहिमे की लीखल गेल छै। ओना ई संतोषक बात छै जे एहन धुरंधर लेखक कम छथि मुदा जे छथि से अपनाकेँ मठाधीश मानै छथि। अशोकजी अपन एहि दू विशेषताकेँ अंत धरि बचा कऽ राखथि इएह असल मैथिल दृष्टि हेतै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.मुन्ना जी- त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

मुन्ना जी
त्रिकोणक धुरी- श्री अशोक

मिथिलाक झंझारपुर प्रखण्डान्तर्गत लोहना, भूंइयाथान निवासी श्री अशोक, श्री शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्द क बीच 1983 मे कथाक त्रिकोण बनल छल। तीनू गोटें कथा मे अपन अपन फरीछ आ स्वतंत्र अस्तित्व मे जनलाक पछातियो कथाकार श्री अशोक जी अपनाकें फराक दृष्टिकोण सँ एकर धुरी साबित भेल छलाह।
सदिखन ने काहू सँ दोस्ती ने काहू सँ बैर कें चरितार्थ करैत अपन फरिछएल आ कतिएल क्रियाशील रहि आइ अपन पीढ़ीक सर्वाधिक पढ़ल जाय बला सर्वश्रेष्ठ कथाकारक रूप मे उपस्थित छथि।
श्री अशोक जी पहिने अशोक झा छलाह फेर अशोक आ अपन परिचितिकें घोरमट्ठा हेबा सँ बचेबाक क्रम मे भ' गेलाह कथाकार अशोक।
बनारस सँ शिक्षा पाबि गाम धेलनि 1975 मे वैवाहिकबन्हन मे बन्हा गृहस्थ जीवनक पछाति पहिनने किरानी आ कालान्तरें कोपरेटिव विभाग मे अधिकारीक सेवा दैत सेवानिवृत्त भ' संप्रति पटनावासी रहि सृजनरत छथि कथा सृजनक संग-संग उपन्यास पर हिनकर गहींर दृष्टि प्रभावित करै बला

रहल। संगहि उपन्यास, कथाक ऑपरेशनल व्यू हिनका श्रेष्ठ आलोचक श्रेणी मे आनि ठाढ़ केलक।
मंच, माला, माइक आ हाँजी-हाँजी बला रूप कहियो दृष्टिगोचर नै भेल।

जुलाई 1995 , ओइ समय पटना मे पत्रकारिताक छात्र रही।शैल भाई (शैलेन्द्र आनन्द)के संग अशोक भाइक सरकारी आवास पर पहिल भेंट भेल छल।एकै पंचायतक रहितो भेंट नै छल।ओना फॉलोवर त' रही जुलाई 91क पैटघाटक कथा गोष्ठीये सँ।
बीहनि कथा विधा पर हुनका सँ होइत गप सप सदिखन सकारत्मक आ प्रोत्साहित करैत रहल। आ तकरे परिणामस्वरूप दिसंबर 2011 मे हुनक संयोजन मे भेल पटना कथागोष्ठी मे हमर बीहनि कथाक एकल पोस्टर प्रदर्शनी लगाओल गेल छल।
आब जहिया दिल्ली आबैथ त' सूचित करथि।आ सदति सोझगर बाट देखबैत रहलाह।

-मुन्ना जी, हटाढ़ रूपौली मो. 9958396353

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.श्रीधरम- गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिपौत

श्रीधरम

गतिशील यथार्थक कथाकार अशोक: किछु टिपौत

अशोक खाँटी आधुनिक मैथिल-कथाकार छथि। मैथिली में खाँटी कथाकार त' बहुत छथि, मुदा कैक बेर हुनक दृष्टिक कोराँटी हुनक छद्म वैचारिकताक पोल खोलि दैत अछि। एहि दृष्टिएँ कथाकार अशोकक वैचारिकता आ प्रगतिशीलता मे कोनो झोल नहि छनि आ से हुनक कथा मे अनुस्यूत छनि। से बिना कोनो नारेबाजी आकि डफली बजेनहि। अशोक मिथिलाक जन-जीवनक कें अलग-अलग कोन आ दृष्टिकोण सँ देखैत छथि। ओ आम जीवन, जगत आ प्रकृतिक अनेक बिम्ब कें गतिशील चित्रकारी संग उतारि दैत छथि। हुनकर जे 'मैथिल आँखि' छनि तकर कैनवास बहुत विस्तृत छै, लोकल सँ ल' क' ग्लोबल धरि। हिनकर कथाक वितान मे मिथिलाक माटि-पानि, खेत-खरिहान, जातिक अनुसार बाँटल टोल-पड़ोस, दाम्पत्य जीवनक आशा-

निराशा, राग-द्वेष सभ किछु व्याप्त अछि। बभनटोली सँ बाहर निकलि क' दलित-टोल आ मियां टोल धरि जाइत छथि आ एक दोसर टोलक बीचक राग द्वेष, छल-छद्म, तनावक संग आत्मीयताक सूत्र कें सेहो पकड़बाक प्रयास करैत छथि। सब सँ पैघ बात जे हिनकर कथा कहबाक शैली छनि से 'इस्स' ककरा नहि ठमका देत? कथ्यक अनुसारें 'कहन' कें साध' में माहिर छथि कथाकार अशोक।

'ओहि रातिक भोर' संग्रहक भूमिका मे प्रसिद्ध कवि-आलोचक कुलानन्द मिश्रक हिनका कथाक मादे टिप्पणी छनि जे "ई युगसत्य कें सामूहिक नजरि सँ बेसी व्यक्तिक नजरि सँ देखब सार्थक बुझैत छथि तें हिनकर कथा मे युगीन संघर्षक बात परोक्ष रूप सँ लक्षित होइत छै।" देखल जाय त' एहि कथन मे प्रश्नक संग उत्तर सेहो निहित छै। एत' कुलानन्द जीक कहबाक आशय यैह छनि जे अशोक अपन समकालीन समय, समाज आ जन-संकुलक यथार्थ कें अपन पात्रक नजरि सँ अकानैत छथि नै कि भीड़ आ नारेबाजी सँ। हिन्दी मे प्रेमचंद सँ अमरकांत धरिक कथा मे समाज आ समूह कें 'व्यक्तिक नजरि' सँ थाहबाक ई परंपरा देखल जा सकैत अछि। प्रश्न यैह हेबाक चाही जे व्यक्ति-चरित्र वर्गीय चरित्र बनैत अछि कि नहि। आलोचक मोहन भारद्वाजक उचिते कहब छनि जे "अशोक विकास कें पुनरावृत्तिक रूप से नहि देखैत छथि। विपरीत तत्त्वक एकताक रूप में विकास कें देखब हुनक विशेषता छनि।" भारद्वाज जी इहो लिखैत छथि जे हिनक "कथाक कथ्य सार्वभौम होइत अछि, मुदा ओकर बनाबटि मैथिल रहैत अछि। कथाक तानी-भरनी अर्थात संरचना मे मैथिल सुवास रहैत अछि।" निःसन्देह मोहन भारद्वाज अशोक कें एकटा एहन प्रगतिशील कथाकार रूपें देखैत छथि जे सामाजिक द्वंद्व कें वैश्विक आ वैज्ञानिक दृष्टिएँ मैथिल गंधक संग चित्रित करैत छथि। एहि प्रक्रिया मे कथाकार अशोक अपन पाठक आ पाठकीयता कें गसियौने रहैत

छथि। जेनाकि युवा कथाकार-समीक्षक शुभेन्दु शेखर अशोक कें 'पाठकक कथाकार' कहैत लिखैत छथि जे "अशोकजी मिथिलाक जीवन-राग, ओकर छोट-पैघ आकांक्षा, ओकर उदात्त जीवनक नकारात्मक आ सकारात्मक विंदु सभ कें बहुत सूक्ष्मता सँ देखैत छथि।" शुभेन्दु अशोकक कथा-यात्राक एहि विशेषता कें सेहो रेखांकित करैत छथि जे कथ्य आ शिल्पक स्तर पर ई कथाकार लगातार ऊर्ध्वमुखी आ प्रयोगशील छथि। आ जकरा कैक बेर ठमकल मैथिल-नजरि नहि पकड़ि पबैत अछि। एवं प्रकारें कथाकार अशोकक जे थोड़-बहुत मूल्यांकन भेल से बहुत कम अछि। तें 'विदेह'क ई प्रयास एहि चर्चा-परिचर्चा कें आगाँ बढ़ाओत से विश्वास अछि।

अशोक 1980 के आसपास कथा लेखन आरंभ कैने छलाह। लगभग चारि दशक मे हुनका लग संख्या मे भने कथा कम हो, मुदा उत्कृष्टताक प्रतिशत हुनका लग बहुत अधिक छनि। निःसन्देह सृजनात्मक रचनाकारक भीतर सेहो एकटा आत्मालोचक हेबाक चाही, जाहि सँ साहित्य मे निंघेस नहि पसारि सकय। एहि सँ साहित्य आ पाठकक बहुत भलाइ होयत। अशोक पिछला शताब्दीक अवसानक संग मलकैत सांढ़ जकां आँखि मुनने भागल जाइत नव सदीक यथार्थ कें अपन कथा मे गूँथय मे माहिर छथि। पिछला सदीक अंतिम दू दशक भारतीय समाज आ राजनीति मे परिवर्तनक काल रहल, जकर समाज पर असरि बहुत बेसी पड़ल। यैह समय आवारा-पूंजीक वैश्विक आवागमनक सेहो थिक। पारंपरिक सामाजिक संरचनाक पुनर्रचना भेल आ एहि क्रम मे टकरावक संग सामंत केंद्रीय टोल सँ हाशियाक टोल दिस सेहो शिफ्ट भेल। एहि बदलावक प्रक्रिया कें अशोक बहुत महीन रुपें 'मातबर' कथा मे अभिव्यक्त करैत छथि। कथा मे आयल 'अंबेडकर-चौक' परिवर्तनक मेटाफर बनि जाइत अछि। निम्न वर्ग सँ मातबर बनबाक एहि प्रक्रिया मे जनता अपन राजनेते जकां दिशाहीन आ दिकभ्रमित अछि।

गोर्की चेखवक कहानी कलाक वर्णन करैत लिखने छथि - "चेखवक कथा पढ़ैत एना सन प्रतीत होइत अछि जेना कि मानि लिय' जे शरद ऋतुक उदास अवसानक दिन मे अहाँ टहलि रहल छी, जखन कि हवा एतेक पारदर्शी होइत अछि जे ओहि में झाड़-पात, गाछ-बिरिछ, संकीर्ण मकान आ धूमिल सन लोक सभकिछु एकदम स्पष्ट देखा पड़ैत अछि। सभकिछु एकदम विचित्र- एकांत, निश्चल आ निश्शक्त लगैत अछि। चारू भरि गहींर नील सँ बोरल असीमित दूरी पसरल रहैत अछि। आ जे फिक्का सन आसमान संगे जा मिलैत अछि। ठंड सँ जमल आ कादो सँ भरल धरती पर आसमान 'सर्द आह' भरैत अछि। लेखकक बुद्धि शरद ऋतुक सूर्य जकां निर्मम आ स्पष्ट रुपें ऊबड़-खाबड़ बाट, टेढ़-मेढ़ गली, संकीर्ण आ गंदा मकान सभ पर प्रकाश पसारैत अछि, एहि मकान सभ मे दीन-हीन तुच्छ लोक सभक विकलता आ काहिली सँ दम घुटैत जाइत छै। ओ सभ मूस जकां अपन निरर्थक, ओंघायल भागम-भाग मे लागल रहैत अछि ।" अशोकजीक कथा सभ कें पढ़ैत कैक बेर ई कथन सार्थक बुझना जाइत अछि। अशोक अपन निजी पेशा में सरकारी अधिकारी रहलाह। हुनका लग सरकारी तंत्रक बेस नीक-अधलाह अनुभव छनि, जकरा ओ अपन कथाक विषय बनौने छथि। सरकारी लालफीताशाही पर अशोकक कैक टा कथा छानि। 'दसखत' आ 'कोठा' कथा मे राजनितिक भ्रष्टाचार कें जाहि तरहें उघाड़ल गेल अछि से अपन कथ्य मे पुरान होइतो प्रस्तुति मे नव अछि। अनेक तथ्य आ पक्ष कें जोड़ैत। 'कोठा' मे 'सांप' मेटाफर के बहुत समुचित प्रयोग भेल अछि। पहिने 'अवर्ण' कें 'सवर्ण' लूटैत छला आ आब 'मंडल' लूटि रहल छथि। रामलाल मंडलक सांप सभ सीसाक घर सँ बाहर भ' गेल। "चारूकात गाम मे सरसराइत-सनसनाइत ससर' लागल। फुफकार सँ आसामर्द क' देलक समूचा वातावरण के।" अहिना 'जिनिस' कथा में भ्रष्टाचारक संग दाम्पत्य आ बदलैत स्त्री-पुरुष संबंधक सार्थक रेखाचित्र खींचल गेल अछि। 'स्त्री-पुरुखक दियाद नहि थिकैक।' एहि कथन सँ अनेक

तथ्य ध्वनित होइत अछि। रूपाक एहि कथन 'मोन पाड़ू त' कत्तेक दिन भ' गेल हैत हमर देह छूना अहाँके?' कें आधुनिक स्त्री-विमर्शक दृष्टिएं सेहो देखल जा सकैत अछि।

अशोकक एकटा कथा छनि 'हरिसिंहदेवी'। आब इहो कोनो कथाक 'कथ्य' भ' सकैत अछि? मुदा एहन शोध आलेखक विषय कें लेखक जाहि तरहें बिखिया के बखान करैत छथि, से हुनकर 'किस्सागो'क प्रमाण थीक। कथाकार एत' जाति-पांतिक समाजशास्त्रीय विश्लेषणक संग मनोवैज्ञानिक 'स्कैन' सेहो करैत चलैत छथि। 'रागविराग' कथा एहि तथ्य कें रेखांकित करैत अछि, जे हजारो बर्ख सँ मारि-गारि सुन' बला दलित, मजदूर लेल सम्मान आ स्नेहक दू टा मीठ बोल कतेक आह्लादक होइत छै। हजार रुपैया कमेनिहार ड्राइवर अपन सेठानी कें माँ कहैत अछि। हजारो सालक सामंती गुलामी सँ बाहर निकलल ई वर्ग एक बेर फेर 'प्रेम लपेटे अटपटे बैन' मे फंसिक' शोषणक शिकार भ' जाइत अछि। अही कड़ीक विस्तार मे 'महतो' 'प्रतिलोम' आ 'सीवन रजकक हितचिन्तक' शीर्षक कथा कें देखल जा सकैत अछि। मुदा 'सीवन रजकक हितचिन्तक' कथाक अंत मे जे द्वंद्व हेबाक चाही ताहि सँ पात्र वंचित रहि जाइत अछि। बहुत आसानी सँ सीवन कें मुक्ति भेटि जाइत छै। एहि दृष्टि सँ 'प्रतिलोम' कथाक विकास आ उरूज स्वाभाविक अछि।

'मातबर' संग्रहक कथा ''बूढा जीबैत रहलाह' आ 'डैडीगाम' संग्रहक 'ऐना भ' क' कियो' कें एक संगे पढ़ल जेबाक चाही। भारतीय समाज मे सोलह-सत्रह बर्ख मे बियाह आ चालीस जाइत-जाइत वानप्रस्थी बनि जएबाक आग्रह रहल अछि। सभटा शास्त्र-पुराण मे ययाति आ देवब्रत सन अनेको उदहारण रहबाक अछैतो बूढ़क गंजन करबा मे 'विश्वगुरु' सेहो पाछाँ नहि रहल अछि। हमरा जनैत बूढ़क 'राग' पर मैथिली मे लीखल अन्यतम कथा थीक- बूढा

जीबैत रहलाह। अहिना दाम्पत्य जीवन आ प्रेमक कथा- 'लाथ' कें सेहो देखल जा सकैत अछि। मध्यवर्गीय व्यक्ति अपन गृहस्थक गाड़ी कें खींचैत-खींचैत कहिया जवान सँ अधबयसू आ बूढ़ भ' जाइत अछि तकरा एकटा 'कुर्ता'क प्रतीकक माध्यम सँ कहल गेल अछि।

'मातबर' संग्रहक एकटा आरो विशेष उल्लेखनीय कथा थिक- 'रांड़'। ओना ई कथ्य आब मिथिलो लेल पुरान सन भ' रहल अछि, मुदा जं एहि विषय कें हटा दी त' मैथिली कथा-साहित्यक दू तिहाइ हिस्सा अप्रासंगिक भ' जायत। इतिहास समजशात्रीय अध्ययनक आधार होइत अछि। अस्तु, अशोक अपन कथा 'राँड़'क बहन्ने विधवाक लेल निर्धारित पारंपरिक मापदंड कें तोड़ैत छथि, ओहि पर प्रश्नचिन्ह लगबैत छथि। कथाक नैरेटर मनीषक आंखिये विधवा जीवन, ओकर संघर्ष आ विकसित चेतना कें समग्रता मे देखल गेल अछि। एत' विधवा स्त्रीक विकसित होइत स्वतंत्र व्यक्तित्व कें देखल जा सकैत अछि। विधवाक लेल जे ताना-बाना समाज द्वारा निर्धारित कैल गेल अछि, ओकरा ओ नकारैत अछि, जेना- उज्जर नुआ पहिरब, सिंऊथ से सिनूर धोई देब, चूड़ी फोड़ि देब, अनकर छूल नहि खैब, माछ-मांस नहि खैब, देह साधि के हड्डी बना लिय' जे मोन आ देहक बीच कोनो तार ने जुडी जाय। देहक राग ने बाजि उठय... आदि। मुदा पत्नी मरला पर पुरुषक लेल कोनो नियम-संयम नहि। मनीष कें मोन छै जे माय के मरला पर बाबू लाश सँ मांफी मांगने रहथिन-'जीवित मे अहाँ कें बड दुःख देलहुं। बड़ क्रोध केलहुं। मांफ क' देब हमरा।' मुदा पत्नीक मृत्युक करण हुनकर दिनचर्या मे कोनो अंतर नहि आयल। 'माछ-मासु खाइते रहलाह। सभटा काज ओहिना करैत रहलाह, जेना पहिने करथि।' मनीष कें अपन विधवा पितामही मोन पड़ैत छै जे उज्जर नुआ पहिरने, गोपी चनानक ठोप केने भगवतीक पूजाक बाद माटिक बासन मे अपने सँ भानस करथिन। ओही भगवतीक पूजा जे कहियो स्त्रीक पक्ष मे ठाढ़

नहि भ' सकलीह। विधवा जीवनक कष्ट कें कनेको कम नै क' सकलीह। कोना क' सकैत छलीह जत' धर्मराज सन महापुरुखक मुंहें महाभारत मे कहा देल गेल-"यदि कोनो पुरुष के सौ टा जीह (मुंह) होई, आ सौ बरख धरि ओ ज़िंदा रहय आ ओकरा जीवन भरि स्त्रीक दोषक बखान करबाक अलावा कोनो दोसर काज नहि देल जाई, तैयो ओ स्त्रीक दोष कें बिना बखान केने मरि जायत।" एहना मे विधवाक आर्तनाद शास्त्र पर चलानिहार कोन पुरुख सुनि सकैत छल?

मनीष अपन मामी कें विधवा रूप मे देखबाक कल्पनो नहि क' सकैत छल। किएक त' ओकर नेनपन काशी मे मामीक आँचरक छहारि मे बीतल रहै। ओ मामी, जे मैथिल द्वारा काशी-लाभ लेल (मरै लेल) छोड़ि दै बला बूढ़ माता-पिता कें मरै तक देख-भाल करथि। जीवन सँ मृत्यु धरी सेवा मे दू पाई कमा लेथि आ तकर बदला मे लोक सभ बिखिन बिखिनक खेरहा पसारनि। मुदा, मामी ककरो बात पर ध्यान देने बिना 'स्वान रूप संसार है भूकन दे झख मारि'क अंदाज मे अपन काज मे लागल रहलीह। आखिर काशी कबीरक सेहो नगरी थिक, जतबे आडम्बर-युक्त ततबे आडम्बर-मुक्त। आ से मामी जखन विधवा भ' गेलीह त' मनीष सोचैत अछि जे हुनकर उज्जर वस्त्र के ओ मूंगाक रंग-बला शाल सँ झाँपि देत। "मुदा मनीष जखन मामीक ओत' गेल त' हुनका आसमानी रंगक नुआ मे देखलक। आसमानी रंगक नुआ-ब्लाउज पहिरने मामी जेना सम्पूर्ण अकास के समेटने छलीह। हाथ मे घड़ी रहनि। सोनाक चूड़ी रहनि।" मामीक आसमानी रंगक साड़ी ओहि अकास कें अपना मे समेटने अछि, जाहि पर पुरुषक 'बपौती' रहल, स्त्रीक 'मैयौती' नहि। (एत' आसमानी रंग स्वतंत्रता ओ स्वच्छंदताक प्रतीक थिक।) ई देखि प्रगतिशील मनीष कें एक पल लेल ठकमका जायब स्वाभाविक छल। मामीक ई कथन जे 'हम राँड़ नहि भेलहुँ मनीष। हम राँड़ नहि छी।" आधुनिक मैथिलानीक उद्घोषणा थिक जे हजारो साल सँ जमल पितृसत्ताक शिला पर हथौराक चोट

सन बुझइत अछि। आ मामीक अहि उक्ति कें सुनि मनीष कें अपन माताक मृत्युक बाद पिताक जीवन कें मोन पारब प्रतीक मे बहुत किछु कहि दैत अछि। (ओना ई कथाक अंत एतहिये भ' जैत त' हमरा जनतबे नीक।)

ई कथा अपन कलेवर मे छोट होइतो मिथिलाक विधवा-जीवनक अनेक रंग (सफ़ेद सँ आसमानी धरि) कें अपना मे समेटने अछि। मनीषक विधवा पितामही सँ विधवा मामी धरिक मिथिलांचलक वैधव्य-यात्रा मे बहुत किछु बदलि गेल अछि। बहुत किछु टूटि गेल अछि। बहुत किछु पाँछा छुटि गेल अछि। परंपरावादी पागक पाछां गन्हाइत दिमागक बिखपादे टा बचल अछि। अतीत-गायनक संग संग जखन अतीतक मूल्यांकन होइत अछि, तखने स्वस्थ भविष्यक कल्पना कैल जा सकैत अछि।

'डैडीगाम' धरि अबैत-अबैत अशोक कथ्य आ शिल्प, दुनू स्तर पर नव-नव प्रयोग करैत छथि। शीर्षक कथा डैडीगाम एक संग ढहैत सामंतवाद, पलायन, गामक प्रति नास्टेल्जिया, गामक राजनितिक-सामाजिक-आर्थिक बदलावक संग बदलैत चेतनाक कथा थीक। रघुवंश लंदन मे अनेको बर्ख धरि रहि डाक्टरी करबाक अछैतो गाम मे सीतारामक मंदिर बनाब' चाहैत छथि। गाम सँ पुनः जुड़बाक लेल मंदिर कें ओ कड़ी बनाब' चाहैत छथि। हुनकर बेटा सब एहि कार्य मे हुनकर सहयोग करैत छनि। मुदा गामक नवतुरिया ई बुझैत अछि जे मंदिरक निर्माण सँ शिक्षा, स्वास्थ्य आ बेरोजगारी दूर नहि भ' सकैत अछि। तें नवतुरिया मंदिरक बदला मे अस्पताल बनेबाक आग्रह पर अडिग भ' जाइत अछि। सवर्ण सँ अधिक अवर्ण समुदायक लोक शिक्षा आ स्वास्थक महत्त्व कें बूझ' लागल अछि। फेकनक ई कहब जे 'मिथिला मे सीताराम मंदिर बनेबाक परंपरा नहि रहल अछि' मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहर पर सँ गर्दा झारैत वर्तमान मंदिरवादी राजनीति के पोल सेहो खोलि दैत अछि। रघुवंश

गाम मरबाक लेल आयल छलाह, मुदा गाम अयलाक बाद हुनकर दृष्टि बदलि जाइत छनि- 'गाम-घर तं जीवाक लेल होइ छै। मरबाक लेल नहि।'

रचनाकारक दायित्व कमजोरक संग ठाढ़ हैब होइत अछि। घोर अमानवीय वातावरण मे मानवताक सूत्र खोजब होइत अछि। कोनो धर्म, जाति, वर्ग, अथवा क्षेत्र सँ राग-द्वेष अथवा पूर्वाग्रह रखनिहर लेखक कोनो राजनीतिक पार्टीक प्रचारक भ' सकैत छथि, लेखक नहि। अशोक सांप्रदायिक तनावक माहौल मे सांप्रदायिक-सौहार्दक कथा लिखैत छथि। अहि सन्दर्भ में 'छल', 'ओ दुनू साईकिल सीखैत अछि' आ 'राग' कथा विशेष उल्लेखनीय अछि। 'छल' कथा मे भोली झा जाहि तरहें इस्लाम कें गरियाब' बला हाकिम सँ लड़ि जाइत अछि, से ओकर अभिनय नहि, सैकड़ो वर्ष सँ सह अस्तित्वक संग हिन्दू-मुसलमानक संग रहबाक प्रमाण थिक। तहिना कैंची बला मुसलमान द्वारा रमेश आ सुधीर कें पिटाई सँ बचा लेब आ साइकिल मिस्त्रीक ई कहब जे 'अब कहिया आयब' साइकिल सिख' आश्वस्त करैत अछि जे मिथिले नहि भारतीय समाज बहुत अधिक दिन धरि धर्मक निशा मे बताह नहि रहि सकैत अछि। 'राग' कथा त' मैथिलक भोजन-प्रियताक समाज-मनोवैज्ञानिक पोस्टमार्टम थीक। गणेश बाबू आ मुजफ्फर साहेब एकटा सवर्ण हिन्दू दोसर सवर्ण मुसलमान 'अन्न-ब्रम्ह'क लेल अपन जातीय आ धार्मिक टैबू कें छोडि दैत छथि आ एक दोसराक घर अष्टमीक बलि आ बकरीदक कुर्बानीक मासु नाक डूबा क' खाइत छथि। मुदा दुनू कें अहि लेल सामान्य होब' मे समय लागलनि। हिन्दू आ मुसलमान दुनू एक गाम, एक ठाम रहितो कतेक दूर अछि। एक दोसरक लेल कतेक पूर्वाग्रह पोसने अछि तकर प्रमाण थिक ई कथा। कथाकार कें कोनो हड़बड़ी नहि छनि। ओ हिन्दू मुसलमानक एकता देखेबाक लेल कोनो नारेबाजी अथबा रूढ़ प्रतीकक आसरा नहि लैत छथि। एक दोसराक संग रहैत, एक-दोसरक दुख-सुख कें बंटैत ई सह-अस्तित्व कथा मे विकसित भेल अछि। गणेश बाबूक अहि कथन मे लेखकक

दृष्टि सेहो समाहित छनि, " औ, अहाँक बदना हथहर बनि बैसल अछि। अदद सँ हौसला धरि अंगेजने छी हम सभ। दुनू गोटे कें अफ़सोस आ अंदेशा एके रंग होइये।" 'राग' मैथिली कथाक परिधिक विस्तार करैत अछि। गणेश्वर बाबू मुजफ्फर साहेब संग टूटल राग कें पुनः जोड़बाक प्रयास करैत छथि। एखनो गाम मे मियां-टोलक सामने हिन्दू टोल नहि बना सकल अछि राजनीति।

स्त्री स्वधीनाताक प्रश्न 'स्वाधीन' कथा मे देखल जा सकैत अछि। हमरा जनैत 'वैवाहिक-बलात्कार' पर भारतीय साहित्य मे कथा बहुत कम लीखल गेल अछि, खास क' पुरुष लेखक द्वारा। जया जाहि तरहें पति द्वारा बलात्कार सँ ठहरल बच्चाक गर्भपात करेबाक जिद पर अड़ल रहैत छथि से स्त्रीक बदलैत स्वाधीन चेतनाक प्रमाण थिक। कतेको ना-नुकुर करैत अजय कें सेहो तैयार हुअ' पड़ैत छै आ अपन गलतीक पश्चाताप ओकरा सेहो होइत छै, ई लेखकीय दृष्टिक परिचायक थीक। जखन स्त्री आर्थिक रूपें सबल हेतीह, अपना कें दान मे उत्सर्गक बदला अपन जीवनसाथीक चयन स्वयं करतीह त' फैसला सेहो लेतीह। मुदा, 'टीस' कथा अपन अंत सँ निराश करैत अछि। विमला कें पति कोपरेटिवक अध्यक्ष बना देलकनि आ हुनक नकली हस्ताक्षर क' गबन करैत रहल। एक राति पुलिस आबि क' विमला कें गिरफ्तार क' लैत छै, पति पहिनहि निपत्ता भ' गेल रहै। विमला पतिक तमाम फरेब कें अपन भीतर दबा क' ओहि नकली हस्ताक्षर कें अपन असली हस्ताक्षर मानि लैत अछि। जं विमला एत' नकारि जाइतय त' ई कथा स्त्री स्वाधीनताक सन्दर्भ मे एकटा विमर्श ठाढ़ करैत।

'मनसूबा' आ 'लेमन आइसक्रीम', दू पीढ़ीक द्वंद्वक संग शहरीकरण, नव पीढ़ीक मनोभावक मशीनीकरणक कथा थीक। "पापा एकटा बात अछि।

गाम मे अहाँक लाबिंग बहुत तगड़ा अछि" बबलूक ई कथन नव टेक्नोक्रेट युवाक बदलैत मानसिकताक प्रमाण थीक। ई द्वंद्व 'मनसूबा' कथा मे आरो विस्तार लेलक अछि। पलायन मजबूरी थीक। शहर अपना भीतर हेंजक हेंज गाम कें पचौने जा रहल अछि। संस्कृतिक संक्रमण अपन स्वाभाविक गति सँ पसरि रहल अछि। मध्यवर्ग सुविधाभोगी आ इएमआइजीवी होइत अछि। मध्यवर्गक पुरनका पीढी में प्राचीनता आ आधुनिकताक द्वंद्व रहै, से नव पीढी मे समाप्त भ' रहल छै। रणजीत कंपनी मे पैघ ओहदा पर अछि। ओ अपन जिनगी अपने ढंगे जीब' चाहैत अछि। माता-पिताक कोनो हस्तक्षेपक बिना। दिल्ली अयला पर माय अपन हाथक भोजन बेटा कें कराब' लेल व्यग्र छथि मुदा बेटा कें होटलक व्यवस्था पर अभिमान छनि। पिता कें बुझाइत छनि जेना "ओ तथा रणजीत नदीक दू छोड़ पर ठाढ़ छथि। दू-टा फराक फराक द्वीप पर।" अहि कथाक ट्रीटमेंट किछु आरो शब्दक मांग करैत अछि।

'खुशीक नाम जीवन' कें 'मनसूबा' कथाक विस्तार मे देखल जा सकैत अछि। मंसूबाक रणजीत अपन कैरियरक प्रति एतेक लिप्सित अछि, जे बियाहे नहि कर' चाहैत अछि। मुदा, एत' संदीप अपन जीवनसाथीक रुपें दक्षिण भारतीय स्वजातीय सुभद्रा नायर कें चुनैत अछि। कन्हैया बाबू आ हुनक पत्नी जेना तैयारे बैसल रहथि ई सुनबाक लेल। बियाह भ' गेल। कनियाँ मैथिली सीखि लेलीह। कोनो द्वंद्व नहि। कोनो कुट्टीचालि नहि। सब बड़ नीक। मुदा 'छुट्टीक एक दिन' मे नवतुरिया वर्गक प्रेमविवाहक मादे चर्चा बहुत स्वाभाविक रूपें आयल अछि।

अशोक मूलतः गतिशील यथार्थक कथाकार छथि। हुनकर अधिकांश कथा 'हम' नैरेटर द्वारा संचालित होइत छनि। कथा कहबाक ई तकनीक अपन सरलताक अछैत बहुत कठिन होइत अछि। सबसँ पैघ बात जे एकरसता आ आत्मालापक शिकार हेबाक शंका प्रबल रहैत अछि। मुदा एहि चुनौती कें अशोक कथ्य संग निलिप्त भ' आ 'बतकही' मे पूर्णतः लिप्त भ' निबाहि

लैत छथि। हुनक कथा मे 'प्रेम' सर्वत्र व्यप्त अछि। मनुक्ख-प्रेम हुनकर अभीष्ट छनि। दाम्पत्य प्रेमक कतेको बिंब हिनक कथा मे देखल जा सकैत अछि। पत्नी त' हर दोसर कथा मे अलग अलग रूपें ठाढ़ छथिन। एकटा कथाकार अपन बाहर-भीतर एक रंग रहिए क' अपन 'हम' कें 'सार्वभौम' बना सकैत अछि।

अंत मे ई कहब जे आलोचक अशोक जी पर विस्तार से विचार हेबाक चाही से फेर कहियो।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.२.विदेह ३७० म अंक १५ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३७०) - अंक ३६९ पर टिप्पणी

नबोनारायण मिश्र

प्रिय कथाकार आदरणीय श्री अशोक जी क विशेषांक लेल शुभकामना! जे कार्य कोनो लोकप्रिय मैथिली पत्रिका नै कऽ सकल, से नीक कार्य विदेह ई पत्रिका कऽ सकल एतदर्थ ओहि टीम कें सेहो बधाइ। जय मैथिली।

महेन्द्र

कथाकार अशोक पर केन्द्रित ई विशेषांक एकटा महत्वपूर्ण काज थिक जकर हम प्रशंसा करै छी, आ आशा करै छी जे एकर हार्ड कापी.समूल्य भेटि सकैत अछि। पुन: हार्दिक अभिनंदन !

डा धनाकर ठाकुर, प्रोफेसर मेडिसिन वाराणसी, ९८४३३७६८६१, ९४३०१४१७८८dhanakar@gmail.com
स्वकथित ओ आब प्रचलित कथाकार अशोक पर विशेषांकक सूचना एक चिन्हल द्वारा देखि पहिले त हुनकहि सर्वस्पर्शी भाव परिवर्तन लेल धन्यवाद देल जे ओ एक झांकें विशेषांकक पात्र बुझलन्हि,पेज खोललापर आनहुं अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व पर विशेषांकक जानकारी भेटि प्रसन्नता भेल। कथाकार अशोककें रचनाकार अशोकक रूपमे प्रस्तुत करक सफल प्रयासमे हुनक जानकारी भरल संक्षिप्त आत्मकथ्यसं काफी सूचना भेटल ओ लिखबाक मैथिली ढंग जे कासी कहैत छथि काशीकें जतय हम अपन जीवनकालक उत्तराखंडमे नियोजनक उत्कर्ष लेल प्रोफेसर मेडिसिन बनल, किछु मास पूर्वहिं अयलहूं अछि । कासीसं कटिहार होइत अशोकक पाटलिपुत्र

हुनका एक बालकविसं कवि फेर कथाकार जीवनक अनुभव बना देलकैन्हि जकर अन्तिम औपन्यासिक दुखान्तिका हुनक पत्नीक आइसीयूमे सुदीर्घ संघर्षक बाद मृत्युकें जरूर समेटत, जकर आशा उषा किरणजी संग भीमनाथ झाजी केने छथि, हमर एकमेव अनुरोध जे डाक्टरकें ओ बखसैत कारण डाक्टर एक निरीह प्राणी होइत अछि; हम एहि लेखनकें पढ़बाक कारणमात्र एक बेर फेर आइसीयू अपना नाम पर भर्ती भेल एक अधेड़ मधुमेहीकें देखय फेर एक बेर जायब यद्यपि कनीय रेजिडेंट डॉक्टरकें सभ निर्देश दय चूकल छी। घण्टा -डेढ़ घण्टामे सत्रह लेखकक उन्नैशटा हुनका पर लेख तीन परिचयात्मकक बाद यानी बाइस लेख पढ़ि लेब एक कठिन कार्य हम केलहूं अछि किन्तु हमर यैह पाठकीय गति अछि आओर तत्क्षण लेखनीय जे दुर्गति सेहो करा सकैत अछि तथापि स्थालीपुलाक न्यायसं अवलोकित समग्र मूल्यांकन ई अछि जे अशोकक कथासंसार मिथिलाक गामक भूगोल ओ संसारक बीचक योजक अछि जे ओ एक ग्रामीण दृष्टियहिसं नहि राजधानीमे कार्यरत विभागीय उपक्रममे सेहो देखलाह, भोगलाह। हिनक चारि दशकमे कथासंख्या कम जनि जकर कारण हम बुझैत छी साहित्यिकीय प्रोत्साहन-पुरस्कार नहि भेटब मुख्य रहल। हमरा सेहो 'मातबर' पढ़ल अछि ओ ओकर समीक्षा सेहो कतहु लिखल होयत जाहिमे हुनक एक पात्र द्वारा अंग्रेजीक लम्बा कथनकें कृत्रिम बतौने छलियन्हि जखन कि कथाकार अशोकसं कथासमीक्षक हमरा नीक लगलाह,ओना ई बात अलग जे पटना कथारात्रिशेषमे हमर आधुनिक कथा 'ओ' पर किछु बाजयसं छिटकि गेलाह। हिनक कथासभ हम अति उत्कृष्ट त नहि मानैत छी किन्तु जखन बहुत सामान्यकें पुरस्कृत कयल गेल त अशोकजीकें बहुत पहिले सम्मानक पात्र बूझक छल। पहिले विशेषांकक सूचना देखने रहितहूं त एहि विशेषांक लेल हम सेहो लिखने रहितहूं। हम अशोकजीकें भद्रलोक बुझैत छी और सभ लेखक हुनका प्रति श्रद्धाभाव देखौलाह अछि। हस्तलिखित हिनक एक मित्र

हमरहि जकां कोनहूं अखनहूं लिखैत छथि कोनो नहि से देखि प्रसन्नता भेल। अशोकजी मास्को रिटर्न यानी मार्क्सवादी विचारधाराक नहि देखाइत छथि एहि विशेषांकक बहुलांश लेखक द्वारा। हमरा सेहो ओ हरिमोहनी उच्चवर्णीय आधारभूमि पर उपजल एक कथाकार लागल छलाह जिनक अनेक अधुना प्रतिमान कारपोरेट जगतक आंग्लभाषाप्रेमी मानसिक दास, जिनका द्वारा सामाजिक समरसता वा उन्मेषक प्रयास भनहि कथाकार अशोक कयलन्हि ओ पलायनक विस्तृत आयामक एक अंशमात्र। महिला लेखिकाद्वयमे कल्पना झा हुनक संयोगवश भेल अखबारी व्यंग्य लेखन पर सेहो प्रकाश दैत अछि जाहि पर हितनाथ झाक लेख केन्द्रित अछि । कल्पना झा संगहि 'पोखरिसभमे' आजादीक बाद घटल २४ लाखसं ६ लाख भेल संख्या लेल तड़ागोत्सव, कूपोत्सवक विकल्प अशोकक बतबैत अछि से नीक लागल। ओ वैवाहिक बलात्कारसं भेल गर्भ पर मौन छथि जे "स्वाधीन" कथामे आयल अछि किन्तु आभा झा एहि पर टिप्पणी करैत अशोकक पक्षक नारीवादी समर्थनमे किन्तु कि ई विवाहक संगहि बलात्कार नहि जे हम विवाह करब, काम सुखोपभोग करब किन्तु गर्भ धारण नहीं करब जे सामाजिक बदलाव नहि व्यवस्थाक संगहि बलात्कार भेल जे एक बाल-बच्चेदार लेखकक विशेषता नहि त्रुटि मानक चाही। दिलीप कुमार झाक लेख यथास्थितिवादी छनि जे ओ लिखलाह से सभ नीक आओर ई मैथिली समीक्षाक दयनीय अवस्था बतबैत अछि। अजीत कुमार झा डैडीगामक सभ कथा पर तेहनहि टिप्पणी केलाह अछि जखनकि एहि विशेषांकक एक लेखक प्रेमचन्दक संदर्भ देलाह अछि जे ककरहूं सभ कथा नीक नहि लिखाइत छनि। कुमार राहुल किछु हस्तक्षेप जरूर केलाह अछि। 'हड़बड़ीमे लिखायल' 'फार्मूलाबद्ध ' किन्तु की अशोक नव लीक द पयलाह अनुत्तरित रहि जाइत अछि। मार्क्सवादकें फ्रायडवादसं (वा डार्विनवादसं सेहो) विरोध कहां छैक? (हमर लिखित राजनीतिक सिद्धांत 'आध्यात्मिक मार्क्सवाद" क चर्चा एत अनावश्यक)। मित्र हेबाक नाते लालदेव कामतक अशोकक प्रशंसा ओ

पृष्ठभूमि पर नीक विवरण, विशेषतः तानपूरा कथाक किन्तु ई समीक्षात्मक नहि। शिवशंकर श्रीनिवास व्यथित छथि जे अशोक शहरी कथाकार नहि ग्रामीण क्षेत्र पर सेहो लिखैत छथि आओर ओही सांसमे हूनक वैश्विक विवरणक? एहि भूमंडलीकरणक युगमे जहन मिथिला सेहो अछि प्रश्न जे ग्रामीण वा शहरी नहि अछि; एखन प्रश्न एकहि जे की बढ़ैत शहरीकरणमे गाम लोकक जीवनमे बांचत से धुरझार अंग्रेजीक प्रयोग करैत पात्र अशोककें लीकसं हंटल नहि बतबैत अछि। जगदीशचंद्र ठाकुर सेहो हमरहि आपत्ति बतबैत शिक्षामे मैथिली पर अशोककें मौन बतबैत छथि। अभिनव-अंकिता पात्र नामहि हुनक कथाकें कोनहूं शिवनाथ-गौरी सनहूं आधुनिक हरिमोहनी अशोककें कहां बनबैत अछि (हमरहूं कथाक कमली-रमियासन सन नहि)। नारायणजी अशोकजीकें किरणप्रभासंमुक्त मानलाह अछि किन्तु ई उत्कर्ष तक नहि भेल भनहि अपकर्षहुं नहि। सहपाठी शैलेन्द्र अशोकक कलाकार पक्ष पर केन्द्रित छथि आओर लगैत अछि ओ कथाकार अशोकक मूल्यांकन नहि केलाह। शिवकुमार मिश्र सेहो अशोकजीक सांगठनिक सहयोग पर लिखलन्हि जे उत्तम किन्तु अशोकजीक सर्वोत्तम सहयोग कथा गोष्ठीमे हमरा जनैत रहल अछि। आशीष अनचिन्हार मैथिल महासभाइ दृष्टिदोषसं रहित अशोकजीकें नहि पबैत छथि परन्तु एहिमे अपन दृष्टिकोण रखबासं स्वयं सेहो मुक्त नहीं आओर ई बात नहि बिसरि जे समाजक सोचमे बदलावमे शताब्दी लगैत छैक दशक नहि आओर सामाजिक समरसता धैर्यक अपेक्षा करैत अछि तथापि हिनक अपेक्षा स्वागत योग्य। मुन्नाजी अशोकजीक साहित्यिक कार्यकर्ता निर्माण पर नीक प्रकाश देलन्हि अछि जकर अशोकजी वस्तुतः अधिकारी, सरकारी अधिकारी होइतहुं मंच-मला-माइकसं निस्पृह। श्रीधरम् अशोकजीकें गतिशील कथाकार स्थापित करय लेल विधवाक दुःख पर 'रांड' कथामे हूनक भावना रखैत छथि ओना 'स्वाधीन' कथाक पूर्वलिखित दृष्टिकोण रखबासं दूर छथि। इहो संकेत दैते छथि जे संभवतः अशोकजीक

समीक्षाक स्तर हुनक कथालेखनसं ऊपर हो।

उषा किरण खान

बहुत बधाई! सामग्री सँ समृद्ध अंक बुझाइयै। विदेहक विशेषांक अशोक जी पर आबय बला रहय से बुझले छल तैं अजुका प्राती वैह भेल! कथाकार मे अशोक, व्यंग्यकथा मे बटुक भाई, उपन्यासकार मे साकेतानंद आ कवि मे महाप्रकाश हमर प्रिय रहलाह अछि। ई लोकनि विपुल नहिं लिखलनि मुदा ठोस बुझैलनि हमरा व्यक्तिगत रूप सँ। आर सब गोटे अपना अपना तरीका सँ प्रभावित केलाह अछि। शिवशंकर जी के कथाक लोकेल हमरा सन मिथिला क:नो मैन्स लैंड केर प्राय: जानकारी बढबैत अछि त अशोक जीक कथा मिथिला सँ बाहरक (काशी के) त्रासदीक ज्ञान दैत अछि। अशोक जीक स्वयं परिचय पढलौं आ तखन हुनक परिवेश जानि कथाक उत्स बुझबा मे आयल। अशोक जी हड़बडिया कथाकार नहिं छथि।तैं सटीक समीचीन कथा साधल लिखै छथि तकर बड नीक विश्लेषण दिलीप कुमार झा केलन्हि अछि। आभा झा बड नीक विश्लेषण केलनि मुदा विस्तार नै देलीह। बूझि पडैत अछि आगाँ देतीह।

नारायण जी

मैथिलीमे कतेको हार्ड कापीक पत्रिका रहैत ई पत्रिकेक रूपमे किएक ने होअय कथाकार अशोकजीक विशेषांक द्वारा नोटिस लेबा लेल हमर हार्दिक बधाइ।

बैकुंठ झा

विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व पर विशेषांक निकालब महत्वपूर्ण काज। एहि

वास्ते साधुवाद अहांके

अरविन्द ठाकुर

स्वागत ! अहि आयोजन लेल विदेह टीम कें बहुत बहुत बधाई!

प्रफुल्ल कोलख्यान

बधाई आ शुभकामना। नीक लागल। बड़ नीक लागल

दिलीप कुमार झा

नीक प्रयास।अह्लादकारी अंक।बधाइ संपादक मंडलकें।

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**